

श्रीपंचपरमेष्ठि चोन्नमः ॥

॥ अथ श्रीपालराजाकोरास लिख्यते ॥

दोहरा ॥ कल्पवेली कवियणनणी, सरसाति
करि सुपसाय ॥ सिद्धचक्रगुण गावतां, पूर म
नोरथ माय ॥ १ ॥ अलियविघन सवि उपदेशे,
जपतां जिन चोवीश ॥ नमता निजगुरु पयकमल,
जगमां वधे जगोश ॥ २ ॥ गुरु गौतम राजगृ
ही, आव्या प्रजुआदेश ॥ श्रीमुख श्रेणिक प्रम
खने, इणपरिदे उपदेश ॥ ३ ॥ उपगारी अरिहं
तप्रजु, सिद्ध नजो जगवंत ॥ आचारज उव
झाय तिम, साधु सकल गुणवत ॥ ४ ॥ दरि
शण दुर्लज ज्ञान गुण, चारित्र तप सुविचार ॥
सिद्धचक्र ए सेवतां, पामीजे नवपार ॥ ५ ॥ इ
हजव परजव एहथी, सुख संपद सुविशाल ॥
रोग शोक रौरव टले, जिम नगपनी श्रीपा

॥ ६ ॥ पुढे श्रेणीकराय प्रज्जु, तेकुण पु
 गयपवित्र ॥ इंद्रजुति तव उपदिशे, श्री श्री
 पाल चरीत्र ॥ ७ ॥

ढाल पहेली ॥ ललनानीदेशीमे ॥ देश मनोहर
 मालवो, अति उन्नत अधिकार ललना ॥ देश अव
 ० मानुचिहुं दिशे, परवारिया परिवार ॥ ललना
 ॥ दे० ॥ १ ॥ तससिर मुगट मनोहर, निरुपम
 नयरी उज्जेण ललना ॥ लखमी लीला जेहनी,
 पार कर्लीजे केण ललना ॥ दे० ॥ २ ॥ सरगपुरी
 सरगे गइ, आणी जस आशंक ललना ॥ अलका
 पुरी अलगी रही, जलधी ऊंपावी लंक ललना
 ॥ दे० ॥ ३ ॥ प्रजापाल प्रतपे तिहां, जुपति स
 वि सिरदार ललना ॥ राणी सौभाग्यसुंदरी, रू
 पसुंदरी नरतार ललना ॥ दे० ॥ ४ ॥ सहेजे सो
 हउगसुंदरी, मन माने मिथ्यात्व ललना ॥ रूपसुं
 दरी चित्तमां रमे, सुधी समकित वान ललना ॥
 ॥ दे० ॥ ५ ॥ मुरपरे सुख संसारनां, जोमवतां

जुगल ललना ॥ पुत्री एकेकी थड, गणी दोय
 रसाल ललना ॥ दे० ॥ ६ ॥ एक अनौपम सु
 रलता, बाधे बधते रूप ललना ॥ श्रीजी बीज न
 णी परे, इदु कला अनिरूप ललना ॥ दे० ॥
 ॥ ७ ॥ सोहगदेवी सुतातणु, नाम ठवे नगना
 ह ललना ॥ सुरमुंदरी सृहामणी, आणी अधि
 क उच्चाह ललना ॥ दे० ॥ ८ ॥ रूपमुंदरी गणी
 तणी, पुत्री पावन अग ललना ॥ नाम ताम न
 रपति ठवे, मयणासुंदरी मनरग ललना ॥ दे० ॥ ९ ॥
 वेदविचक्षण विप्रने, सोंपे सोहगदेवी ललना ॥
 सकल कलागुण शीखवा, मुग्मुंदरीने हेवि ॥
 ललना ॥ दे० ॥ १० ॥ चतुःकला चोमठनणी,
 बहु बुद्धिनिधान ललना ॥ शद्ध शाम्भु भवि आ
 वर्या, नामानिघंट निदान ललना ॥ दे० ॥
 ॥ ११ ॥ मयणाने माता ठवे, जितमतपंडित वा
 स ललना ॥ सार विचार सिद्धांतना, आदर्या
 अर्यास ललना ॥ दे० ॥ १२ ॥ कविने कला गु

ण केलवे, वाजिंत्र गीत संगीत ललना ॥ ज्योति
 ष वैद्यक विधि जाणे. राग रंग रसरीत ललना
 ॥ दे० ॥ १३ ॥ सोल कला पुरण शशि, करवा
 कला अज्यास ललना ॥ जगति जमे जस मु
 ख देखी. चौसट कला विलास ललना ॥ दे० ॥
 ॥ १४ ॥ मयणासुंदरी माति अति जन्नि, जाणे
 जैनसिद्धांत ललना ॥ स्यादवाद तस मन वस्यो,
 अवर असत्य एकांत ललना ॥ दे० ॥ १५ ॥
 नय जाणे नवतत्त्वना, पुदगल गुण पर्याय ललना
 ॥ कर्मग्रंथ कंठे करघ्या, समकित शुद्ध सुहाय ल
 लना ॥ दे० ॥ १६ ॥ सुत्रअर्थ संघयणना, प्र
 वचनसारोद्धार ललना ॥ खेन्न विचार खरा ध
 रे, एम अनेकविचार ललना ॥ दे० ॥ १७ ॥
 रास जलो श्रीपालनो, तेहनी पहेली ढाल लल
 ना ॥ विनय कहे श्रौता घरे, हौजो मंगल माल
 ललना ॥ दे० ॥ १८ ॥

दोहरा ॥ एक दिन अवनीपाति इस्यो, आणी

मन उल्लास ॥ पुत्रीनुं जोउं पाखुं. विद्याविनय
 विलास ॥ १ ॥ सजामाय शिणगार करि, बो
 लावी बेउ बाल ॥ आवी अध्यापक सहित. मो
 हन गुण मणिमाल ॥ २ ॥ अर्थ अगोचर शा
 स्त्रना, पुढे नुपति जेह ॥ बुद्धिबले बेउ बालिका,
 आपे उत्तर तेह ॥ ३ ॥ अध्यापक आनदिया.
 सज्जन सवे मुख पाय ॥ चतुर लोक चित चम
 क्रिया, कल्या मनोरथ माय ॥ ४ ॥ विनय बल्ल
 न निज बालनी, शास्त्र सुकोमल नाप ॥ सर
 स जिसी सहकारनी, साकर मरखी साख ॥ ५ ॥
 ढाल बीर्जा ॥ राग धोरणी ॥ पुण्य प्रसंशो
 ए एदेशी ॥ प्रश्नोतर पुढे पितारे, आणी अधि
 क प्रमोद ॥ मन लागे अति मीठडारे, बालक
 वचन विनोदरे ॥ वठ विचारजो, देइ उत्तर एह
 रे, संशय वारजो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कुण
 लक्ष्मण जीविततणुरे, कुण मनमथ घरनारि ॥
 कुसुम कुण उत्तम कह्युरे, परणी गुंहरे कुमारि ॥

रे ॥ वच्च विचारजो ॥ २ ॥ एके वयणे एहनोरे,
 उत्तर एणिपरे थाय ॥ मुरसुंदरी कहे तातजीरे,
 सुणजो सासरे जायरे ॥ नृप अवधारजो, अर
 थ सुणी अम एहरे, महोत वधारजो ॥ ३ ॥ म
 यणाने महीपति कहेरे, अर्थ कहो अम एक ॥
 जो तुमे शास्त्र संजालतारे, वाध्यो ऋदय विवेक
 रे ॥ वच्च० ॥ ४ ॥ आदी अक्षरविण जेहरे, ज
 ग जीवाडणहाररे ॥ तेहिज मध्याक्षरविनारे, जग
 मंहारणहाररे ॥ व० ॥ ५ ॥ अंत्याक्षरविण आ
 पणारे, लागे संहुने मीठ ॥ मयणा कहे सुणजो
 पितारे, ते में नयणे दीठरे ॥ नृप० ॥ ६ ॥ सु
 गुण समश्वा पुरजारे, नृपति कहे धरी नेह ॥
 अर्थ उपावी अजिनवारे, पुणये पामीजे जेहरे ॥
 व० ॥ ७ ॥ सुरसुंदरी कहे चातुगीरे, धन यौ
 वन वरदेह ॥ मन वल्लन मेलावडारे, पुणये पा
 मीजे एहरे ॥ नृप० ॥ ८ ॥ मयणा कहे मति
 न्यायनीरे, शीलसुं निर्मल देह ॥ संगति गु

रु-गुणवंतनीरे, पुण्ये पामीजे एहरे ॥ नृप० ॥
 ॥ ९ ॥ इण अवसर नुपतिजणेरे, आणी मन
 अनिमान ॥ हुं त्रुठयो तुम उपरेरे, देजं वंछित
 दानरे ॥ वल्ल० ॥ १० ॥ हुं निर्वनने धन देजरे, करुं
 रंक्ने राय ॥ लोक सयल मुख भोगवेरे, पामी
 मुज पसायरे ॥ वल्ल० ॥ ११ ॥ सकल पदार्
 थ पामीएरे, में तुठये जगमाय ॥ में रुठये जग
 रौलीएरे, उजो न रहे कोइ बायरे ॥ वल्ल० ॥
 ॥ १२ ॥ सुंदरी कह साचुं पितारे, एमा किशो
 संदेह ॥ जग जीवारण दोयवेरे, एक महीपति दू
 जो मेहरे ॥ नृप० ॥ १३ ॥ साचुं साचुं सह क
 हरे, सकल सजा तिणीवार ॥ ए सुरसुदरी जेह
 वीरे, चतुर नको संसाररे ॥ नृप० ॥ १४ ॥ रा
 जा पिण मन रंजितरे, कहे सुंदरी वर माग ॥
 वंछित वर तुज मेलवीरे, देजं सयल सौभाग
 रे ॥ वल्ल० ॥ १५ ॥ तिहां कुरुजंगल देशथीरे,
 आव्यो अवनिपाल ॥ सजामाहे सोहे घणोरे, यौ

वन रूप रंसाळरे ॥ नृ० ॥ १६ ॥ शंखपुरीनयरी
 धणीरे, अरिदमन तस नाम ॥ ते देखी सुरसुं
 दरीरे, अंगे उपन्यो कामरे ॥ वृ० ॥ १७ ॥
 पृथ्वीपाति तस उपरेरे, परंखी तास सनेह ॥
 तिलक करी अरिदमननेरे, आपी अंगजा तेह
 रे ॥ वृ० ॥ १८ ॥ रास रच्यो श्रीपालनोरे,
 तेहनी बीजी ढाल ॥ विनय कहे श्रोता घरेरे,
 होजो मंगल मालरे ॥ १९ ॥

दोहरा ॥ मयणा मस्तक धुणती, जव निर
 खी नरराय ॥ पुढे पुत्री वात ए, तुम मन क्युं
 न सुहाय ॥ १ ॥ सयल सजार्थी सोगुणी, चतु
 राई चितमाह ॥ दीसेवे ते दाखवो, आपण अंग
 उत्साह ॥ २ ॥ उचित नहिं इहां बोलवुं, मयणा
 कहे महाराय ॥ मोहे मन माणसतणां, विरुआ
 विषय कषाय ॥ ३ ॥ निर्विवेक नरपति जिहां,
 अंश नहीं उपयोग ॥ सजा लोक सह हाजि
 या, सरिखो मिल्यो संयोग ॥ ४ ॥

ढाल त्रीजी ॥ राग केदारों ॥ कपुर हुवे अ
 ति उजलुंरे एदेसी ॥ मन मंदिर दीपक जिस्यो
 रे, दीपे जास विवेक ॥ तास न कहिये परान
 वेगे, अंग अज्ञान अनेक ॥ पिताजी मकरो जु
 ठ गुमान, ए रुद्धि अथिर निदान ॥ पिताजी
 जहेवो जलधी उधान ॥ पिताजी मकगे० ॥ १ ॥
 सुख दुख सहुए अनुजवेरे, केवल कर्मपसाय ॥
 अधिकुं न उठुं तेहमारे, कीधुं कोणे न जाय ॥
 पिताजी मकरो० ॥ २ ॥ राजा कोपे कलकल्यो
 रे, सांजलतां ते वात ॥ बहाली पण वेरण थई
 रे, कीधो वचन विघातरे ॥ बेटीं जलीरे जणी
 तुं आज, तें लोपी मुज लाजरे ॥ बे० ॥ विण
 साड्यु निज काजरे ॥ बे० ॥ तुं मुख शिरताज
 रे ॥ बे० ॥ ज० ॥ ३ ॥ पोपीने पोढी करीरे, जो
 जन कुर कपुर ॥ रयण हिडोले हींचतीरे, जोग
 जला जरपुरे ॥ बे० ॥ ज० ॥ ४ ॥ पाट पटं
 र पहेरणेरे, परिजन सेवे पाय ॥ जगमा सहु जी

जी करेरे, ए सवि मुज पसायरे ॥ बे० ॥ न०
 ॥ ५ ॥ तत्व विचारो तातजिरे, मत आणो म
 न रोप ॥ कर्म तुज कुल अवतरीरे, में किहां जो
 यो जोश ॥ पि० ॥ म० ॥ ६ ॥ महलावो मोठ म
 नेरे, नव नव करो निवेद ॥ ते सवि कर्म पसा
 उल्लेरे, ए अवधारो जेद ॥ पि० ॥ म० ॥ ७ ॥
 जो हठ वाद तुमने घणोरे, कर्म उपर एकंत ॥
 तो तुमने परणावशुरे, कर्म आयो कंतरे ॥
 बेटी० ॥ न० ॥ ८ ॥ मान हण्युं जो एणीयेरे, मा
 हरुं सजा समद्ध ॥ फल देखाडुं एहनेरे, सकल
 सजा प्रत्यक्षरे ॥ बे० ॥ न० ॥ ९ ॥ सोखीए एशुं शी
 खव्युरे, अध्यापक अज्ञान ॥ सज्जन लोक लाजे
 सहुरे, देखी ए अपमानरे ॥ बे० ॥ न० ॥ १० ॥
 नगरलोक निंदे सहुरे, नण्युं एहनं धुल ॥ जुन
 वातनी वातमारि, पिता करयो प्रतिकुलरे, ॥ बे०
 ॥ न० ॥ ११ ॥ मिथ्यात्वी कहे जैननीरे, वात सवे
 विपरीत ॥ जगत नीति जाणे नहींरे, आबला न

अविनीतरे ॥ बे० ॥ न० ॥ १२ ॥ अनसरूयी
 मी रायनोरे, रोप समावण काज ॥ कहे परधान
 पधारियेरे, रगवाडी माहागजरे ॥ बे० ॥ न० ॥
 ॥ १३ ॥ रास नलो श्रीपालनोरे, तेहनी त्रिजी
 ढाल ॥ विनय कहे मद परिहरोरे, जेहथी बहु
 जंजालरे ॥ बे० ॥ न० ॥ १४ ॥

दोहरा ॥ राजा रगवाडी चढयो, सबल सेन
 परीवार ॥ मदमाता मंगल घणा. सहसगमे अ
 सवार ॥ १ ॥ मुजट सिपाई सामटा जिर्या पं
 चायणसिंह ॥ आयुव आडंबर अधिक, अटल
 अजग अबीह ॥ २ ॥ वागा केसरिया किया, र
 ढियाला रजपुत ॥ मुठाला मुठरायला, जोध ज
 सा यमदुत ॥ ३ ॥ पाखरिया पंखीपरे, ऊढे अं
 बर जाम ॥ पंचवरण नेजा नवन, गयण चोक
 चित्राम ॥ ४ ॥ सरणाई वाजे सरस, घुरे गुहि
 र निसाण ॥ पुरमाहिर लूप आविया, नाला ऊ
 लहल चाण ॥ ५ ॥

ढाल चौथी ॥ रामचंद्रके बाग चांपो पौरी
 रह्योरी एदेशी ॥ मारग सनमुख ताम, उमे खे
 ह घणारी ॥ पुढे चुपति दृष्टि, देई मंत्री नणीरी
 ॥ १ ॥ कुण आवेढे एह, एवडा लोक घणारी ॥
 कहे मंत्री रहौ दुर, दरिशन एह तणारी ॥ २ ॥
 ए कुष्टि सयसात, थाई एक मणारी ॥ थापी रा
 जा एक, जाचे रायराणारी ॥ ३ ॥ मारग मुक्ती
 जाम, नरपती दूर टलेरी ॥ गलितांगुली तस
 दुत, आवी ताम मिलेरी ॥ ४ ॥ उत्तम मारग
 काई, जांए दूर तजीरी ॥ उज्जैणीना राय, हारि
 कीर्तिसजीरी ॥ ५ ॥ निर्मुख आशाजंग, जाचक
 जास रह्यारी ॥ नारचुत जगमांहि, निर्गुण तेह
 कह्यारी ॥ ६ ॥ शी जाचोवो वस्तु विगतै, तेहन
 णोरी ॥ रायकहे अमआज, कीराति काई हणो
 री ॥ ७ ॥ दुत वहे अमराय, सुदली ऋद्धि मि
 लीरी ॥ राजवट्ट परगट्ट, बांधीअमे चलीरी ॥
 ॥ ८ ॥ पण सुकुलिणी एक, कन्या कोइ दीएरी ॥

तो तसराणी होय, अम ए हरप हीयेरी ॥ ९ ॥
 मन चिंते तव राय, मयणा देउ परीरी ॥ जगमां
 राखु कीर्ति, अविचल एह खरीरी ॥ १० ॥ फ
 ल पामे प्रत्यक्ष, मयणा कर्म तणांगी ॥ सालेहिय
 डामाहि, वयणा तेह घणांगी ॥ ११ ॥ वले रूख
 घन वुठ, दाध्यां जेह दवेरी ॥ कुवयण दाध्या जे
 ह, नवले तेह नवेरी ॥ १२ ॥ रोष तणे वश राय,
 शुद्धिबुद्धि सर्व गईरी ॥ कहें दूत तुजराय, अम
 घर आणो जईरी ॥ १३ ॥ देउं राजकुवरी, रू
 पे रंज जमरी ॥ दुततणे मन वात, विस्मय ए
 ह वसीरी ॥ १४ ॥ कशुं विमासे मुठ, में जे वात
 कहीरी ॥ न फिरे जगमां तेह, अविचल साच
 सहीरी ॥ १५ ॥ श्री श्रीपालनो रास, चौथी
 ढाल कहीरी ॥ विनय कहे निरवाण, क्रोध सि
 द्धि नहींरी ॥ १६ ॥

दोहरा ॥ कोप कठिन जपति द्वित्रे, आव्यो
 निज आवास ॥ मिहासण बेठो अधिक, मन

अनिमान विलास ॥ १ ॥ मयणाने तेडी कहे.
 कर्मतणो पख ठोड ॥ मुज पसाय मन आणजि
 भ, पुरू वंछित कोड ॥ २ ॥ मयणा कहे दुरे त
 जो, एसवि मिथ्यावाद ॥ सुख दुख जे जग पा
 मिए, ते सवि कर्म प्रसाद ॥ ३ ॥ बालकने वन
 लावतो. हठे चढावे राय ॥ वाद करंतां बालसुं,
 लघुता पामे न्याय ॥ ४ ॥ कोइ कहे ए बालि
 का. जुठ हठीली थाय ॥ अवसर उचित न उ
 लखे, रीश चढावे राय ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ ईंर आंवा आंवलीरे. ई
 र दागिम द्राख एदेशी ॥ राणो जंवर इण स
 मेरे, आव्यो नयरीमांह ॥ सटित करण सुपम
 जीसुरे, वत्रधरे शिरबांय ॥ चतुरनर कर्मतणी ग
 तिजोय ॥ कर्म सुख दुःख होय ॥ च० ॥ कर्म
 न बटे कोय ॥ च० ॥ क० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
 श्वेतांगुली चामर धरेरे, अविगतना सुखवास ॥
 घोर नाद घोवर स्वरेरे, अरज करे अरदास ॥

॥ च० ॥ कर्म० ॥ २ ॥ वेसर असवारी करीरे,
रोगी सवि परिवार ॥ बलि बाबलीए परिवरयोरे,
जिस्यो दग्ध सहकार ॥ च० ॥ क० ॥ ३ ॥ को
इ थुटा कोइ पागलारे, कोइ खोडा कोइ खीण॥
कोइ खसिया कोइ खासियारे, कोइ ददर कोइ
दीण ॥ च० ॥ क० ॥ ४ ॥ एक मुखे माखी नणनणे
रे, एक मुख पडती लाल ॥ एकतणे चांदां चगे
रे, एक शिर नाठा बाल ॥ च० ॥ क० ॥ ५ ॥
चउटामाहे चालतारे, सोर करे सयसात ॥ लोक
लाख जोवा मिल्यारे, एह किस्यो उतपात ॥
च० ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ ढोर धसे कुतर नसेरे, धि
क धिक कहे मुखवाच ॥ जन पुढे तुमे कोणगे
रे, नुत के प्रेत पिशाच ॥ च० ॥ कर्म० ॥ ७ ॥
कहे रोगी तूम रायनीरे, पुत्री रूप निधान ॥ ते अ
म राणो परणशेरे, एह जाए तस जान ॥ च० ॥
क० ॥ ८ ॥ नगर लोक साथे थयारे, कौतुक जो
वा काज ॥ उबर राणो आवियोरे, जिहा बेठा

महाराज ॥ च० ॥ ९ ॥ मयणाने जुपती कहैरे, ए
 आव्यो तुम नाह ॥ सुख संपुरण अनुनवोरे,
 करमे करयो विवाह ॥ च० ॥ १० ॥ मयणा मु
 ख नवी पालटेरे, अंश न आणे खेद ॥ ज्ञानीनुं
 दीठुं हुवेरे, तिहां नही किस्यो विचेद ॥ चतु० ॥
 ॥ ११ ॥ जेह पिता ए पांचनीरे, साखे लीधो कं
 त ॥ देवपरे आराधवोरे, उत्तम मन ए खंत ॥
 चतु० ॥ १२ ॥ करी प्रणाम निज तातनेरे, व
 यण विमल मुख रंग ॥ आवीने ऊंजी रहीरे, उं
 बरने वामंग ॥ च० ॥ १३ ॥ तव ऊंवर एणप
 रे जणेरे, अनुचित एह जुपाल ॥ न घटे कंठे
 कागनेरे, मुक्ताफलनी माल ॥ चतु० ॥ १४ ॥
 राय वहे कन्या तणेरे, कर्मे ए बल कीध ॥ घणुं
 कहुं में एहनेरे, दोप नको में लीध ॥ चतु० ॥
 ॥ १५ ॥ रोगी रलीयायत थयारे, देखी कन्या पा
 स ॥ परमेश्वर पुरण करीरे, आज अमारी आ
 श ॥ चतु० ॥ १६ ॥ सुगुण रास श्रीपालनोरे,

तिहां ए पांचमी ढाल ॥ विनय कहे श्रोता घरे
रे, होजो मंगलमाल ॥ चतु० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ कोइ कहे धिक रायने. एवो रोप अ
गाध ॥ कोइ कहे. कन्यातणो, ए सघलो अप
राध ॥ १ ॥ ऊनारे आव्या सह, सुणता इम
जनवात ॥ अनुचित देखी आथम्यो. रवि प्रग
टी तव रात ॥ २ ॥ यथाशक्ति उत्सव करी,
परणावी ते नार ॥ मयणा ने ऊंवर मिली, वे
ठा जुवनमजार ॥ ३ ॥

ढाल ठठी ॥ कोइलो पर्वत धुंवल्लोरेलो ए दे
शी ॥ ऊंवर मनमां चितवेरेलो, धिक धिक मुज
अवताररे वरीली ॥ मुज संगतथी विणसजोरे
लो, एहवी अदनुत नाररे रंगीली ॥ १ ॥ सुंद
री हजीय विमासजोरेलो, ऊंडो करी आलोच
रे ॥ ठ० ॥ काज विचारी कीजीएरेलो, जेम न
पडे फिरी शोचरे ॥ रंगी० ॥ सुं० ॥ २ ॥ मुज
संगे तुज विणससोरेलो, सोवन सरखो देहर ॥

ठ० ॥ तुं रूपे रंजा जिसीरेलो. कोठीसुं शो ने
 हरे ॥ रंगी० ॥ सुं० ॥ ३ ॥ लाज इहां मन ना
 णीएरेलो, लाजे विणसे काजरे ॥ ठ० ॥ निज
 माता चरणे जइरेलो, सुंदर वर कर राजरे ॥
 ॥ रं० ॥ सुं० ॥ ४ ॥ मयणा तस वयणां सुणीरे
 लो, हीयडे दुःख न मायरे वालेश्वर ॥ ढलक
 ढलक आंसु पडेरलो, विनवे प्रणमी पाय
 रे वालेश्वर ॥ वचन विचारी ऊच्चरोरेलो, तुमे
 ठो चतुर सुजाणरे ॥ वाले० ॥ वच० ॥ ५ ॥
 एह वचन किम बोलीएरेलो, इणे वचने जीव
 जायरे ॥ वाले० ॥ जीव जीवन तुमे वालहारेलो,
 अवर न नाम खमायरे ॥ वा० ॥ ६ ॥ पछिम र
 वि नवि ऊगमरेलो, जलधि न लोपे सीमरे ॥
 वा० ॥ सती अवर इठे नहींरेलो, ज्यां जीवे
 त्यां सीमरे ॥ वाले० ॥ वा० ॥ ७ ॥ उदयाचल ऊ
 पर चढ्योरेलो, मानु रवि परजातरे ॥ वाले० ॥
 मयणामुख जोवा नणीरेलो, शील अचल अव

दातरे ॥ वा० ॥ व० ॥ ८ ॥ चक्रवांकदुःख चूर
 तोरेलो, करतो कमल विकासरे ॥ वाले० ॥ जग
 लोचन जव ऊगीयोरेलो, पसरयो पुहवी प्रका
 शरे ॥ वाले० ॥ व० ॥ ९ ॥ आवो देव जुहारी
 एरेलो, ऋपनदेव प्रासादरे ॥ वा० ॥ आदीसर मु
 ख देखतारेलो, जाजे दुःखविपवादरे ॥ वाले० ॥
 ॥ व० ॥ १० ॥ मयणावयणे आवियोरेलो, ऊं
 र जिनप्रासादरे जिणेंसर ॥ आदीश्वर अविलोक
 तारेलो, उपन्यो मन अल्हादरे जिणेंसर ॥ ति
 हुं अणनायक तुं वडोरेलो, तुमसम अवर नको
 यरे जिणेंसर ॥ ति० ॥ ११ ॥ मयणा ए जिन पु
 नीआरेलो, केसर कुमुम कपुररे ॥ जिणें० ॥ ला
 खीणुं कंठे ठव्युंरेलो, टोमर परिमल पुररे ॥ जि
 णें० ॥ ति० ॥ १२ ॥ चैत्यवंदन करी जावनारे
 लो, जावे करी काऊसग्गरे ॥ जिणें० ॥ जयज
 य जगचितामणिरेलो, दायक शिवपुर मग्गरे ॥
 जिणें० ॥ ति० ॥ १३ ॥ इह जव परजव तु

जविनारेलो, अवर नको आधाररे ॥ जिणे० ॥
 दुःख दोहग दूरे करोरेलो, अप शेवक साधाररे
 ॥ जिणे० ॥ तिहुं० ॥ १४ ॥ कुसुममाल निज
 कंठथीरेलो, हाथतणुं फल दीधरे ॥ जिणे० ॥ प्र
 नुपसाय सहु देखतारेलो, ऊंवरें ए वेऊ लीधरे
 ॥ जि० ॥ ति० ॥ १५ ॥ मयणा काऊसग्न पा
 लियोरेलो, हियडे हर्ष न मायरे ॥ जिणे० ॥
 ए सही शासनदेवतारेलो, कीधो अम सुपसा
 यरे ॥ जिणे० ॥ तिहुं० ॥ १६ ॥ सुगुण रास
 श्रीपालनारेलो, तिहाए ठडी ढालरे ॥ जिणे० ॥
 विनयकहे श्रोताघरैरेलो, होजो मंगलमालरे ॥
 ॥ जिणे० ॥ तिहुं० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ पासे पौसहशालमां, बैठा गुरु गु
 णवंत ॥ कहे मयणा दे देशना, आवो सुणिए कंत
 ॥ १ ॥ नरनारी देऊ जणां, आव्यां गुरुने पा
 य ॥ विधिपूर्वक वंदन करी, बेठां बेसणठाय ॥
 ॥ २ ॥ धर्मलान देई गुरु, आणी धर्मसनेह ॥

યોગ્ય જીવ જાણી હિવે, ધર્મ કહે ગુરુ તેહ ॥૩॥
 ઢાલ સાતમી ॥ વાત મ કાઢે હો વ્રતતણી,
 એદેશી ॥ જમતો એહ સંસારમાં, દુલહો નરજવ
 લાધ્યોરે ॥ ઠાંડી નિંદ પ્રમાદને, આપસવરથ
 સાધ્યોરે ॥ ચેતન ચેતોરે ચેતના, આણી ચિત્તમ
 ઝારે ॥ ૧ ॥ સામગ્રી સવિ ધર્મની, આલે જે
 નર સ્વોદરે ॥ માંચીનીપરે હાથને, ઘસતાં આપ
 વિગોદરે ॥ ચેત૦ ॥ ૨ ॥ જાન લેઈં બહુ જુ
 ક્તિમું, જિમ કોઈ પરણવા જાયરે ॥ લગનવેલા
 ગઈં ઝગમગ, પઢે ઘણું પસતાયરે ॥ ચેત૦ ॥ ૩॥
 એણીપેરે દેઈં દેશના, કરે જવિક ઉપકારે ॥ ગુરુ
 મયણાને ઝલચી, વોલાંચે તિણીવારે ॥ ચે૦ ॥
 ॥ ૪ ॥ રે કુમરી તું રાયની, માથે સબલ પરિવા
 રે ॥ અમ ઝપાસરે આવતી, પુઠણ અર્થ વિચા
 રે ॥ ચેત૦ ॥ ૫ ॥ આજ કિસ્યુંં હમ એકલી
 એ કુણ પુરુષ રતનરે ॥ ધુરથી વાત સવે ક
 હી, મગણા થિર કરી મનરે ॥ ચેત૦ ॥

मनमांहे नथी आवतुं, अवर किस्युं दुःख पु
 ज्यरे ॥ पण जिनशासन हेलना, साले लोक अ
 बुजरे ॥ चे० ॥ ७ ॥ गुरु कहे दुःख न आण
 जो, उतुं अंश न जावेरे ॥ चिंतामाणे तुज कर
 चढ्यो, धर्म तणे परजावेरे ॥ चे० ॥ ८ ॥ बड
 वखती वर एहबे, होशे रायां रायरे ॥ शासन
 सोह वधारशे, जग नमशे जस पायरे ॥ चे० ॥
 ॥ ९ ॥ मयणा गुरुने वीनवे, देइ आगम उप
 योगरे ॥ करी उपाय निवारी ए, तुम श्रावकत
 नुरोगरे ॥ चे० ॥ १० ॥ सुरि कहे ए साधुनो,
 उतम नही आचाररे ॥ यंत्र जकी मणिमंत्र जे,
 औपध ने उपचाररे ॥ चे० ॥ ११ ॥ पण ए सु
 पुरुष एहथी, थाशे धर्म उद्योतरे ॥ तिणे एक
 यंत्र प्रकाशशुं, जस जग जागती ज्योतरे ॥ चे०
 ॥ १२ ॥ श्रीमुनिचंद गुरू तिहां, आगमग्रंथ
 विलोइरे ॥ माखणनी परे उद्धरी. सिद्धचक्रयंत्र
 जोईरे ॥ चे० ॥ १३ ॥ अग्निहंतादिक नवपदे,

ॐ ह्रीं पद संयुतरे ॥ अवर मंत्राक्षर अग्निनवा,
 लहिए गुरुगम तत्तरे ॥ १४ ॥ सिद्धादिकपद चि
 हुं दिशे, मध्ये अरिहंत देवरे ॥ दरिसण नाण
 चरित ते, तप चिहुं विदिशि सेवरे ॥ चेत० ॥
 ॥ १५ ॥ अष्टकमलदल एणांपरे, यंत्र सकल
 गिरताजरे ॥ निर्मल तन मन सेवता, सारे वं
 छित काजरे ॥ चे० ॥ १६ ॥ आशो शुद्धमाहे
 मांकीए, सातमर्था तप एहरे ॥ नव आंबिल क
 री निर्मलां, आराधो गुणगेहरे ॥ चे० ॥ १७ ॥
 विधिपूर्वक करी धोतियां, जिन पुजो त्रण का
 लरे ॥ पुजा आठ प्रकारनी, कीजे थड उजमा
 लरे ॥ चेत० ॥ १८ ॥ निर्मल नुमि संथारिये,
 धरिए शील जगीशरे ॥ जपीए पद एकेकनी,
 नोकरवाली वीशरे ॥ चे० ॥ १९ ॥ आठे थोड
 ए वांदीए, देव सदा त्रण वाररे ॥ परिकमणा
 दोय कीजीए, गुरु वेयावञ्च साररे ॥ चेत० ॥
 ॥ २० ॥ काया वश करी राखीए, वचन विचा

री बोलरे ॥ ध्यान धर्मनुं धारीए, मनसा कीजे
 अढोलरे ॥ चेत० ॥ २१ ॥ पंचासृत करी एक
 ठां. परिमल कीजे पखालरे ॥ नवमे दिन सि
 द्धचक्रनी, कीजे नक्ति विशालरे ॥ चे० ॥ २२ ॥
 शुद्ध सातमर्था इणीपर, चैत्री पुनम सीमरे ॥ उ
 ली एह आराधीए. नव आंबिलनो नीमरे ॥ चे
 त० ॥ २३ ॥ एम एकयाशी आंबिले, उली नव
 निरमायरे ॥ साढा चार संवठरे, एतप पुरण था
 यरे ॥ चेत० ॥ २४ ॥ ऊजमणुं पण कीजीए.
 शक्तितणे अनुसाररे ॥ इह नव परनव सुखघ
 णां. पामीजे नव पाररे ॥ चेत० ॥ २५ ॥ आ
 राधन फल एहनां, इह नवे आण अखंडरे ॥
 रोग दुहग दुःख उपशमे, जिम घन पवन प्रचं
 डरे ॥ चेत० ॥ २६ ॥ नमणजले सिद्धचक्रने,
 कुष्ठ अढारह जायरे ॥ वाय चोराशी ऊपशमे,
 रुजे गुंबड घायरे ॥ चे० ॥ २७ ॥ जीम जगंद
 र नय टले, जाथ जलोदर दुररे ॥ व्याधि वि

विष विपवेदना, ज्वर थाये चकचुररे ॥ चे० ॥
 ॥ २८ ॥ खास खयन खय चकनुना, रोग मिटे
 सनिपातरे ॥ चोर चरडने माकणी, कोइन करे
 उपघातरे ॥ चेत० ॥ २९ ॥ हीक हरस ने हे
 मकी, नारा ने नासुररे ॥ पाठां पोडा पेटनी, ट
 ले दुख दंतनां सुलरे ॥ चेत० ॥ ३० ॥ निर्ध
 नियां धन संपजे, पुत्र अपुत्रीया होयरे ॥ विण
 केवली सिद्धचक्रना, गुण न शके कही कोयरे ॥
 ॥ चेत० ॥ ३१ ॥ रास जलो श्रीपालनो, ति
 हां ए सातमी ढालरे ॥ विनय कहे श्रोताघरे,
 होजो मंगल मालरे ॥ चेत० ॥ ३२ ॥

दोहरा ॥ श्री मुनिचंद मुनीश्वरे, सिद्ध यत्र
 करि दीद ॥ इहनव परजव एहथी, फलशे वं
 गित सिद्ध ॥ १ ॥ श्री गुरु श्रावकने कहे, एवं
 उ सुगुणनिधान ॥ कोइक अवसर पाविए, से
 वो थड सावधान ॥ २ ॥ साइमिना मगप
 सम, अवश न सगपण कोय ॥ करया

हमितणी, समकित निर्मल होय ॥ ३ ॥ पधरा
वे आदर करी, साहमि निज आवास ॥ नक्ति
करे नवि नविपरे, आणी मन उल्लास ॥ ४ ॥
त्यां सघळो विधि साचवे, पामी गुरु उपदेश.
सिद्धचक्रपुजा करे, आंबिल तप सुविशेष ॥ ५ ॥

ढाल आठमी ॥ चोपाइनी देशी ॥ आ
सो शुदि सातम सुविचार, उली मांमी स्त्री न
रतार ॥ अष्ट प्रकारी पुजा करी, आंबिल कीधां
मन संवरी ॥ १ ॥ पहेले आंबिल मन अनुकु
ल, रोगतणुं त्यां दाध्युं मुल ॥ अंतरदाह सय
ल उपशम्यो, यंत्र नमण महिमा मनरम्यो ॥
॥ २ ॥ बीजे आंबिल बाहिर तचा, निर्मल थड
जपतां जिनरुचा ॥ एम दिन दिन प्रत्ये बाध्यो
वान, देह थयो सोवन्न समान ॥ ३ ॥ नवमे आं
बिल थयो निरोग, पामी यंत्रनमणसंयोग ॥ सि
द्धचक्रनो महिमा जुव, सकल लोक मन अच
रित हुव ॥ ४ ॥ मयणा कहे अवधारो राय, ए स

वि सहगुरुतणो पमाय ॥ मातपिता बंधव सुत
 होय, पण गुरुसम हेतु नहिं कोय ॥ ६५ ॥ कष्ट नि
 वारे गुरु इहलोक, दुर्गतिथी-वारे परलोक ॥ सु
 माति होय सद्गुरु सेवतां, गुरु दीवोने गुरु देवना
 ॥ ६६ ॥ धन गुरु ज्ञानी धन ए धर्म, प्रत्यक्ष दीठो
 जेनो मर्म ॥ जैनधर्म परशंसे सहु, बोधबीज पा
 म्या त्या बहु ॥ ७७ ॥ सातमेंह रोगीना रोग, ना
 ठा यंत्रनमणसयोग ॥ ते साते सय सुखिया थया,
 हृष्या निज निज थानिक गया ॥ ७८ ॥ इक दिन
 जिनवर प्रणमी पाय, पाठावलता दीठी माय ॥
 हर्ष धरीने चरणे नमे, मयणा पण आची ते
 समे ॥ ७९ ॥ सासु जाणी पाये परे, विनय करं
 तां गिरिवर चढे ॥ सासु वहुने दे आशीप,
 आचरज देखी धुणे शीश ॥ ८० ॥ कहे कुंवर
 माताजी सुणो. ए पसाय सवि तुमबहुतणो ॥
 गयो रोगने बाध्यो रग, वली लह्यां जिनधर्म
 प्रसंग ॥ ८१ ॥ सुगुणबहु निर्मल निजनद. दे

स्त्री माय अधिक आणंद ॥ पुनिमपरे बहुए ज
 श लीध, सकलकलापुण पियु वीध ॥ १२ ॥
 सुणो पुत्र कोसंबी सुणयो, वैद एक वैदक बहु न
 एयो ॥ तेहजणी त्यां जाऊं जाम, ज्ञानी गुरु मुज
 मिलिया ताम ॥ १३ ॥ में पृष्ठयुं गुरुचरणे नमी,
 कर्म कदर्थन में बहु खमी ॥ पुत्र एकठे मुज
 चालहो, ते पण कर्म रोग ग्रह्यो ॥ १४ ॥ तेहत
 णो किम जाशे रोग. के नहीं जाय पापसंयोग ॥
 दया वरी मुज दाखो तेह, हुंहुं तुमचरणोनी खेह
 ॥ १५ ॥ तव बोल्या ज्ञानी गुणवंत, सतकर खे
 द सांजल विगतंत ॥ ते तुज पुत्र कुष्टिए ग्रह्यो,
 जंवरराणो करि जश लह्यो ॥ १६ ॥ मालवपति
 पुत्रीए व थो, तस विवाह कुष्टिए कर्यो ॥ घरु
 णो वयणे तप आदयुं, सिद्धचक्र आराधन क
 र्यं ॥ १७ ॥ तेथी तुज सुत थयो निरोग, प्रग
 ट्यो पुण्यतणोसंयोग ॥ बली एहथी बधशे लाज,
 जीती घणं जोगवशे राज ॥ १८ ॥ गुरुवचने

हूं आवी आज, तूम दीठे मुज सरियां काज
 ॥ त्रणे जणे हिवे रह सुखवास, लील करे सा
 हमि आवास ॥ १९ ॥ सिद्धचक्रनो उत्तम
 रास, जणता सुणतां पुणे आश ॥ ढाल आ
 ठभी एणिपरे सुणी, विनय केहे चित्त धरनो
 गुणी ॥ २० ॥

दोहरा ॥ एकजिन जिन पुजा करी, मधु
 रस्वरे एक चित्त ॥ चैत्यवंदन करी कुंवरे.
 सामू बहू सुणत ॥ १ ॥ मयणानी माता घणं,
 दुहवाणी नृपसाथ ॥ जब मयणा मत्सर धरि,
 दीधी ऊबर हाथ ॥ २ ॥ पुण्यपाल नामे नृपति,
 निज बध्व आवास ॥ गीसावि आवि रही, मुके
 मुख नीसास ॥ ३ ॥ जिनवाणी द्वियडे धरी,
 वीसारी दुःख दंद ॥ आवी देव जुहारवा, तिण
 दिन त्या आणद ॥ ४ ॥ माए मयणा उलखी,
 अनमारे निज बाल ॥ आगल नर दीठो बच
 र, योवन रूपरमाल ॥ ५ ॥

री, कां दीधीकिरतार ॥ जिणे कुष्टिबर परहरी,
 अवर कियो नरतार ॥ ६ ॥ रूपसुंदरी एणिप
 रे, घणुं, रुदन करे तिणिवार ॥ वज्र पमो मुज कु
 खने, धिक धिक मुज अवतार ॥ ७ ॥ रोती दीठी
 दुख नरे, मयणाए निजमाय ॥ तव आवी ऊ
 तावली, लागी-जननी पाय ॥ ८ ॥ हर्षतणे था
 नक तुमे, कां दुख आणो माय ॥ दूख दोहग
 दुरे गयां, श्रीजिनधर्मपसाय ॥ ९ ॥ निसिही
 कहिने आवियां, जिणहरमांहे जेण ॥ करतां क
 था संसारनी, आशातन हुए तेण ॥ १० ॥ ह
 मणां रहिएछे जिहां, आवो तेह आवास ॥ वात
 सयल सुणजो तिहां, होशे हिये उल्लास ॥ ११ ॥
 तिहां आवि बेठां मिली. चारे चतुर सुजाण ॥
 जे दिन सजन मिलावडो, धन ते दिन सुवि
 हाण ॥ १२ ॥ मयणाना मुखथी सुणी. सघलो
 ते अवदात ॥ रूपसुंदरी सुप्रसन थइ, हियमे
 हर्ष न मात ॥ १३ ॥

ढाल नवमी ॥ अधर मंडित गोरी नागिलारे,
 एदेशी ॥ वर बहु बेहु सामुमिलीरे, करे वेवाह
 ण वातरे ॥ कमला रूपाने कहेरे, धन तुम कुल
 विख्यातरे ॥ जुठ आगमगति पुण्यनीरे, पुण्ये
 वावित थायरे ॥ सवि दुःख दूर पलायरे, जुठ
 आगमगति पुण्यनीरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बहुए
 अम कुल ऊचरयुंरे, कीधो अम उपकाररे ॥
 अमने जिनधर्म बुझव्योरे, उतारयां दुःख पाररे
 ॥ जु० ॥ २ ॥ सुढ जिम दोरा प्रतेरे, आणे
 कसीदे ठामरे ॥ तिम बहुए मुज पुत्रनीरे,
 घणी बधारी मामरे ॥ जु० ॥ ३ ॥ रूपा क
 हे जाग्ये लह्योरे, अमे जमाइ एहरे ॥ रय
 ण चिंतामणी सारखोरे, सुंदर तनु ससनेहरे ॥
 ॥ जु० ॥ ४ ॥ सुणवा अम इठा घणीरे, एहना
 कुल घर वंशरे ॥ प्रेम तेह प्रकाशीएरे, जिम हं
 से अम हंसरे ॥ जु० ॥ ५ ॥ कहे कमला रूपां
 सुणोरे, अम अनौपम देशरे ॥ त्यां चंपानयरी

जलीरे, ज्यां नही पाप प्रवेशरे ॥ जु० ॥ ६ ॥
 तेह नयरीनो राजियारे, राजा गुण अजिरामरे
 ॥ सिंहथकी रथ जोडनारे, प्रगट होए तस ना
 मरे ॥ जु० ॥ ७ ॥ राणी तस कमलप्रनारे, अंगे
 धरे गुणसेनरे ॥ कोंकणदेश नरिंदनारे, जे सुणी
 ए लघु बेहेनरे ॥ जु० ॥ ८ ॥ राजा मन चिंता
 घणीरे, पुत्र नहीं अम कोयरे ॥ राणी पण आरं
 ती करेरे, निशदिन फुरे दोयरे ॥ जु० ॥ ९ ॥
 देव देहेरडां मानतारे, इच्छतां पुढतां एकरे ॥ रा
 णी सुत जनम्यो यथारे, विद्या जाणे विवेकरे ॥
 ॥ जु० ॥ १० ॥ नगर लोक सवि हरपियारे, घर
 घर तोरण त्राटरे ॥ आवे घणी वधामणारे, शि
 णंगारयां घर हाटरे ॥ जु० ॥ ११ ॥ राजा मन
 उल्लट घणेरे, दान दिए लाख कोडीरे ॥ वयरी प
 ण संतोषियारे, बंधीखाना ढोडीरे ॥ जु० ॥ १२ ॥
 धवल मंगल दीए सुंदरीरे, वाजे ढोल निसाणरे
 ॥ नाटक होये नव नवारे, महोत्सव अधिक मंडा

एरें ॥ जु० ॥ १३ ॥ नाति सज्जन सहु नोतरयारें,
 नोजन पटरस पाकरे ॥ पार नहीं पकवाननोरे,
 सालि सुरहां घृत शाकरे ॥ जु० ॥ १४ ॥ नृपण
 वस्त्र पेहेरामणीरे. श्रीफल कुमुम तबोलरे ॥ के
 शर तिलक करी बाटणारे. चंदन चुआ गंगरो
 लरे ॥ जु० ॥ १५ ॥ राजरमणी अम पालशेरे.
 पुण्ये लह्यो ए बालरे ॥ सज्जन नृआ मिली ते
 हनुरे, नाम ठवे श्रीपालरे ॥ जु० ॥ १६ ॥ रासरुडो
 श्रीपालनोरे. तेहनी नवमी ढालरे ॥ विनय कहे
 श्रोता घरेरे, होजो मंगल मालरे ॥ जु० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ पाच वरसनो जव थयो, ते कुवर
 श्रीपाल ॥ तामशुल रोगे करी, पिता पहाच्यो
 काल ॥ १ ॥ शिरकुटे पीटे हियु, रुवेसकल परि
 वार ॥ रवामी ते माया तजी, कुण करशे अम
 सार ॥ २ ॥ गया विदेशे बाहुले. वाला कोइक
 वार ॥ इण वाटे बोलाविया, नमिले बीजी वार
 ॥ ३ ॥ हैजे हंसि बोलावता, जे क्लेशमां केड

वार॥नजर न मांते ते सजन, फटे न हियु गिमा
 र ॥ ४ ॥ नेह न आयो माहरो, पुत्र न था
 प्यो पाट ॥ एवढि ऊतावल करी, शुं चाल्या
 इण वाट ॥ ५ ॥ रोती हियडे फाटते, कपला क
 रे विलाप ॥ मतिसागर मंत्री तिसे, इम सम
 जावे आप ॥ ६ ॥ हिवे हियडुं काठुं करी, स
 कल संजाहो काज ॥ पुत्र तुमारो नानडो, रोतां
 न रहे राज ॥ ७ ॥ कमला कहे मंत्री प्रते, हि
 वे तुमे आधार ॥ राज देइ श्रीपालने, सफल
 करो अधिकार ॥ ८ ॥

ढाल दशमी ॥ जगतगुरु हीरजीरे, एदेशी ॥
 मृतकारज करी रायनुरे, संकल निवारी शो
 क ॥ मतिसागर मंत्रीश्वरेरे, थिर कीधा स
 धी लोक ॥ देखो गति दैवनीरे, दैव करे ते हो
 य ॥ कुणे चाले नहीरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥
 राज ठवी श्रीपालनेरे, वरतावी तस आण ॥ रा
 ज काज सावि चालवेरे, मंत्री बहु बुद्धिखाण ॥

देखो० ॥ २ ॥ एणे अवसरे श्रीपालनेरे, पित
 रियो मतिमुढ ॥ परिकर सगलो पालटीरे, गुह्य
 करे इम गुढ ॥ दे० ॥ ३ ॥ भतिसागरने मा
 रवारे, बलि हणवा श्रीपाल ॥ राज लेवा चंपा
 तणुंगे, दुष्ट थयो उजमाल ॥ देखो० ॥ ४ ॥ कि
 महिक मन्त्रीसर लहीरे, ते बथरीनी वात ॥ राणी
 ने आवी कहेरे, नागो लेई-रात ॥ दे० ॥ ५ ॥
 जो जागो तो जीवशेरे, सुत जीवाडणकाज ॥ कु
 वर जो कुशलो हशेरे, तो बलि करगो राज ॥
 देखो० ॥ ६ ॥ राणी नाठी एकलीरे, पुत्र चना
 वी केड ॥ ऊवट ऊजाडे पडीरें, विपमी जिहा
 ठे वेम ॥ देखो० ॥ ७ ॥ जास जमोजड जां
 खरागे, खाखर चाखर खोह ॥ फाणिधर माणि
 धर जिहां फिगेरे, अजगर उदर गोह ॥ दे
 खो० ॥ ८ ॥ ऊजड अवला रडवडेरे, रसणी
 घोर अंधार ॥ चरणे खुंचे कांकगरे, ऊगे लो
 हीनां धार ॥ देखो० ॥ ९ ॥ वरू घने

डारे, सोर करे शीयाल ॥ चोर चरडने चीनरां
 रे, दीए ऊबलता फाल ॥ देखो० ॥ १० ॥ घुघु
 घु घुअड करेरे, वानर पाडे हीक ॥ खलहल प
 रवतथी पंडरे, नदीनी ऊरणा नीक ॥ देखो० ॥
 ॥ ११ ॥ वलियुं वेउनुं आउखुंरे, सत्य शीयल
 संघात ॥ वखत बली कुंवर बडांर, तेणे न करे
 कोइ घात ॥ देखो ० ॥ १२ ॥ रयणाहिंडोले हिं
 चतीरे, सुती सोवन खाट ॥ तस शिर आ वे
 ला पडीरे, पडो दैवशिर दाट ॥ देखो० ॥ १३ ॥
 रडवरडतां रयणी गइरे, चडी पंथशिर शुद्ध ॥ त
 व बालक जुखो थयोरे, मागे साकर दुव ॥ देखो०
 ॥ १४ ॥ तव रोती राणी कहेरे, दुध रह्यां व
 त्म दुर ॥ जो लहीए हिवे कुशकारे, तो लह्यांकु
 र कपुर ॥ देखो० ॥ १५ ॥ हिवे जातां मार्गे
 मिलिरे, एक कुठानी फोज ॥ रोगी मिलिया सा
 तशेरे, हिंडे करता मोज ॥ देखो० ॥ १६ ॥ क
 ठीए पुढ्या पढीरे, सयल गुणावी यात ॥ वल

तं कुटी डम कहरे, आगति म करो मांत ॥ दे
 खो० ॥ १७ ॥ आवी अमशरणे रहारे, मन रा
 खो आमारा ॥ ए कोइ अम जीवतारे, कोइ
 न ले तुम नाम ॥ देखो० ॥ १८ ॥ वेसर आ
 प्यु बेसवारे, ढाकी सघलुं अंग ॥ बालक रा
 खी सोडमारे, बेठी थई खमंग ॥ दे० ॥ १९ ॥
 एहवे आव्या सोधतारे, वयगीना असवारे ॥
 काइ स्त्री टीठी अहियारे, पुढे वारोवार ॥ दे०
 ॥ २० ॥ कोइ इहां आव्युं नयीरे, जुठम जंखा
 आल ॥ वचन न मानो अमतणारे, नयणे जुन
 निहाल ॥ देखो० ॥ २१ ॥ जो जोशो तो ला
 गशेर, अंगे रोग असाध ॥ नाठा बीहता बाप
 डारे, बलगे रखे विराध ॥ दे० ॥ २२ ॥ कुटी
 संगतथी थयारे सुतने ऊवर रोग ॥ मानी म
 न चिंता घणीरे, कठिन करमना जोग ॥ दे० ॥
 ॥ २३ ॥ पुत्र जलावी तेहमेरे, माता चलिय वि
 देश ॥ वैद्य उपध जोवा जणीरे, सहेंती घणा क

लेश ॥ दे० ॥ २४ ॥ ज्ञानीने वचने करीरे, सय
 ल फली मुज आश ॥ तेहज हुं कमलाप्रचारे
 आ बेठी तुम पास ॥ दे० ॥ २५ ॥ रास रुमो
 श्रीपालनोरे, तेहनी दशमी ढाल ॥ विनय कहे
 पुण्ये करीरे, दुख थाये विसराल ॥ दे० ॥ २६ ॥
 दोहरा ॥ रूपसुंदरी श्रवणसुणी, विमल ज
 माइ वंश ॥ हर्षे हियडे गहगही, एणिपरे करे
 प्रसंस ॥ १ ॥ वखतवंत मयणा समी, नारी
 नको संसार ॥ जिणे बेऊ कुल उद्वग्यां, सती
 शिरोमणि सार ॥ २ ॥ वर पण पुण्ये पावियो,
 नरपति निर्मल वंश ॥ पुत्र सिंहरथरायनो. क
 त्रियकुल अवंतम ॥ ३ ॥ रूपसुंदरी रंग जई,
 वात सुणावी सोय ॥ निजबंधव पुण्यपालने,
 ते पण हर्षित होय ॥ ४ ॥ चतुरंगी सेना सजी.
 साथ सबल परिवार ॥ तेजी तुरिय नचावता,
 अवल वेप असवार ॥ ५ ॥ रत्नजडित ऊलके
 घणा, धरया सुरिया पान ॥ ढोल नगारां गड

गडे, नेजा फुरे निशान ॥ ६ ॥ जाणेजी वर
ज्या वसे, त्या आव्या ततकाल ॥ निजमंदिर
पधराववा. पुण्यवंत पुण्यपाल ॥ ७ ॥

ढाल इगीयारमी ॥ राय कहे राणीप्रते, ए
देगी ॥ आवो जमाद प्राहुणा. जयवंताजी ॥
अमघर करो पवित्ररे. गुणवंताजी ॥ सहुने अ
चरज ऊपजे, जयवंताजी ॥ सुणता तुम चरित्त
रे, गुणवंताजी ॥ १ ॥ गज वेसारी उत्सवे ॥
॥ जय० ॥ पधराव्या निजगेहरे ॥ गुण० ॥ मा
उलसुसरो पुरवे ॥ ज० ॥ जोग जला धरी ने
हरे ॥ गुण० ॥ २ ॥ एकदिन वेठा मालीए ॥
जय० ॥ मयणाने श्रीपालरे ॥ गु० ॥ वाजे ठंदे
नव नवे ॥ ज० ॥ मांरुल जुंगल तालरे ॥ गु०
॥ ३ ॥ राय राणी रंगे जुए ॥ ज० ॥ थड थड
ताचे पात्ररे ॥ गु० ॥ नरह नेद नावे जला ॥
जय० ॥ बाले परिपरि गात्ररे ॥ गुण० ॥ ४ ॥
इणे अवसरे रयवामीथी ॥ जय० ॥ पाठो वलि.

यो रायरे ॥ गुण० ॥ नृत्य सुणी उन्नो रह्यो ॥
 ॥ ज० ॥ प्रजापाल तिणे ठायरे ॥ गु० ॥ ५ ॥
 सुख जोगवतां स्वर्गनां ॥ जय० ॥ दीठां स्त्री
 नरताररे ॥ गुण० ॥ नयणे लाग्यो निरखवा ॥
 जय० ॥ चित चमक्यो तिणी वाररे ॥ गुण० ॥
 ॥ ६ ॥ तत्क्षण मयणा उलखी ॥ ज० ॥ मन
 उपन्यो संतापरे ॥ गु० ॥ अवर कोइ वर पेखी
 उ ॥ ज० ॥ है है प्रगट्युं पापरे ॥ गुण० ॥ ७ ॥
 धिगं धिग क्रोधतणे वशे ॥ जय० ॥ में अवि
 चार्युं कीधरे ॥ गुण० ॥ मयणा सरखी सुंदरी
 ॥ ज० ॥ कोढीने कर दीधरे ॥ गुण० ॥ ए पण
 हुइ कुलखंपणी ॥ ज० ॥ मुज कुल नरियो वा
 ररे ॥ गुण० ॥ परण्यो प्रीतम परहरी ॥ ज० ॥
 अवर कियो नरताररे ॥ गुण० ॥ ९ ॥ एणिपरे
 उन्नो ऊरतो ॥ जय० ॥ जव दीठा ते रायरे ॥
 ॥ गुण० ॥ पुण्यपाल अवसर लही ॥ जय० ॥
 आवी प्रणमे पाथरे ॥ गु० ॥ १० ॥ राज प

धारो मुज घरे ॥ जय० ॥ जुठ जमाइ रूपरे ॥
 ॥ गु० ॥ सिद्धचक्रसेवा फली ॥ जय० ॥ ते क
 ह्युं सकल स्वरूपरे ॥ गुण० ॥ ११ ॥ राये आ
 वां उलरुया ॥ ज० ॥ मुख इगित आकाररे ॥
 ॥ गु० ॥ मन चिते महिमा निलो ॥ ज० ॥ जै
 नधर्म जगसाररे ॥ गु० ॥ १२ ॥ मयणा तें सा
 ची कही ॥ जय० ॥ सजामांहे सवि वातरे ॥
 गु० ॥ में आज्ञानपणे कह्युं ॥ ज० ॥ ते सघलुं
 मिथ्यातरे ॥ गु० ॥ १३ ॥ में तुज दुःख देवा ज
 णी ॥ ज० ॥ कीधो एह उपायरे ॥ गु० ॥ दुः
 ख टलीने सुख थेंयुं ॥ ज० ॥ ते तुज पुण्यपसा
 यरे ॥ गु० ॥ १४ ॥ मयणा कहे सुणो तातर्जा ॥
 जय० ॥ इहा नही तुम वाकरे ॥ गुण० ॥ जीव
 सयल वश कर्मने ॥ ज० ॥ कुण राजा कुण रां
 करे ॥ गु० ॥ १५ ॥ मान तजी मयणातणी ॥
 जय० ॥ राये मनावी मायरे ॥ गुण० ॥ सज्जन
 थया सवी एकमना ॥ ज० ॥ उलट अंगन मा

घरे ॥ गु० ॥ १६ ॥ नयर सयल शिगगागियु
 ॥ जय० ॥ चौटां चोक विशालरे ॥ गु० ॥ घर
 घर गुडी उडले ॥ ज० ॥ तोरण जाकजमालरे
 ॥ गु० ॥ १७ ॥ घरे जमाइ महोत्सवे ॥ ज० ॥
 तेडी आव्या रायरे ॥ गु० ॥ संपुरण सुख जो
 गवे ॥ ज० ॥ सिद्धचक्र सुपसायरे ॥ गुण० ॥
 ॥ १८ ॥ नयरीमांहे प्रगट थई ॥ जय० ॥ मुख
 मुख एहिज वातरे ॥ गु० ॥ जिनशासननति
 थई ॥ जय० ॥ मयणाए राखो रूयातरे ॥ गु०
 ॥ १९ ॥ रास रूडो श्रीपालनो ॥ ज० ॥ तेह
 नी इग्यारमी ढालरे ॥ गु० ॥ विनय कहे सिद्धच
 क्रनी ॥ गु० ॥ सेवा फले ततकालरे ॥ जय० ॥
 ॥ २० ॥ चोपाइ ॥ खंड खंम मीठो जिम खंम,
 श्री श्रीपाल चरित्र अखंड ॥ श्री कीर्ति विजय वा
 चकथी लह्यो. प्रथम खंड इम विनये कह्यो ॥ १ ॥
 इति श्रीमन्नहोपाध्याय श्रीकीर्तिविजयगणि शि
 प्योपाध्याय श्रीविनय विजयगणि विरचिते श्री

श्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे मयणामुंदरीपाणि ग्र
 इणे श्रीसिद्धचक्राराधनात् निरोगत्वप्राप्ति श्री
 कमलप्रजामिलन स्वव्यतिकरकथनेत्यादि वर्ण
 नो नाम प्रथम खंड समाप्तः ॥

॥ अथ द्वितीय खंड प्रारंभः ॥

दोहरा ॥ सिद्धचक्र आराधता, पुगे धंविता को
 ड ॥ सिद्धचक्र मुज मन वस्युं, विनय कहे कर
 जोड ॥ १ ॥ सारद सार दया करी, दोजे वच
 न विलास ॥ उत्तर कथा श्रीपालनी, कहेवा म
 न उल्लास ॥ २ ॥ एक दिन रमवा निकल्यो,
 चौटे कुवर श्रीपाल ॥ सबल सैन्यसुं परवरयो,
 यौवन रूपरसाल ॥ ३ ॥ मुख सोहे पुरण श
 शी, अधे चंद्रसम जाल ॥ लोचन अमिय कचो
 लमां ॥ अधर अरुण परवाल ॥ ४ ॥ दंत जि
 सा दाडम कली, कंठ मनोहर धंवु ॥ पुर कमा
 रु परि ऋदय तट, जज नौगल जिम लवु ॥
 ॥ ५ ॥ केडलंक केसरि समो, यौवन वान शरि

र ॥ फुल खरे मुख बोलतां, ध्वनी जलधरगंजीर
 ॥ ६ ॥ चौक चौक चौटेमिल्या, रूपे मोह्या लोक ॥
 हेमल गोख मेडी चडे, नर नारीना थोक ॥ ७ ॥
 मुग्धा पुढे मायने, मा ए कुण अनिराम ॥ इंद्र
 चंद्रके चक्रवे, श्याम रामके काम ॥ ८ ॥ माय
 वहे मोटे स्वरे, अवर म ऊंखो आल ॥ जाये ज
 माई रायनो, रमवा कुंवर श्रीपाल ॥ ९ ॥ वच
 न सुणी श्रीपाल ते, चितमां लागी चौक ॥ धि
 ग सुसरा नामे करी, मुज ओलखावे लोक ॥
 ॥ १० ॥ उत्तम आपगुणे कह्या, मज्जिम बाप
 गुणेण ॥ अधम सुण्या माउल गुणे, अधमा
 धम सुसरेण ॥ ११ ॥

ढाल पहेली ॥ चतुर सनेही मोहना, एदेशी
 ॥ क्रीडा करी घरे आवियो, चपल चित्त श्रीपा
 लोरे ॥ इच्छक मन देखी करी, बोलावे पुण्यपा
 लोरे ॥ क्रीडा ० ॥ १ ॥ राज कीणे आज रीश
 व्या, कीणे लोपी तुम आणरे ॥ दीसो कांड दु

मणा, तुम चरणे अम प्राणरे ॥ क्रीडा० ॥ २ ॥
 चित्त चाहोतो आपणुं, लीजे चंपाराजरे ॥ क-
 ढ्यो प्रयाणे चालीए, सबल सैन्य लइ साजेरो ॥
 क्रीडा० ॥ ३ ॥ कुंवर कहे सुसरातणे, बले न
 लीजे राजरे ॥ आपपराक्रम जिहां नहीं, ते आवे
 कुण वाजरे ॥ क्रीडा० ॥ ४ ॥ तेहजणी, अमे
 चालशुं, जोशु देश विदेशरे ॥ जुजावले लखमीं
 लही, करशुं सकल विशेषरे ॥ क्रीडा० ॥ ५ ॥
 माय सुण आवी कहे, हुं आवीश तुम साथरे ॥
 घडीय न धीरुं एकलो, तुहिज एक मुज आथरे
 ॥ क्रीडा० ॥ ६ ॥ कुअर कहे परदेशमां, पगबं
 धन न खटायरे ॥ तिणे कारण तुमे इहा रहो,
 द्यो आशीश पसायारे ॥ क्रीडा० ॥ ७ ॥ माय
 कहे कुशला रहो, उत्तम काम करेजोरे ॥ जुजवले
 वयरी वश करी, दरिगण वहेलु देजोरे ॥ क्री० ॥
 ॥ ८ ॥ संकट कष्ट आवी पडे, करजो नवपद
 ध्यानरे ॥ रयणीए रहेजो जागता, सर्व समय

सावधानरे ॥ क्री० ॥ ९ ॥ अधिष्टायक सिद्धच
 क्रना, जेह कहांठ ग्रंथेरे ॥ ते सवी देविदेवता, य
 तन करो तुम पंथेरे ॥ क्री० ॥ १० ॥ इम शि
 खामण देइ घणी, माता तिलक बधावेरे ॥ शब्द
 शुक्न होए जला. विजय मुहुरत आवेरे ॥ क्री
 मा० ॥ ११ ॥ रास रच्यो श्रीपालनो, तेहने बी
 जे खंमेरे ॥ प्रथम ढाल विनये कही, धर्म उद
 यथिति मंडेरे ॥ क्रीडा० ॥ १२ ॥

दोहैरा ॥ हिवे मयणा इम बीनवे, तुमसुं अ
 विहरु नेह ॥ अलगी कृण एक नबीरहुं. ज्यां
 बायां त्यां देह ॥ १ ॥ अग्नि सहेतां सोहिलो,
 विरह दोहिलो होय ॥ कंतविगेही कामिनी, ज
 लण जलंती जोय ॥ २ ॥ कहे कुंअर सुंदरि सु
 णो, तुं सासुपयसेव ॥ काज करी ऊतावलो, हुं
 आधुं तुं हेव ॥ ३ ॥ मन पाखे मयणा कहे, पि
 यु तुम वचन प्रमाण ॥ ठे पंजर शुनु पड्युं, तु
 म साथे मुज प्राण ॥ ४ ॥

ढाल बीजी ॥ कोस्या ते ऊनी आंगणे. ए
 देशी ॥ वालम वेहेलारे आवजो, करजो माहेरि
 साररे ॥ रखेरे विसारी मुक्ता. लही नव नवी
 नाररे ॥ वा० ॥ १ ॥ आजयी करीश एकासणा,
 करयो सचित्त परिहाररे ॥ केवल जुमि संथारशुं,
 तज्यां स्नान शिणगाररे ॥ वा० ॥ २ ॥ तेदिन
 वलि कदी आवशे, जिहां देखीश पियुपायरे ॥
 विग्रहनी वेदना वारशुं. सिद्धचक्र सुपसायरे ॥
 ॥ वा० ॥ ३ ॥ सज्जन वलावी सहु इणिपरे, लेइ
 ढाल कृषाणरे ॥ चंद्रनामी स्वर्ग पेसते. कुंअरे
 कीध प्रयाणरे ॥ वा० ॥ ४ ॥ देश पुर नगरना
 नवनवा, जोतोकौतुक रंगरे ॥ एकला सिंहपरे
 ह्यालतो, चढयो एक गिरिशृंगरे ॥ वा० ॥ ५ ॥
 सरस शीतल वन गहनमा. जिहां चंपकतरु वा
 हरे ॥ जाप जपंतो नरपेखीत, करीतुर्ध्व निज बां
 हरे ॥ वा० ॥ ६ ॥ जाप पुरो करी पुरुष ते वो
 ल्यो करी परणामरे ॥ सुपुरुष

सरयुं माहरुं कामरे ॥ वा० ॥ ७ ॥ कुंवर कहे
 मुज सारिखुं, कहो जेह तुम काजरे ॥ घणे आ
 गे ऊपगारन, दीधां देह धन राजरे ॥ वा० ॥
 ॥ ८ ॥ तेह कहे गुरुकृपा घणी, विद्या एक मु
 ज दीधरे ॥ घणा उद्यम करयो साधवा, पण
 काज नहीं सिद्धरे ॥ वा० ॥ ९ ॥ उत्तरसाधक न
 र विना, मन रहे नहीं ठामरे ॥ तिणे तुम एक
 करुं वीनती. अपवारिए स्वामरे ॥ वा० ॥ १० ॥
 कुंअर कहे साध्य विद्या मुखे, मन करी थिर
 थोजेरे ॥ उत्तरसाधक मुजथकां, करे कोण तुज
 खोजेरे ॥ वा० ॥ ११ ॥ कुंवरना सहायथी तत
 खिणे, विद्या थइ तस सिद्धरे ॥ उत्तम पुरुष जे
 आदरे, तिहां होए नवनिधरे ॥ वा० ॥ १२ ॥
 कुंअरने तिणे विद्याधरे, दीधी औषधी दोयरे ॥
 एक जलतरणी अवरथी, लागे शस्त्र नहीं को
 यरे ॥ वा० ॥ १३ ॥ कुंअर विद्याधर दोयज
 णा, चालथा परवतमांयरे ॥ धातुरवादी रस सा

धता, दीठा तिहा तरुणायरे ॥ वा० ॥ १४ ॥ ते
 ह विद्याधरने कहे. तुमे बिधि कह्यो जेहरे ॥ ते
 णे विधि खप अमे बहु करयो, न पामे सिद्धि
 एहरे ॥ वा० ॥ १५ ॥ कुंअर कहे मुज देखतां.
 वली एह करो विद्धरे ॥ कुंअरनी नजर महि
 माथकी, ते थइ ततखिण सिद्धरे ॥ वा० ॥ १६ ॥
 धातुर्वादी कहे नीपन्युं ॥ कनक तुम परजावेरे. एह
 माथी प्रजु लीजीए ॥ तुमह जे मन जावेरे ॥ वा० ॥
 १७ ॥ कुंअर कहे मुज खप नही. कुण ऊ
 चाले नाररे ॥ अल्प तेणे अंचले वादियु, करी
 घणी मनुहाररे ॥ वा० ॥ १८ ॥ अनुक्रमे कुंअर आ
 वियो, जरुअचनयरमजाररे ॥ हेम खरची सजा
 इ करी, जलां वस्त्र हथीयाररे ॥ वा० ॥ १९ ॥
 सोवन मढीय ते औपधी, वाधी दोय निज बा
 हरे ॥ बहुविध कौतुक देखतो, फिरे जरुअचमा
 हरे ॥ वा० ॥ २० ॥ खड बीजो एह रासनो,
 बीजी एह तस ढालरे ॥ विनय कहे धर्मथी सु

ख हुवे, जिम राय श्रीपालरे ॥ वा० ॥ २१ ॥

दोहरा ॥ कोसंबीनयरी वसे, धवलशेठ धनवं
त ॥ लोक अनर्गल धनजणी, नाम कुबेर कहंत
॥ १ ॥ सकट उंट गाडां नरी, किरीयाणां बहु
जोडि ॥ ते नरुअचे आवियो, लाज लहे लख
कोमि ॥ २ ॥ वस्तु सकल वेची तिणे, अवर
वस्तु बहु लीध ॥ जलवट प्रवहण पुरवा, सब
ल सजाई कीध ॥ ३ ॥ एक जुंग वहाण कियुं,
कुआ थंन ज्यां शठ ॥ कुआ थंन सोलेसहित,
अवर जुंग अडसठ ॥ ४ ॥ वड सफरी वहाण घ
णां, बेडा वेगड द्रोण ॥ शिल्प खुर्प आवर्त इ
म, नेद गणे तस कोण ॥ ५ ॥ एणिपरी प्रवह
ण पांचसैं, पुरघां वस्तु विशेष ॥ बंदरमांहे आ
णिया, पामी नृपआदेश ॥ ६ ॥ मालिम पट पु
स्तक जुए, सुखाणी सुखाण ॥ द्रु अधिकारी द्रु
अतणी, नरे दोरि नीसाण ॥ ७ ॥ करे कराणी
साचवण, नाखदा ले न्याय ॥ वायु परखे पंज

री, नेजामां निज दाव ॥ ८ ॥ खरीमसागानि खा
 रुआ, सज्ज करे सद दोर ॥ हलक हलेमा हा
 लवे, बहु बेठा चिहु कोर ॥ ९ ॥ पंचवर्ण ध्वज
 बावटा, शिर करे चामर ठत्र ॥ वहाण सविशि
 णगारियां, मांहे विविध वाजित्र ॥ १० ॥ सात
 झुमि वहाणतणी, निवड नालिनी, पांत ॥ वय
 रीनां वहाणतणी, करे खोखरी खात ॥ ११ ॥
 सुनट सनुरा सहसदश, वडा वडा फुजार ॥ बे
 ठा चिहुदिशि मोरचे, हाथ विविध हथियार ॥
 ॥ १२ ॥ इंधण जल संवल ग्रही, बहु व्यापारी
 लोक ॥ सोहे बेठा गोखले, नूर दिए धन रोक
 ॥ १३ ॥ हिवे नांगर उपाकवा, वडा जुंगनी जा
 म ॥ नाल धडुकी नाल सनि, हुई घमोघडिता
 म ॥ १४ ॥ सवि वहाणना नांगरी, करे खरा
 खर जोर ॥ पिण नागर हाले नही, सबल म
 च्यो तव सोर ॥ १५ ॥ धवल शेठ जाखो थ
 यो, चिता चित्त न माय ॥ शीकोतर पुठण ग

यो. हिवे किम करवुं माय ॥ १६ ॥ शीकोतर
 केहे शेठ सुण, वहाण थंज्यां देव ॥ ठांडे बत्रि
 श लक्षणां, पुरुषतणो बलि लेव ॥ १७ ॥

ढाल त्रीजी ॥ श्रेणिक मन इचरज थ
 यो एदेशी ॥ धवल शेठ लेइ नेटणुं, आ
 व्यो नरपति पायरे ॥ कहे एक नर मुजने
 दियो. जेम बलिबाकुल थायरे ॥ धव० ॥ १ ॥
 राय कहे नर ते दियो. सगो नहीं जस को
 यरे ॥ बलि करजो ग्रही तेहनो, जे परदेशी
 होयरे ॥ धवल शे० ॥ २ ॥ शेवक चिहुं दिशि
 शेठना, फिरे नयरमा जोतारे ॥ कुंअर दे
 खी शेठने, वात कहे समहोतारे ॥ धव० ॥ ३ ॥
 दीठो बत्रीशलक्षणां, पुरुष एक परदेशीरे ॥
 कहो तो जाली आणीए, शुद्ध नको तस लेशीरे
 ॥ धव० ॥ ४ ॥ धवल कह आणो इहां, म क
 रो घडिय विलंबरे ॥ बलि देईने चालिए, बहार
 नहिं तस बुंबरे ॥ धव० ॥ ५ ॥ सुनट सहस

दश सामटा, आवे कुञ्जर पासेरे ॥ अजिमाती
 उद्धतपणे, कडवा कथन प्रकाशेरे ॥ ध० ॥ ६॥
 ऊठ आव्यु तुज आउष, धवलधिग तुजरुठयो
 रे ॥ बलि करशु तुजने हणी, म कर मान मन
 जुठारे ॥ धव० ॥ ७ ॥ बलि नवि थाये सिंहनो,
 मुरख हिये विमासोरे ॥ धवलपशुनो बलि थसे,
 वचने काई वारासोरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ वचनसुणी
 तस वांकसां, शेठने सुनट मुणावेरे ॥ शेठ विन
 वी रायने, बहोलु कटक आणावेरे ॥ ध० ॥ ९॥
 एकलडो दोय सैन्यसु, जव आतुली बल कुजेरे ॥
 चौटावच्चे धुंखल मच्यो, कायर हियडुं धुजेरे ॥
 ॥ धव० ॥ १० ॥ कुत तीर तरवारना, जे जे घा
 ले घायरे ॥ कुंजर अंगे लागे नही, औपधीने
 महिमायरे ॥ ध० ॥ ११ ॥ जेसापरेरणखेतमां,
 चिहं दिशिं धिगड धायरे ॥ ऊडया जोद्ध वेला
 जिस्या, शिगे वलग्या जायरे ॥ धव० ॥ १२ ॥
 कुंजर ताकी जेहने, मारे लाठी लोढेरे ॥ लहबह

तो लांवा थई. ते पुहवीए पोढेरे ॥ धव० ॥ १३ ॥
 मस्तक फूटयां केइनां, पमया केइना दांतरे ॥ केइ
 मुखे लोही वमे, पढी सुजटनी पांतरे ॥ धव० ॥
 ॥ १४ ॥ केइ पेठा हाठमां, केइ पोलमां पेठारे ॥ केइ
 दांते तरणां दई. गलिया थइने चेठारे ॥ ध० ॥ १५ ॥
 केइ कहे कायर अमे, केइ कहे अमे रांकरे ॥ के
 इ कहे मारो रखे, नथी अमारो वांकरे ॥ धव०
 ॥ १६ ॥ केइ कहे पेटारथी. अशरण अमे अनाथरे ॥
 मुखे दिए दश अंगुली, घे वली आमा हाथरे ॥
 ॥ ध० ॥ १७ ॥ धवलशेठ ते देवतां, आवी ला
 ग्यो पायरे ॥ देवसरूपी दिसो तुमे, करो अमने
 सुपसायरे ॥ ध० ॥ १८ ॥ महिमानिधि मोठा
 तुमे, तुम बल शक्ति अगाधरे ॥ अविनय कीध
 अजाणतां, ते खमजो अपराधरे ॥ धव० ॥ १९ ॥
 अवधारो अम वीनती. करो एक उपगाररे ॥
 थंज्यां वहाण तारवो, उतारो दुःख पाररे ॥ ध
 व० ॥ २० ॥ कुंअर कहे ए कामनुं, शुं देशो

मुज जाडुरे ॥ गेठ कहे लख मानैया, खुत्तुं का
 ढो गाडुरे ॥ धव० ॥ २१ ॥ सिद्धचक्र चित्तमां
 धरी, नवपद जाप न चुकेरे ॥ वड वहाण ऊ
 पर चढी, सिंहनाद ते मुकेरे ॥ धव० ॥ २२ ॥
 जे देवी दुस्मन हती, दुष्ट गई ते दुररे ॥ वहा
 ण तग्या कारजसरथा, वाजेमंगल-तुररे ॥ ध०
 ॥ २३ ॥ बीजे खडे ढाल ए, श्रीजी-चित्तमां
 धरजोरे ॥ विनयकहे वहाण परे, नवियण नव
 जल तरजोरे ॥ धव० ॥ २४ ॥

दोहरा ॥ ते देखी चिते धवल, चडयो चित्ता
 मणि हाथ ॥ वडो वखत जो मुज हुए तो ए आवे
 साथ ॥ १ ॥ एक लाख दीनार तस, देइ ला
 ग्यो पाय ॥ करजोमीने वीनवे, वात सुणो एक
 जाय ॥ २ ॥ वरसप्रते-एकेकने, सहस देजं दी
 नार ॥ सेवा सारे सहसदश, जोद्ध जला जुंजार
 ॥ ३ ॥ तुमने मुह माग्युं देजं, आवो अमारि
 साथ ॥ ए अवधारो वीनती, अमने करो सना

थ ॥ ४ ॥ कुंअर कहे हुं एकलो, लेनं सर्वनुं मो
 ल ॥ ए सर्वनुं हुं एकलो. कारज करुं अमोल
 ॥ ५ ॥ ते धननुं लेखुं करी, शेठ कहे करजोड ॥
 अमेवणिकजन एकने. किम देवाए कोरु ॥ ६ ॥
 कुंअर कहे शेवक थई, दाम न ऊलुं हाथ ॥ पि
 ण देशांतर देखवा, हुं आवुं तुम साथ ॥ ७ ॥
 जाडु लेइ वहाणमां. द्यो मुज बेसण ठाम ॥ मा
 स प्रते दीनार शत. जाडुं परठ्युं ताम ॥ ८ ॥
 ढाल चौथी ॥ राग मल्हार ॥ जीहो जोयुं
 अवधि प्रयुं जीने, एदेशी ॥ जीहो कुंअर बेठा
 गोखडे, जीहो महोटा वहाणमांय ॥ जीहो चिहु
 दिशि जलधि तरंगना, जीहो जोवे कौतुक त्या
 य ॥ सुगण नर पेखो पुण्य प्रजाव ॥ ए आंकणी
 ॥ जीहो पुण्ये मनवांछितमिले, जीहो दुर टले
 दुःख दाव ॥ जीहो सढ हंकारया सामटा, जी
 हो पुरया घण पवणेण ॥ जीहो वड वेगे वहाण
 वहे, जीहो जोयण जाये खणेणे ॥ सुगण० ॥

॥ ૨ ॥ જીહો જલહસ્તિ પર્વત જિસ્થા, જીહો
 જલમા કરે કહ્લોલ ॥ જીહો માહોમાહે ઝઝતા,
 જીહો ડઘાલે વહ્લોલ ॥ મુ૦ ॥ ૩ ॥ જીહો મગ
 રમત મહોટા ફિર, જીહો મુમુવાર કેડ કોમી ॥
 જીહો નક્ર ચક્ર દોમે ઘળા, જીહો કરતાં દોડા
 દોમી ॥ મુ૦ ॥ ૪ ॥ જીહાં ઇમ જાતા કહે પંજરી,
 જીહો આજ પવન અનુકુલ ॥ જીહો જલ ઇંધ્ર
 ણ જો જોડે, જીહો આવ્ય વઘ્વરકુલ ॥ મુ૦
 ॥ ૫ ॥ જીહો તમ વંદરમાહે ઝતરી, જીહો જલ
 ઇંધ્રણ લેડ લોક ॥ જીહો ધવલશેઠ કાઠે રહ્યા,
 જીહો સાથે મુજટના થોક ॥ મુ૦ ॥ ૬ ॥ જી
 હો કોલાહલ તે માનલો, જીહો આવ્યા અતિ
 ઝ પગણ ॥ જીહો દાણી વઘ્વરગાયના, જીહો
 માગે વદર દાણ ॥ મુ૦ ॥ ૭ ॥ જીહો ઝેટ મુજ
 ટને ગોરંચ, જીહો દાણ ન દીખે અવુઝ ॥ જીહો
 તવ નિહા લાગ્યું નેહને, જીહો માંહોમાહે ઝંઝ ॥
 ॥ મુ૦ ॥ ૮ ॥ જીહો ઝેટનણે મુજટે હણ્યા,

जीहो दाणी नाठा जाय ॥ जीहो सैन्य सबल
 तव सज करी, जीहो आव्यो बब्वरराय ॥ सु०
 ॥ ९ ॥ जीहो राज तेज न शक्या सही, जीहो
 दीधी सुनटे पुठ ॥ जीहो मार पड्यो तव नाश
 तां. जीहो बाण जरी जरी मुठ ॥ सु० ॥ १० ॥
 जीहो बांध्यो जाली जवितो. जीहो सुख सरीखो
 शेठ ॥ जीहो बांह बेउ ऊंची करी, जीहो मस्त
 क कीधुं हेठ ॥ सु० ॥ ११ ॥ जीहो रखवाला
 मुकी तिहां, जीहो पावो बलियो राय ॥ जीहो
 तव बोलावे शेठने. जीहो कुंअर करी सुपसाय
 ॥ सु० ॥ १२ ॥ जीहो सुनट सवे तुम किहां
 गया, जीहो बांध्या बाह मरोऊ ॥ जीहो एवडुं
 दुःख न देखता, जीहो जो देता मुज कोड ॥
 सु० ॥ १३ ॥ जीहो शेठ कहे तुम कां दियो,
 जीहो दाध्या ऊपर लुण ॥ जीहो पड्या पवे
 पाटु कसी, जीहो हणे मुआने कुण ॥ सु० ॥
 ॥ १४ ॥ जीहो कहे कुंअर वथरी ग्रहं, जीहो जो

गलं ए वित्त ॥ जीहो तो मुजने देशो किशुं,
 जीहो जाखो थिर करी चित्त ॥ सु० ॥ १५ ॥
 जीहो शेठ कहे सुण साहिवा, जीहो ए मुज कार
 ज साध ॥ जीहो वहेची वहाण पाचशे. जीहो
 देइशुं आधोआध ॥ सु० ॥ १६ ॥ जीहो वो
 ल दंध साखीतणो, जीहो कुंअरे पाढी तंत ॥
 जीहो धनुष तीर तरकस ग्रही, जीहो चाल्यो
 तेज अनंत ॥ सु० ॥ १७ ॥ जीहो जइ बठार
 बोलावियो, जीहो बल पागे बडवीर ॥ जीहो
 शस्त्र शत जुजबलतणो, जीहो नाद उतारुं नीर
 ॥ सु० ॥ १८ ॥ जीहो तुज सरखो जे प्राहुणो. जीहो
 पहुँच्यो अम घर आय ॥ जीहो सुखडली मु
 ज हाथनी, जीहो चाख्या विण किम जाय ॥
 ॥ सु० ॥ १९ ॥ जीहो माहाकाल जुए फिरी
 जीहो दीठो एक जुवान ॥ जीहो जाजानी परे
 कुंऊतो, जीहो लक्षण रूप निधान ॥ सु० ॥
 ॥ २० ॥ जीहो तु सुंदर सोहामणो. जीहो दीसे

यौवन वेश ॥ जीहो विणखुटे मग्वा जणी, जी
 हा कांड कर उदेश ॥ सु० ॥ २१ ॥ जीहो कुअ
 र कहे संग्राममां, जीहो वचने कशो व्यापार ॥
 जीहो जोद्धेजोद्ध मिल्या जिहां, जीहो तिहां श
 खे व्यवहार ॥ सु० ॥ २२ ॥ जीहो माहाकाल
 कोप्यो तिहां, जीहो हलकारे निज सेन ॥ जी
 हो मुके शस्त्र ऊडोऊडे, जीहो राता रोप-रसेन
 ॥ सु० ॥ २३ ॥ जीहो वुठया तीखा तीरना, जी
 हो गोलाना केइ लाख ॥ जीहो पिण अंगे कुं
 अर तणे, जीहो लागी नहीं सगख ॥ सु० ॥
 ॥ २४ ॥ जीहो आकर्षी जेजे दिसे, जीहो कुं
 अर नाखे बाण ॥ जीहो सम काले दश विश
 ना, जीहो तिहां ठंभावे प्राण ॥ सु० ॥ २५ ॥
 जीहो सैन्य सबल माहाकालनुं, जीहो जागी गयुं
 दहवट्ट ॥ जीहो नृप-एकाकी कुंअरे, जीहो बां
 ध्यो बंधन घट्ट ॥ सु० ॥ २६ ॥ जीहो बांधीने
 निज साथमां, जीहो पासे आणयो जाम ॥ जीहो

बंधन बोम्ब्यां शेठना, - जीहो रक्कक नाठा ताम
 ॥ सु० ॥ २७ ॥ जीहो खड्डु लेइ माहाकालने,
 जीहो मारण धायो शेठ ॥ जीहो कहे कुंअर
 वेशी रहो. जीहो बल दीठुं तुम ठेठ ॥ सु० ॥
 ॥ २८ ॥ जीहो बंधन बब्बररायनां, जीहो बोडा
 व्या तेणीवार ॥ जीहो नुपण वस्त्र पहेगमणी,
 जीहो करे घणो सत्कार ॥ सु० ॥ २९ ॥ जीहो
 सुनट जीके नाठा हता, जीहो ते आठ्या सह
 कोय ॥ जीहो नांजे तस आजीविका, जीहो शे
 ठ कोपे करी सोय ॥ ३० ॥ जीहो कुंअरे ते स
 वि राखिया, जीहो दीधी तेहने वृत्त ॥ जीहो
 वाहण अढीसें माहरां जीहो साचवजो एक चि
 त्त ॥ सु० ॥ ३१ ॥ जीहो जे पण बब्बररायनो,
 जीहो नाठो हतो परिवार ॥ जीहो कुंअर तेडी
 तेहने, जीहो आदर दीए अपार ॥ सु० ॥ ३२ ॥
 जीहो चांथी ढाल इणीपरे, जीहो बीजे खंडे हो
 य ॥ जीहो वीनय कहे फल पुण्यनां, जीहो प

वोइरे, जे नजरे जोइरे, हीरो नवि होए विण ने
 रागरेरे ॥ ५ ॥ महोत्तव मंगविरे, साजन सह
 आवेरे, धवल गवरावे मंगल नरवरुरे ॥ रूप
 जिसि मेनारे, गुण पार न जेनारे. मदनसेन प
 रणावी एणी परेरे ॥ ६ ॥ मणी माणिक्य कोडारे,
 मुगताफल जोडीरे. नरपति करजोडी दिए
 करमोचनेरे ॥ परे परे पहिरावेरे, मणि नु
 पण जावेरे, पार न आवे जसगुण बोलतारे ॥
 ॥ ७ ॥ नाटक नव दीधारे, जिहां पात्र प्रसि
 द्दारे, जाणे ए लीधां मुल्ये स्वर्गधीरे ॥ बहु दासी दा
 सरे, सेवक सुविलासरे, दीधा उल्लासे सेवा कार
 णेरे ॥ ८ ॥ रसनर दिन केतारे, तिहां रहे सुख
 बेतारे, दान सेवकने देता बहु परेरे ॥ अमने वोलां
 वोरे, हिवे वार मलावेरे, कहे कुंअर जावुं अ
 म देशांतरेरे ॥ ९ ॥ नृप मन दुःख आणेरे, किम
 राखुं प्राणेरे, घर एम जाणे न वसे प्राहुणेरे ॥
 पुत्री जे जाइरे, ते नेट पराइरे, करे सजाइ हिवे

वोलाववारे ॥ १० ॥ एक जुंग अलंवरे. ते दे
 खी अचंवरे, चोसठ कुआ थंजे सोहतोरे ॥ का
 रीगरे घमियारे, मणि माणिक्य जडियारे, थं
 न ते अमियां नइ गयणां गणोरे ॥ ११ ॥ सो
 वन चित्रामरे, चित्रित-अजिरामरे, देखिए ठा
 मठाम त्यां गोखलरे ॥ ध्वज नेजा ऊलकैरे. म
 णि तोरण चलकैरे, चंचल ढलके चामर चिहं
 दिशेरे ॥ १२ ॥ जुंए सातमी एरे, त्यां वेशी
 विमर्माएरे. बेसीने रमिए सोवन सोगठेरे ॥ ब
 हु बंदे ठाजेरे, बाजां घणां बाजेरे, बहाण गा
 जे रह्युं समुद्रमारे ॥ १३ ॥ पुरे ते रत्नेरे, राजा
 बहु यत्नेरे, सासरवासो मन मोटे करेरे ॥ वो
 लावी वेटीरे, हैडाजर नेटीरे, शिक्का गुणपेटी
 दीधी बहु परेरे ॥ १४ ॥ साजन सहु आव्यारे.
 मिलणां बहु लाठ्यारे, काठे सर्वे आव्या आंमुं
 पाडतारे ॥ वरवहुवोलाठ्यारे, मावितर दुःख पा
 व्यारे, तूर वजडव्यां हिवे प्रयाणनारे ॥ १५ ॥

नांगर उपामाव्यारे, सढ दोर चढाव्यारे, वाहाण
 चलाव्यां वेगे खलासीएरे ॥ नित्य नाटक थाय
 रे. गुणजिन गुण गायरे, वरवहु बेऊ सोहावे
 गोखलरे ॥ १६ ॥ मन चिंते शेठरे, में कीधी वे
 ठरे, सायर ठेठ फल्यो जुठ एहनेरे ॥ जे खाली
 हाथेरे, आव्यो मुजसाथरे, आज ते आथे सं
 पुरण थयोरे ॥ १७ ॥ जल इंधण माटेरे, आ
 व्या एणी वाटेरे, परण्यो रण साटे जुठ ए सुंद
 ररे ॥ लिखमी मुज आधीरे. एने कृणमां ला
 धीरे, दोलत वाधी देखो पलकमाररे ॥ १८ ॥
 केन मागुं जाडुंरे, खत पत्र देखाडुंरे, देशे के
 आडुं अवलुं बोलशेरे ॥ कुंअर ते जाणीरे, मुखे
 मीठी वाणीरे, जाडु तस आणी आपे दश गु
 णुंरे ॥ १९ ॥ पाम्या अनुक्रमेरे, नरनव जिन
 धर्मेरे, वहाण रयण दीवे खेमे सहुरे ॥ नांगर ज
 ल मेल्यारे, सढ दोर संकेल्यारे, हलवे हलवे
 लोक सहु त्यां उतरयारे ॥ २० ॥ बीजे इम खं

डेरे. जुन पुण्य अखंडेरे, एकण पिंमे उपराजण
 करीरे ॥ कुवर श्रीपालरे, लह्या जोग रसालरे,
 पांचमी ढाल इसी वियने कहीरे ॥ २१ ॥

दोहरा ॥ दाण वलावी वस्तुना, जरी अनेक वखा
 र ॥ व्यापारी व्यापारना, उद्यम करे अपार ॥ १ ॥
 लाल किनायत जरकसी. चदरुआ चोसाल ॥
 ऊंचा तंबु ताणिया, पंच रंग पटशाल ॥ २ ॥
 सोवनपट मंरुप तले, रयणहिंदोला खाट ॥ त्यां
 बेसी कुंअर जुए, रसजर नवलर नाट ॥ ३ ॥
 धवलशेट आवी कहे, वस्तु मुल्य बहु आज ॥
 ते बेचावों का नही, जरया अर्धासें ऊहाज ॥
 ॥ ४ ॥ कुंअर पजणे शेठने, घडो वस्तुना दाम
 ॥ अवर वस्तु विणजो वली, करो अमारुं काम
 ॥ ५ ॥ काम जलाव्युं अप जले, हर्ष्यो दुष्ट
 किराम ॥ आरत ध्याने जिम पडयो. पामी दूध
 बिलाड ॥ ६ ॥ इण अवसर आव्यो तिहा, अ
 वल एक असवार ॥ सुगुण सुरूप सुवेप जस,

आपसमो परिवार ॥ ७ ॥ कुंअरे तेमी आदरे,
 बेसाडी निज पास ॥ अद्भुत नाटिक देखतां. ते
 पाम्यो उल्लास ॥ ८ ॥ हिवे नाटीक पुरूं थये.
 कुंअर तेडी पास ॥ कुण कारण कुण ठामथी.
 पधारिया अम पास ॥ ९ ॥

ढाल बठी ॥ जांऊरीया मुनिवर धन धन तु
 म अवतार एदेशी ॥ तेह पुरुश हिवे वीनवेजी,
 रतनद्वीप सुचंग ॥ रतनसानु पर्वत इहांजी, व
 लयाकार उत्तंग ॥ १ ॥ प्रभु चित्त धरीने अव
 धारो मुजवात ॥ ए आंकणी ॥ रतनसंचया तिहां
 वसेजी, नथरी परवतमांह ॥ कनककेतु राजा
 तिहांजी. विद्याधर नरनाह ॥ प्र० ॥ २ ॥ रत
 न जिसी रलियाभणीजी, रतनमाला तस नार
 ॥ सरसुंदर सोहामणीजी, नंदनबे तस चार ॥
 प्रभु० ॥ ३ ॥ ते ऊपर एक इच्छतांजी, पुत्री
 हुइ गुणधाम ॥ रूप कला रति आगलीजी. म
 दन मंजुषा नाम ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पर्वत शिर सो

हामणोजी, तिहां एक जिनसाद ॥ रायपिताए
 करावियुंजी, मेरुसुं मंडे वाद ॥ प्र० ॥ ५ ॥ सो
 वनमय सुहामणजी, तिहां रिसहेसर देव ॥ क
 नककेतु राजा तिहांजी, अहनिश सारे सेव ॥
 ॥ प्रनु० ॥ ६ ॥ नक्ति नली पूजा करे
 जी, राय कुंअरी त्रणकाल ॥ अगर उवेखां
 गुण स्तवेजी, गाए गीत रसाल ॥ प्रनु० ॥
 ॥ ७ ॥ एक दिन जिनआंगी रचीजी, कुं
 वरीए आति चंग ॥ कनकपत्र करि कोरणीजी,
 धिचे विचे रतनसुरंग ॥ प्रनु० ॥ ८ ॥ आव्यो
 राय जुहारवाजी, देखी सुताविज्ञान ॥ मन चिं
 ते धन्य मुज धूआजी, चउसठ कलानिधान ॥
 ॥ प्रनु० ॥ ९ ॥ ए सरखो जो वरमिलेजी, तो
 मुज मन सुख थाय ॥ साची सोवन मुद्रमीजी,
 काच तिहां न जमाय ॥ प्रनु० ॥ १० ॥ एम उ
 जो सूने मनेजी, चिंतातुर नृप होय ॥ इणे अ
 वसरे अचरज थयुंजी, ते सुणजो सह कोय ॥

प्रज्जु० ॥ ११ ॥ उसरती पाठे पगेजी, निजमुख
 जोती सार ॥ आवी गंजारा बाहरेजी, जव ते
 राजकुमार ॥ प्रज्जु० ॥ १२ ॥ ताम गंजारा ते
 हनांजी. देवाणा दोय बार ॥ हलाव्यां हाले न
 हींजी. सलके नहींथ लिगार ॥ प्र० ॥ १३ ॥ रा
 जकुंअरी एम चिंतवेजी, मन आणी विपवाद ॥
 में कीधी आशातनाजी, कोइक धरी प्रमाद ॥
 ॥ प्र० ॥ १४ ॥ धिग मुज जिन जोवातणोजी,
 उपन्यो ए अंतराय ॥ दोष सयल मुज सांसहो
 जी, स्वामि करी सुपसाय ॥ प्रज्जु० ॥ १५ ॥ दा
 दा दरिमण दीजीएजी, ए दुःख मुज न खमा
 य ॥ ठोरुं होय कुठोरुआंजी. ठेह नदाखे माय
 ॥ प्र० ॥ १६ ॥ राय कहे वल्ल सांजलोजी, दोष
 नही तुज एह ॥ दोष इहांठे माहरोजी, आणयो
 तज पर नेह ॥ प्रज्जु० ॥ १७ ॥ वरनी चिंता
 चिंतवीजी. जिणहरमाहे जेण ॥ ते लागी आ
 शातनजी. बार देवाणां तेण ॥ प्रज्जु० ॥ १८ ॥

जिनवर तो रुपे नहींजी, वीतराग सुप्रसिद्ध ॥ प
 ण कोइक अधिष्टायकेजी, ए मुज शिक्षा दीध ॥
 ॥ प्र० ॥ १९ ॥ एह कमाड विण ऊवरुयेजी.
 जाऊ नहीं आवास ॥ सपरिवार नृपने तिहां
 जी, त्रण हुआ उपवास ॥ प्र० ॥ २० ॥ त्रीजे
 दिन निशि पाठलीजी. वाणी हुई आकाश ॥
 दोष नहीं इहां कोइनोजी, काइ करोरे विपाद
 ॥ प्र० ॥ २१ ॥ जेइनी नजरे देखतांजी. ऊघड
 शे ए वार ॥ मदनमंजूबा तणो थशेली, तेहज
 नर जरतार ॥ प्र० ॥ २२ ॥ ऋपजदेवनी किं
 करीजी, हुं चक्रेसरी देवी ॥ एक मासमांहे हि
 वेजी, आवुं वरने लेइ ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुणी तेह
 इरण्या सहजी, रायने अति आणंद ॥ प्रेमे कीं
 धां पारणांजी, दूर गया दुःख दंद ॥ प्र० ॥
 ॥ २४ ॥ दिन गिणता ते मासमाजी, उठोठे दि
 न एक ॥ तिणे जूए सह वाटडीजी, विकल्प क
 रेय अनेक ॥ प्र० ॥ २५ ॥ पुत्र शेठ जिन दे

वनोजी, हुं श्रावक जिनदास ॥ प्रवहण आव्यां
 सांजलीजी, आव्यो इहां. आवास ॥ प्रजु० ॥
 ॥ २६ ॥ सुणी नाद नाटकतणोजी, देखण आ
 व्यो जाम ॥ मनमोहन प्रजु तुमतणुजी. दरिशाण
 दिठुं ताम ॥ प्र० ॥ २७ ॥ जाणु देविचक्रेसरीजी,
 तुमे आणथा अम पास ॥ जिणहर बार उघाड
 तांजी, फलशे सहुनी आश ॥ प्र० ॥ २८ ॥ पू
 ज्यपधारो देहरंजी, जुहारो श्री जगदीश ॥ ऊ
 घडशे ते बारणाजी, जाणुं विसवा विश ॥ प्र
 जु० ॥ २९ ॥ बीजे खंडे एणीपरेजी, सुणतां
 बठी ढाल ॥ विनय कहे श्रोता घरेजी, होजो
 मंगल माल ॥ प्रजु० ॥ ३० ॥

दोहरा ॥ तव हरखे कुंअर कहे, धवल शेठने
 तेडि ॥ जइए देव जुहारवा. आवो दुर्मति फेडि
 ॥ १ ॥ शेठ कहे जिनवर नमो, नवरा तुमे निचिं
 त ॥ विण उपराजे जेहनी, पोचे मननी खंत ॥
 ॥ २ ॥ अमनेजिमवानो नही, घमी एक परवार

॥ सीरामण वालु जिमण, करिए एकजवार
 ॥ ३ ॥ हिवे कुंवर जावा तिहां, जव थाए असवा
 र ॥ हरप्यो हैपारव करे, तेजी ताम तुखार ॥
 ॥ ४ ॥ साथ लेइ जिणदासने, अवल अवर परीवा
 र ॥ अनुक्रमे आव्या कुंअर, ऋपनदेवदरवार
 ॥ ५ ॥ एकेको आवो जई, सहु गंनारापास ॥
 कुंअर पठी पधारशे, इम बोले जिनदास ॥ ६ ॥
 जिम निर्णय करी जाणिए, वार उघाडणहार ॥
 गनारे आव्या जइ, सहुको करी जुहार ॥ ७ ॥
 हिवे कुंअर करी धोतिया, मुख बार्धा मुखकोप ॥
 जिणहरमाहे संचरे, मन आणी संतोष ॥ ८ ॥
 टाल सातमी ॥ बे बे मुनिवर विहरण पागु (घा)जी
 एदेशी ॥ कुंअर गंनारो नजरे देखतांजी, वेउ
 उघडीआं वाररे ॥ देव कुसुम वरपे तिहाजी,
 हुठ जयजयकाररे ॥ कुंअर ० ॥ ९ ॥ गयने गइ
 तरत पधामणीजी, आजु सफल सुविहाणरे ॥
 देवि दियो वर इहा आवियोजी. तेजे ऊलामल

जाणरे ॥ कुं० ॥ २ ॥ सोवन नूपण लाख वधाम
 णीजी, देइ पंचांग पसायरे ॥ सकल सज्जन जन
 परंवरघोजी, देहरे आवे नररायरे ॥ कुं० ॥ ३ ॥
 दीठो कुंअर जिन पूजतोजी, केसर कुसुम घन
 साररे ॥ चैत्यवंदन चित्त उल्लसेजी, स्तवन कहे
 नमस्काररे ॥ कुं० ॥ ४ ॥ दीठो नंदन नाजिनरिं
 दनोजी, देवनो देव दयालरे ॥ आज महोदय में
 लह्योजी, पाप गयां पायालरे ॥ कुं० ॥ ५ ॥ देव
 पुर्जाने कुंअर आवियाजी, रंगमंरुपमांहे जामरे
 ॥ राय सज्जन जने परवरघोजी, बेठा करिय प्र
 णामरे ॥ कुं० ॥ ६ ॥ जिनहर बार उघाडतां
 जी, अचरज कीधी तुमे वातरे ॥ देवस्वरूपी
 दीसो आपणांजी, वंश प्रकाशो कुल जातरे ॥
 कुं० ॥ ७ ॥ कहे उत्तम नाम ते आपणंजी, न
 व करे आप वखाणरे ॥ उत्तर न दीधोतिणे रा
 यनेजी, कुंअर सथल गुणजाणरे ॥ कुं० ॥ ८ ॥
 देख्यो अचंनो एणे अवसरेजी, हुन गयणे उ

द्योतरे ॥ ऊंचे वन्दने जोए तव सहजी, ए कुण
 प्रगटी ज्योतरे ॥ कुं० ॥ ९ ॥ विद्याचारण मुनि
 आवियाजी, देव घणा तस साथरे ॥ जइ गंजा
 रे जिन वंदीयाजी, थुएया श्रीजगनाथरे ॥ कुं० ॥
 ॥ १० ॥ देवरचित वर आसनेजी, बेठा ति
 हां मुनिरायरे ॥ दीए मधुरध्वनि देशनाजी, न
 विकश्रवणमुखदायरे ॥ कुं० ॥ ११ ॥ नवपद म
 हिमा तिहां वरणवेजी, सेवो नविक सिद्धचक्ररे
 ॥ इहजह परजव लहिए एहथीजी, लील लहेर
 अथग्गरे ॥ कुंअ० ॥ १२ ॥ दुःख दोहग सवि
 उपशमेनी, पग पग पामे ऋद्धि विशालरे, ए
 नव पद आराधताजी, जिम जग कुअर श्रीपा
 लरे ॥ कुं० ॥ १३ ॥ प्रेमे सयल पूठ परपत्ता
 जी, ते कोण कुंअर श्रीपालरे ॥ मुनिवर तव
 धुरथी कहेजी, तेहनं चरित्र रसालरे ॥ कुं० ॥
 ॥ १४ ॥ ते तुम पुएये इहा आवियोजी, ऊघा
 ढघा चेत्य दुवाररे ॥ तेह सुणी नृप हरपियो

जी, हरण्यो सवि परिवाररे ॥ कुंअ० ॥ १६ ॥
 इम कहीने मुनिवर उतपत्ताजी, गयणमारगे
 ते जायरे ॥ ऊजा थइ ऊंचे मुखेजी, वंदे सहु
 तस पायरे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ ढाल सुणी इम
 सातमीजी, खंम बीजानी एहरे ॥ विनय कहे
 सिद्धचक्रनीजी, नक्ति करो गुण गेहरो ॥ कुं० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ बेठा जिनहर बारणे. मुख मंडप
 सहुकोय ॥ कुंअर निरखी रायनुं, हैडू हर्षित
 होय ॥ १ ॥ धन रिसहेसर कल्पतरु धन चक्रे
 सरी देवि ॥ जास पसाये सुज फल्या. मनवांछि
 त ततखेवि ॥ २ ॥ तिलक वधावी कुंअरने, देइ श्री
 फल पान ॥ सज्जन साखे प्रेमेकरी, दीधुं कन्या
 दान ॥ ३ ॥ श्रीफल फोफल सयणने, देइ घ
 णां तंबोल ॥ तिलक करीने बांटाणां, कीधां के
 सर घोल ॥ ४ ॥ निज डेरे कुंअर गया, मंदि
 र पौहोतो राय ॥ बेऊ ठामे विवाहना. घणा म
 होत्सव थाय ॥ ५ ॥ वमी वडारण देवडी. पा

पड घणां वणाय ॥ केलविए पकवान बहु, मंग
 ल धवल गवाय ॥ ६ ॥ वागा सीवे नव नवा,
 दरजी बेठा वार ॥ जडिया मणि माणिक जमे,
 घाट घडे सोनार ॥ ७ ॥ राय मंडाव्यो मांडवो,
 सोवन मणिमय थंन ॥ थंन थंन मणिपूतली,
 करती नाटांन ॥ ८ ॥ तोरण चिहुंदिशि वारणे,
 नीलरयणमय पान ॥ कुंवे मोती कुंखां, जाणे
 सरग विमान ॥ ९ ॥ पचवरणना चंद्रा दीपे
 मोतीदाम ॥ मानू नारामंमले, आवि करयो वि
 श्राम ॥ १० ॥ चारि चिहुं पखे चीतरी, सोव
 न माणिक कुंन ॥ फून माल अति फूटरी, म
 हेके सवल मुरंन ॥ ११ ॥

ढाल आठमी ॥ राग खंजायति ॥ करडो ति
 हा कोटवाल एदेशी ॥ हिवे श्रीपालकुमार, विधि
 पूर्वक मळन करेजी ॥ पहेरे सवि शिणगार, ति
 लक निलाडे ओजा धरेजी ॥ १ ॥ शिर खूणालो
 खूं, माणे माणिक मोती जम्योजी ॥ हसेते हि

रा तेज, जाणे हुं नृपशिर चड्योजी ॥ २ ॥ काने
 कुंमल दोय, हार हिवे सोहे नवलखाजी ॥ ज
 म्यां कंदोरे रत्न, बाहे वाजुबंध वेरखाजी ॥ ३ ॥
 सोवन वींटी वेढ, दश आंगुलिए सोहिएजी ॥
 मुख तंबोल सुरंज, नर नारी मन मोहिएजी ॥
 ॥ ४ ॥ करधरी श्रीफल पान, वरघोडे सवि सं-
 चरघाजी ॥ सांबेला श्रीकाग, सहसगपे तव प-
 रवरघाजी ॥ ५ ॥ बाजे ढोल निशान, सरणाइ जुं-
 गल घणीजी ॥ रथ बेठी सय बद्ध, गाए मंग
 ल जानणीजी ॥ ६ ॥ साव सोनेरी साज, हयवर
 हीसे नाचताजी ॥ शिर सिंदुर सोहंत, दीसे म
 यंगल माचनाजी ॥ ७ ॥ चौटे चौटे लोक, जूए
 महोत्सव नव नवेजी ॥ एम मोटे मंत्राण, मोह-
 न आठ्या माडंवेजी ॥ ८ ॥ पौखी आण्या
 माहे, सासुए उलट घणेजी ॥ आणी चोरी माहे,
 हर्ष घणो कन्यातणेजी ॥ ९ ॥ कर मेलवो कीध,
 वेद पाठ ब्राम्हण जणेजी ॥ सोहव गाए गीत बेऊ प

સ્વે આપ આપણેજી ॥ ૧૦ ॥ કરી અગ્નિની સાથ, મં
 ગલ ચારે વરતિયાંજી ॥ ફેરાફિરતાં તામ,
 દાન નરિંદે બહુ દિયાજી ॥ ૧૧ ॥ કેલવીઝ
 કંમાર, સરસ સુગંધે મહમદેજી ॥ કવલ ઠવે
 મુખમાય, માહો માહે મન ગહ ગદેજી ॥ ૧૨ ॥
 મદનમંજુષા નારિ, પ્રેમે પરણી ડણીપરેજી ॥ વેઝ
 નારીસું જોગ, સુખ વિલસે સુસરાઘરેજી ॥
 ॥ ૧૩ ॥ ઋષ્યપદ્મદેવ પ્રાસાદ, ઝંઘર પૂજા નિ-
 ત કરેજી ॥ ગીત ગ્યાન બહુ દાન, વિત્ત ઘણું
 તિહાં વાવરેજી ॥ ૧૪ ॥ ચૈત્રમાસે સુખવાસ,
 આવિલ ઝલી આદરેજી ॥ સિદ્ધચક્રની સાર,
 લાખેણી પુજા કરેજી ॥ ૧૫ ॥ વરતાવી અમાર,
 અઠાઈ મહોત્સવ ઘણેજી ॥ સફલ કરે અવના
 ર, લાહો લીધે લખમીતણેજી ॥ ૧૬ ॥ એક
 દિન જિનહરમાહિ, કુઅર રાય બેઠા મિલીજી ॥
 નૃત્ય કરાવે સાર, જિનવર આગલ મન રાલિજી
 ॥ ૧૭ ॥ રૂપે અવસર કોટવાલ, આવી અરજ

करे इसीजी ॥ दाणचोगिए चोर, पकड्यो तस
 आजा किसीजी ॥ १८ ॥ बलि जांगी तुम आ-
 ण, बल बहुलु इणे आदर्युजी ॥ अमे देखा
 ड्या हाथ, तव मोहु जांखु करयुंजी ॥ १९ ॥
 राजा बोले ताम, दंडचोरनो दीजीएजी ॥ जि-
 णहरमां एवात, कहे कुंवर केम कीजीएजी ॥
 ॥ २० ॥ नजरे करी हजूर, पहेला किजे पार-
 खुंजी ॥ पढे देईजे दंड, सहुए न होए सारखु
 जी ॥ २१ ॥ आणयो जिसे हजूर. धवलशेट
 तव जाणियोजी ॥ कहे कुंअर महाराय, चोरन
 लो तुमे आणियोजी ॥ २२ ॥ ए मुज पितास
 मान, हुं ए साथे आवियोजी ॥ कोटिध्वज स-
 रदार, वहाण घणां इहां लावियोजी ॥ २३ ॥
 छोडावी तस बंध, तेडी पासे बेसाडियोजी ॥ गु-
 न्हो करावी माफ, रायने पाय लगाडियोजी ॥
 ॥ २४ ॥ राय कहे अपराध, एहनो परमेसरे स
 ह्योजी ॥ अजरामर थयो एह, जेह तुमे बांहे

ग्रहोत्री ॥ २५ ॥ एकदिन आवी शेट, कुअर
 ने इम विनवेजी ॥ वेची वहाणनी वस्तु. पू
 रया किरियाणे नवेजी ॥ २६ ॥ तुमे अमने आ
 ठाम, कुशल खेमे जिम आणीयाजी ॥ तिम प
 होचाडो देश, तो सुख पामे प्राणियाजी ॥ २७ ॥
 कुंअरे जणाव्यो जाव, निज देशे जावातणोजी
 ॥ तव नृपने चित्तमाह, असंतोप उपन्यो घणो
 जी ॥ २८ ॥ माग्या नृपण जेह, ते ऊपर भम
 ता किसीजो ॥ परदेगीसुं प्रीत, दुःखदाइ जा
 णो इसीजी ॥ २९ ॥ सासु मुसरो दोय, कर
 जोडी आदर घणेजी ॥ आसु पडते धार, कुंअ
 रने इणीपरे नणेजी ॥ ३० ॥ मदनमंजुषा एह,
 अम उत्संगे ऊठरीजी ॥ जन्मथकी सुखमांहि,
 आज लगी लीला करीजी ॥ ३१ ॥ वाली जीवित प्रा
 य, तुम हाथे थापण ठवीजी ॥ एहने भदेशे ठे
 ह, जो पण परणो नव नवीजी ॥ ३२ ॥ पुत्रीने
 कहे वरम, क्षमा घणी मन आणजोजी ॥ सदा

न ॥ ३ ॥ धवल श्रेष्ठ ऊरे घणु, देखी कुंवरनी
 ऋद्ध ॥ एकलमो आव्यो हतो, है है देव शुं की
 ध ॥ ४ ॥ देखी न शके पार की, ऋद्धि हिये ज
 स खार ॥ सायर थाए दुबलो, गाजंते जलधार
 ॥ ५ ॥ धरसाले वनराय जे, सवि नवपल्लव था
 य ॥ जय जावासानुं वशुं, जे ऊनो सुकाय ॥
 ॥ ६ ॥ जेकरितार बडा कर्या, ते शूं केही रीश
 ॥ दांत पड्या गिरि पामतां, कुंजर पाडे चीश
 ॥ ७ ॥ वहाण अठिसें माहरां, लीधां शिरमां दे
 इ ॥ जोनुं घरे किम जायबे, ऋद्धि एवडी लेइ ॥
 ॥ ८ ॥ एक जीवबे एहने, नाखं जलधिमजार ॥ पगी
 रुयल ए माहरुं, रमणि ऋद्धि परिवार ॥ ९ ॥

ढाल पहेली ॥ शतिल तरुअर बांहिके बांह
 वालम्मनीरे ॥ एदेशी ॥ देखो कामिनी दोइके का
 मे व्यापिउरे, के कामे व्यापिउ ॥ वलि घणो ध
 ननो लोचके बाध्यो पापियोरे, के बाध्यो पापियो ॥
 लाग्या दोय पिशाचके पीमे अतिघणुंरे ॥ के पी

डे० ॥ धवलशेठनुं चितके वग नहि आपणुंरे ॥
 केश० ॥ १ ॥ उदक नजावे अन्नके नावेनिद्र
 डीरे ॥ केनावे० ॥ उल्लस वालस थायके जक न
 ही एक घडीरे ॥ केजक० ॥ मुख मूके निश्वास
 के दिन दिन दूबलोरे ॥ केदिन० ॥ रात दिव
 स नवि जायके मन बहु आंबलोरे ॥ के० ॥ २ ॥ नार
 मिल्या तस मित्रके पुढे प्रेममुंरे ॥ केपुढे० ॥ को
 ण थयो तुम रोगके जुगे इमशुरे ॥ केजुगे० ॥
 केचिंता उत्पन्नके कोडक आकरारे ॥ केकाड० ॥
 नाड थात धीरके मन कांठुं करीरे ॥ केमन० ॥
 ॥ ३ ॥ दुःख कहो अम तासके उपाय विचारीएरे
 ॥ रेउपा० ॥ चिंतासायर एहके पार उतारीएरे ॥
 केपार० ॥ लज्जा मुक्ती शेठ कहे मन चितव्युंरे
 ॥ कहे मन० ॥ तव चारे कहे मित्रके धिक्क ए
 शुं लव्यरे ॥ केधिक० ॥ ४ ॥ परनारीनेपाप
 नयोजव वसीएरे ॥ न० ॥ किम मुरतरुनी डा
 ल कुहाडे कुमीएरे ॥ कुहा० ॥ परउपगारी एह

तुमारी वातके विरुइ देखीएरे ॥ केविरुइ० ॥
 कुंअर सघली वात ते साची सर्दहेरे ॥ तेसाची० ॥
 दुरजननी गति नांति ते सऊन नवलहेरे ॥ तेस
 ऊन ० ॥ १३ ॥ जेह वहाणनी कोरके मांचाबांधियारे
 ॥ केमां० ॥ दोरतणे अवलंबके ऊपर सांधियारे ॥
 केऊर० ॥ तिहां बेसीने शेठते कुंअरने कहेरे ॥ तेकुं
 अरने० ॥ देखी अचरज एहके मुज मन ग
 हगहेरे ॥ के० ॥ १४ ॥ मगर एक मुख आ
 ठके दीसे जूजूआरे ॥ केदीसे० ॥ एवां रूप
 स्वरूप न होशके हुआरे ॥ न होशे० ॥ जोवा
 इहो साहेबके तोआवोवहीरे ॥ केतो० ॥ पढे
 काढशोवांकजे कांडकह्यंतहीरे ॥ जे कांड० ॥
 ॥ १५ ॥ कुंअर मांचे ताम चढयो उतावलारे
 ॥ चढयो० ॥ ऊनारियो तव शेठ धरी मन
 आंवलारे ॥ धरी० ॥ बेज मित्रे बेज पासके
 दोर ते कापियारे ॥ केदोर० ॥ करतां एहवां
 कर्म न बीहे पापियारे ॥ न० ॥ १६ ॥ पडतां

सायरमांहे ते नवपद चित्त धरेरे ॥ ते० ॥ सि
 द्वचक्र प्रत्यक्षके सवि संकट हरेरे ॥ केस० ॥ म
 गरमचनी पीठके बेठो थिर थईरे ॥ केबेठो० ॥
 वहाणनी परे तेहके पहोतो तट जईरे ॥ केप
 हो० ॥ १७ ॥ औपधिने महिमायके जलजय
 निस्तरेरे ॥ केजल० ॥ सिद्धचक्र परजावके सुर
 सानिध करेरे ॥ केसुर० ॥ त्रिजे खंमे ढाल ए प
 हेली मनधरोरे ॥ ए'पहेली० ॥ विनय केहे न
 विलोकके नवसायर तरोरे ॥ केनव० ॥ १८ ॥

देहरा ॥ कोंकण काठे ऊतरयो, पहोतो एक
 वनमांय ॥ थाकयो निद्रा अनुसरे, चंपकतरुवर
 बांय ॥ १ ॥ सदालगे जे जागतो, धर्ममित्र समरच ॥
 कुंअरनी रक्षाकरे, दूर करे अंतरच ॥ २ ॥ दा
 वानल जलधर हुए, सर्प हुए फुनमाल ॥ पुण्य
 वंत प्राणी लहे, पग पग ऋद्धिरसाल ॥ ३ ॥ करे
 कष्टमा पाडवा, दुर्जन क्रोरु उपाय ॥ पुण्यवंत
 ने ते सवे, सुखना कारण थाय ॥ ४ ॥ थल प्र

गटे जलनिधिविचे, नयर रानमां थांय ॥ विष
 अमृत थड परिणमे, पूरवपुण्य पसाय ॥ ५ ॥
 ढाल बीजी ॥ राग मधुसुदन ॥ जीरे म
 हारे वाणी अमीय रसाल, सुणतां मुज आशा
 फली जीरेजी ॥ एदेशी ॥ जीरे मारे जाग्यो कुंअ
 र जाम, तव देखे दोलत मिलि जीरेजी ॥ जीरे
 मारे सुन्नट जला सयबद्ध, करे विनती मन र
 ली जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ स्वामी अरज अम
 एक, अवधारो आदर करी जीरेजी ॥ जी० ॥ न
 यरी ठाणापुर नाम, वसे जिशी अलकापुरी जी
 रेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ तिहां राजा वसुपाल, राज
 करे नरराजियो जीरेजी ॥ जी० ॥ कोंकणदेश
 नरिंद, जस महिमा जग गाजियो जीरेजी ॥
 ॥ ३ ॥ जी० ॥ एक दिन सनामजार, निमित्तिउ
 एक आवियो जीरेजी ॥ जी० ॥ प्रश्न पुढवा हे
 त, रायतणे मन जावियो जीरेजी ॥ ४ ॥ जी० ॥
 कहो जोशी अम धूअ. मदनमंजरी गुणवती

जीरेजी ॥ जी० ॥ तेहतणो ज़रतार, कोण थ
 शे ज़लो ज़ूपति जीरेजी ॥ ५ ॥ जी० ॥ किम
 मिलणे अम तेह, शे अहिनाणेजाणशु जीरेजी
 ॥ जी० ॥ कोण दिवस कोण मास, घरे तेडीने
 आणशुं जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ सकल कहो ए
 वात, जो तुम विद्या ठे खरी जीरेजी ॥ जी० ॥
 शाखतणे परमाण, अम चिंता टालो परी जीरे
 जी ॥ ७ ॥ जी० ॥ जोशी कहे निमित्त शास्त्र
 तणे पूरण बले जीरेजी ॥ जी० ॥ पूर्वगत आ
 म्नाय, ध्रुवतणी परे नवि चले जीरेजी ॥ ८ ॥
 जी० ॥ शुद्धदशमी बड़शाख, अढी पहोर दिन
 अतिक्रमे जीरेजी ॥ जी० ॥ रयणायर उपकंठ,
 जड़ जोज्यो तिणे ममे जीरेजी ॥ ९ ॥ जी० ॥
 नवनंदन वनमांय, गयन कीध चंपातले जीरे
 जी ॥ जी० ॥ जोज्यो तस अहिनाण, तरुवर
 ठाया नविचले जीरेजी ॥ १० ॥ जी० ॥ राये
 नमानी वात, एम कहे एशुं केवालि जीरेजी ॥

जी ॥ जी० ॥ बीजी रात्रे जोइ, इणीपरे पगएया
 कामिनी जीरेजी ॥ २३ ॥ जी० ॥ नृपे दीधा
 आवास, त्पां सुखनर लीला करे जीरेजी ॥ जी०
 मयणरेहासुं नेह, दिन दिन अधिकेरी धरे जीरे
 जी ॥ २४ ॥ जी० ॥ नृपदीए बहु अधिकार, कुं
 अरन वांछे तेहने जीरेजी ॥ जी० ॥ थायो थर्गा
 धर आप, पाननणां बीमां दीए जीरेजी ॥ २५ ॥
 ॥ जी० ॥ जे कोइ अति गुणवंत, मग्न दिये नृ
 प जेहने जीरेजी ॥ जी० ॥ तेहने बीडां पान,
 देवरावे कुं अरकने जीरेजी ॥ २६ ॥ जी० ॥ त्री
 जे खंमे एह, बीजी ढाल सोहामणी ॥ जीरेजी ॥
 जी० ॥ सिद्धचक्र गुणश्रेणि, नवि सुणजो विन
 ये नणी जीरेजी ॥ २७ ॥

दोहरा ॥ वहाणमांहे जे हुई, हिवे सुणो ते बा
 त ॥ धवल नाम कालो हिये, हृष्यो साते धात
 ॥ १ ॥ मन चिंते मुज नाग्यथी, मोटी थई स
 भाध ॥ पलकमांहि विण औषधे, विरुई गई वि

राध ॥ २ ॥ ए धन-ए दोय सुंदरी, एह सहेली
 साथ ॥ परमेश्वर मुज पाधरो, दीधुं हाथो हाथ
 ॥ ३ ॥ कुडी माया केलवी, दोय रीजवुं नार ॥ हा
 थ लेइ मन एहनां, सफल करुं संसार ॥ ४ ॥
 दुःखिया थइये तस दुखे वयण सुकोमलरीत ॥
 अनुक्रमे वश कीजिए, न होय पराणे प्रीति ॥ ५ ॥
 धूर्त एम चितमां धरी, करे अनेक विलाप ॥ मुखे
 रुप हियडे इसे, पाप विगोवे आप ॥ ६ ॥

ढाल ब्रीजी ॥ रहो रहो रथ फेरवारे ॥ एदेशी ॥
 जीवजीवन प्रभु कयां गयारे, दियो दर्शन ए
 क वाररे ॥ सुगुणा साहेब तुम विनारे, अमने
 कोण आधाररे ॥ जीव० ॥ १ ॥ शीर कूटे पीटे
 हियरे, मूके मोटी पोकरे ॥ हालकलोल थयो घ
 णेरि, जेला हूआ लोकरे ॥ जी० ॥ २ ॥ कौतुक जो
 वाने चढ्यारं, माचे वहानणी कोररे ॥ है है दैव
 ए शुं थयुरे, तुज्या जुना दोररे ॥ जीव० ॥ ३ ॥
 जव बेऊ मयणा तणेरि, काने पडीते व तरे ॥ ध

सक पड्यो तव धनकोरे, जाणे वजनो घातरे
 ॥ जीव० ॥ ४ ॥ थड अचेत धरणी ठलीरे, कर
 ती कोड बिखासरे ॥ सहि सहेली सवि मिलीरे.
 नाखे जोड निशासरे ॥ जीव० ॥ ५ ॥ ठांट्यां चं
 दन कमकमारे. करघा वींऊणे वायरे ॥ चेत व
 ल्युं तव आरडेरे, हियडे दुःख न मायरे ॥ जीव०
 ॥ ६ ॥ कां ए प्राण पाठा वल्यारे, जो रुठयो किर
 ताररे ॥ पीहेरीआं अलगां रह्यारे, मूकी गयो
 जरताररे ॥ जीव० ॥ ७ ॥ माय बापने परहरीरे,
 कीधो जेहनो साथरे ॥ फट हियडा फाटे नहीरे,
 विठम्यो ते प्राणनाथरे ॥ जीव० ॥ ८ ॥ धवल
 शेठ त्यां अवियारे, कूडा करे विलापरे ॥ शुं की
 जे ए दैवनेरे, दीजे कशा शरापरे ॥ जीव० ॥
 ॥ ९ ॥ दुःख सह्यां माणस कह्यारे, नूख सह्या
 जिम ठोररे ॥ धीरज आप न मुकिएरे, करिए
 ऋदय कठोररे ॥ जीव० ॥ १० ॥ मणि माणिक्य
 मोती परेरे, जेहना गुण अनिरामरे ॥ जिहां जा

शे तिहां तेहनांरे, मुकुट हार शिर ठामरे ॥ जी
 व० ॥ ११ ॥ ठेंग वचन एहवा सुणीरे, मन चिं
 ते ते दोयरे ॥ एह कर्म इणे करयेंरे, अवर न
 वेरी कोयरे ॥ जीव० ॥ १२ ॥ धन रमणीनी ला
 लचेरे, कीधो स्वामि द्रोहरे ॥ मीठो थड आवी
 मिलेरे, खाम गलेफ्युं लेहरे ॥ जीव० ॥ १३ ॥
 शीयल हिवे किम राखशुरे, ए करशे उपघातरे
 ॥ करिए कंततणी परेरे, सायरे ऊपापातरे ॥ जी
 व० ॥ १४ ॥ सम काले बेहु जणीरे, मन धारी
 ए वातरे ॥ इणि अवसरे त्यां उपन्योरे, अति
 विपमो उत्पातरे ॥ जीव० ॥ १५ ॥ हालकलोळ
 साथर थयोरे, वाजे उन्नड वायरे ॥ घोर घनाघ
 न गाजियेरे, विजली चिहुदिशि थायरे ॥ जी
 व० ॥ १६ ॥ कुआ थंजा कडकडेरे, ऊडी जाए
 सढ दोररे ॥ हाथो हाथ सुजे नहरि, थयुं अंधा
 रुं घोररे ॥ जीव० ॥ १७ ॥ रुमरुम रुमरू डमक
 तेरे, मुखे मुके होकाररे ॥ खेत्रपाल तिहा आवि

यारे, हाथ लेइ तरवाररे ॥ जीव० ॥ १८ ॥ वीर
 बावन्ने परवरघारे. हाथे विविध हथियाररे ॥ ठ
 डीदार दोमे ठडारे, चार चतुर पडिहाररे ॥ जी
 व० ॥ १९ ॥ बेठी मृगपाति वाहनेरे. चक्र नमा
 डे हाथरे ॥ चक्रेसरी पधारियारे. देव देवी बहु
 साथरे ॥ जी० ॥ २० ॥ हणयो कुबुद्धि मित्रनेरे,
 जेणे वांकी मति दीधरे ॥ खेत्रपाले तवते ग्रहिरे,
 खंमोखंड तनु कीधरे ॥ जी० ॥ २१ ॥ ते देखी
 बीहन्थो घणोरे, मयणा शरणे पडठरे ॥ शेठ प
 शूपरे ध्रुजतोरे, देवी चक्रेसरी दीठरे ॥ जी० ॥
 ॥ २२ ॥ ज्यारे मुक्यो जीवतोरे, सतीशरण सुप
 सायरे ॥ अंते जाइश जीवथीरे, जो मन धरीश
 अन्यायरे ॥ जीव० ॥ २३ ॥ मयणाने चक्रेस
 रीरे. बोलावे धरी प्रेमरे ॥ वड कांड चिंता म क
 रोरे. तुम पियुनेळे खेमरे ॥ जी० ॥ २४ ॥ मा
 स एक माहे सहीरे, तुमने मिलशे तेहरे ॥ राज
 रमणी ऋद्धी जोगवेरे, नरपति सुसरा गेहरे ॥

॥ जीव० ॥ २५ ॥ बेऊने कंठे ठवेरे, फूल अ
 मुलक मालरे ॥ कहे देवी महिमा सुणारे, एह
 नो अतिहि रसालरे ॥ जीव० ॥ २६ ॥ शीयल
 यतन एहथी थशेरे, दिन प्रते सरस सुगंधरे ॥
 जेह कुमिटे जोयशेरे, ते नर थाशे अंधरे ॥ जी०
 ॥ २७ ॥ एम कही चक्रेसरीरे, उत्तपतियां आका
 शरे ॥ सयल देवसुं परवरघारे, पहोच्यां निज
 आवामरे ॥ जी० ॥ २८ ॥ तव उत्तपात सवे ठल्यारे,
 वहाण चाल्यां जायरे ॥ चिंता जांगी सर्वनीरे,
 वायां वाय सुवायरे ॥ जी० ॥ २९ ॥ मित्र त्र
 ण कहे शेठनेरे, दीठी परतरुय वातरे ॥ चोथो
 मित्र अधर्मथीरे, पाम्यो वेगे घानरे ॥ जी० ॥
 ॥ ३० ॥ तेमाटे ए चित्तयीरे, काढी मूको सालरे
 ॥ परलखमी परनारने. हिबे मत पडशो रूया
 लरे ॥ जी० ॥ ३१ ॥ पण दुर्वुद्धि शेठनुरें, चि
 त्त न आव्युं ठायरे ॥ जई कपुरे वासीएरे, ल
 सण दुर्गंध न जायरे ॥ जीव० ॥ ३२ ॥ हियडा

करने वधामणारे, अंशन दुःख धरीशरे ॥ जो
 धंच्योतु जीवतारे, तो सावि काज करीशरे ॥ जी
 व० ॥ ३३ ॥ जो मुज जाग्यो एवढारे, विघ्न
 थयुं विसरालरे ॥ तो मिलशे ए सुदरीरे,
 समशे विरहनी जालरे ॥ जीव० ॥ ३४ ॥
 एम चिंती दुतिमुखरे, कहेवरावे तुम दा
 सरे ॥ नेक नजर करी निरखीएरे, मानो मुज
 अरदासरे ॥ जीव० ॥ ३५ ॥ दूतिने काढी प
 रीरे, देइ गलढो कंठरे ॥ तोय निर्लज्ज लाज्यो न
 हीरे, बली थयो उल्लंठरे ॥ जीव० ॥ ३६ ॥
 वेश करी नारीतणारे, आव्यो मयणा पासरे ॥
 दृष्टि गइ थयो आंधलोरे, काढ्यो करी उपहा
 सरे ॥ जी० ॥ ३७ ॥ ऊतरीए उत्तरतटेरे, वहा
 ण चलावो वेगरे ॥ पण सन्मुख होए वायरोरे,
 शेठ करे उद्वेगरे ॥ जी० ॥ ३८ ॥ अवर देश
 जावातणारे, कीदा कोड उपायेरे ॥ पण वहाण
 कौकण तटेरे, आणी मुक्यां वायरे ॥ जीव० ॥

॥ ३९ ॥ त्राजे खडे एम कहारे, विनये त्रीजी
 ढालरे ॥ सिद्धचक्र गुण बोलनारे, लहिए सुख
 रसालरे ॥ जीव० ॥ ४० ॥

दोहरा ॥ कोंकण काठे नांगरयां, सवि वहा
 ए तिणवार ॥ नृपने मिलवा उतरयो, शेठ लेइ
 परिवार ॥ १ ॥ आव्यो नरपति पाउले, मिल
 णां करे रसाल ॥ बेठो पासे रायने, तव दीठो
 श्रीपाल ॥ २ ॥ देखी कुंजर दीपतो, हिये उप
 नी हुंक ॥ लोचन मीचाई गया, रविदेखी जिम
 घुफ ॥ ३ ॥ नृप हाथे श्रीपालने, देवरावे तबो
 ल ॥ शेठ नलिपरे नुलखी, चित्त थयुं डमडोल
 ॥ ४ ॥ है है देव अटारडा, एह कशो उतपात ॥
 ॥ नाखी हति खारे जले, प्रगट थई ते वात ॥
 ॥ ५ ॥ सजा विसरजी राय जब, पहोच्यो म्हे
 लमऊर ॥ तव शेठे पडिहारने, पूढ्यो एह वि
 चार ॥ ६ ॥ एह थगीघर कोणबे, नवलो दी
 से कोय ॥ तेह कहे गति एहनी, मणता

रज होय ॥ ७ ॥ वनमां सुतो जागवी. घर आ
 एयो जलिजात ॥ परणावी निज कुंअरी, न पु
 षि जांत ने जात ॥ ८ ॥ शैठ सुणी रीऊयो
 घणुं, चितमां करे विचार ॥ एने कष्टे पाड्या,
 जलुं देखाड्युं बार ॥ ९ ॥ देइ कलंक कुजाति
 नुं, पाडुं एहनी लाज ॥ राजा हणशे एहने, स
 हेजे सरशे काज ॥ १० ॥ जोपण जेजे में करघां,
 एने दुखनां हेत ॥ ते ते सवि निष्फळ थयां, मु
 ज अजिलाप समेत ॥ ११ ॥ तोपण वाज न
 आविये, मन करीये अनुकुल ॥ उद्यमथी सवि
 संपजे. उद्यम सुखनुं मुल ॥ १२ ॥ वेरीने बाध्यो
 घणो, ए मुज खणशे कंद ॥ प्रथमज हणवा
 एहने, करवो कोइक फंद ॥ १३ ॥ इम चिंतव
 तो ते गया, उतारे आवास ॥ पलक एक तस
 जक नहीं, मुख मूके नीसास ॥ १४ ॥

ढाल चौथी ॥ आषाढजूति अणगारनेरे ॥ एदे
 शी ॥ इणे अवसर तिहां डुंबनुरे, आव्युं टो

लुं एकरे, चतुर नर ॥ उन्ना उलगडी करे हो
 लाल ॥ तेडी महतर डुंबनेरे, शेठ कहे अविवे
 करे, चतुरनर ॥ काँज अमारू एक करो होला
 ल ॥ १ ॥ एह जमाइ रायनो, तेहने कहो तुमे
 डुंबरे ॥ च० ॥ लाख सोवन तुमने आपशुं होला
 ल ॥ धाइन वलंगो गलेरे, सघलुं मिली कुटुंबरे
 ॥ च० ॥ पाड घणो अमे मानशुं होलाल ॥ २ ॥
 डुंब कहे स्वामी सुणोरे, करशुं ए तुम कामरे ॥
 च० ॥ मुजरो हमारो मानजो होलाल ॥ केलवशुं
 कुमी कलारे, लेशुं परठया दामरे ॥ च० ॥ सावा
 सी देजो पठे होलाल ॥ ३ ॥ डुंब मिली सविते
 गयारे, रायतणे दरबाररे ॥ च० ॥ गाय उन्ना
 घूमता होलाल ॥ राग आलापे टेकसुरे, रीजयो
 राय अपाररे ॥ च० ॥ मागो काँइ मुखे एम कहे
 होलाल ॥ ४ ॥ डुंब कहे अम दीजीएरे, महोत
 वधारी दानरे ॥ च० ॥ महोत अमे बांठुं घणो
 होलाल ॥ तव नूरपति कुंअर ॥

तस पानरे ॥ च० ॥ तेहनं महोत वधारवा हो
 लाल ॥ ५ ॥ पान देवा जव आवियारे, कुंअर
 तेहनी पासरे ॥ च० ॥ हस्त वदन जोतो हसी
 होलाल ॥ वडो डुंव वलग्यो गलेरे, आणी मन
 उल्लासरे ॥ च० ॥ पुत्र आज नेटयो नले होला
 ल ॥ ६ ॥ एहवे आवी डुंवडीरे, रोइ वलगी कं
 ठरे ॥ च० ॥ अंगो अंगे नेटती होलाल ॥ बेन
 थइने एक मिलीरे, आणी मन उत्कंठरे ॥ च० ॥
 वीरा जाजं तुज नामणे होलाल ॥ ७ ॥ एक
 कहे मुज माउलोरे, एक कहे चाणेजरे ॥ च० ॥
 एवना दिन तुमे क्यां रह्या होलाल ॥ एक का
 की एक फुइ थइरे, देखाडे घणुं हेजरे ॥ च० ॥
 वाट जोतां हतां ताहरी होलाल ॥ ८ ॥ डुंव कहे
 नररायनेरे, ए अम कुल आधाररे ॥ च० ॥ री
 सावी चाल्यो हतो होलाल ॥ तुम पसाय नेलो
 थयोरे, सवि माहरो परिवाररे ॥ च० ॥ जांग्यां
 दुःख विगोहनां होलाल ॥ ९ ॥ राजा मन चिंते इ

सुंरे, मुणी तेहनी वाचरे ॥ च० ॥ वात घणी वि
 रुद्ध थड होलाल ॥ एह कुटुंब सवि एहनुरे, दीसे
 परतरुय साचरे ॥ च० ॥ धिग मुज वंश वि
 टालीयो होलाल ॥ १० ॥ निमित्तिन तेडाविथोरे,
 भैं तुज वचन विश्वासरे ॥ च० ॥ पुत्री दीधी एह
 ने होलाल ॥ किम मातग कह्यो नहीरे. ते दी
 धो गल पाशरे ॥ च० ॥ निमित्तियो वलतुं कहे
 होलाल ॥ ११ ॥ मुज निमित्त जुठुं नहीरे. सु
 एजो साची वानरे ॥ च० ॥ ए बहु मातंगनो
 घणी होलाल ॥ राय अरथ समजे नहीरे, को
 प्यो चिंते घातरे ॥ च० ॥ कुंअर निमित्तिया ऊप
 रे होलाल ॥ १२ ॥ ते बेउने मारवागे, राये की
 धो विचाररे ॥ च० ॥ सुजट घणा त्यां सज कि
 या होलाल ॥ मदनमंजरी ते मुणीरे. आवी त्यां
 तिणी वाररे ॥ च० ॥ रायने इणीपरे विनवे हो
 लाल ॥ १३ ॥ काज विचारी कीजीएरे, जिम
 नवि होय उपहासरे ॥ च० ॥ जगमा जश ल

हीए घणो होलाल ॥ आचारे कुल जाणीएरे,
 जोइए हिए विमासरे ॥ च० ॥ दुबलकना थइ
 ए नहि होलाल ॥ १४ ॥ कुंअरने नरपति कहे
 रे, प्रगट करो निज वंशरे ॥ च० ॥ जेम सांसो
 दुरे टले होलाल ॥ कहे कुंअर किम उच्चरेरे, उ
 त्तम निज प्रशंसरे ॥ च० ॥ कामे कुक उलखा
 वशुं होलाल ॥ १५ ॥ सैन्य तुमारुं सज्ज करोरे,
 मुज कर दो तरवाररे ॥ च० ॥ तव मुज कुल
 परगट होशे होलाल ॥ माथुं मुंझाव्या पठारे,
 पूठे नक्षत्र वाररे ॥ च० ॥ ए उखाणो साचव्यो
 होलाल ॥ १६ ॥ अथवा प्रवहणमांहे ठेरे, दोय
 परणी मुज नाररे ॥ च० ॥ तेडी पूठे तेहने हो
 लाल ॥ ते कहेशे सवि माहरोरे. मूलथकी अ
 धिकाररे ॥ च० ॥ इणीपरे कीजे पारखुं होलाल
 ॥ १७ ॥ तेहने तेडवा मोकल्योरे. राये निजप्र
 धानरे ॥ च० ॥ तेह जईने त्यां विनवे होलाल ॥
 तव मयणा मन हरपीयारे, पामी आदरमानरे

॥ च० ॥ सहीकंते तेडावीयां होलाल ॥ १८ ॥ वेसी
 रयण सुखासेनेरे, आव्यां राय हंजररे ॥ च० ॥
 नूपति मन हर्षित थयो होलाल ॥ नयणेनाह नि
 हालतारे, प्रगट्यो प्रेम अकुररे ॥ च० ॥ साचे
 जुठ नसाडियुं होलाल ॥ १९ ॥ विद्याधरपुत्री क
 हरे, सघलो तस विरततरे ॥ च० ॥ विद्याधर
 मुनिवर कह्यो होलाल ॥ पापी शेठे नाखियोरे,
 सायरमां अम कंतरे ॥ च० ॥ वखते आज अ
 मे लह्यो होलाल ॥ २० ॥ ते सुणतां जव उल
 ख्योरे, तव हर्ष्यो मन रायरे ॥ च० ॥ पुत्र
 सगी नगनीतणो होलाल ॥ अविचारयुं कीधुं
 हतुंरे, पण आव्युं सवि ठायरे ॥ च० ॥ जोज
 नमाहे घी ढल्युं होलाल ॥ २१ ॥ नरपति पूठे
 डबनेरे, कहो ए कशो विचाररे ॥ च० ॥ तव ते
 बोले कंपता होलाल ॥ शेठे अमने विगोईयारे,
 लोने थया खुवाररे ॥ च० ॥ कुडू कपट अमे
 केलव्युं होलाल ॥ २२ ॥ तव राजा रीशे च

द्योरे, बांधी अणाव्यो शेठरे ॥ च० ॥ डुंब सहि
 त हणवा धस्यो होलाल ॥ तय कुंअर अडो
 वलीरे, गोमाव्यो ते शेठरे ॥ च० ॥ उत्तम नर
 इम जाणीए होलाल ॥ २३ ॥ निमित्तिउ तव
 बोलीउरे, साचुं मुज निमित्तरे ॥ च० ॥ ए बहु
 मातंगनो धणी होलाल ॥ मातंग कहिय हाथी
 यारे, तेहनो प्रचु वड वित्तरे ॥ च० ॥ ए राजेस
 र राजीउ होलाल ॥ २४ ॥ निमित्तियाने नृप
 दाएरे, दान अने बहु मानरे ॥ च० ॥ विद्यानि
 धि जगमां वमो होलाल ॥ कुंअर निज घरे आ
 वियारे, करता नवपद ध्यानरे ॥ च० ॥ मयणा
 त्रणे एकठीमिली होलाल ॥ २५ ॥ कुंअर पूरव
 नी परेरे. पाले मननी प्रीतरे ॥ च० ॥ पासे रा
 खे शेठने होलाल ॥ ते मनथी ठंडे नहीरे, दुर्ज
 ननी कुल रीतरे ॥ च० ॥ जे जेहवो ते तेहवो
 होलाल ॥ २६ ॥ बेड हाथ जोये पड्यारे, का
 ज न एके सिद्धरे ॥ च० ॥ शेठ एवुं मन चिंतवे

होलाल ॥ पीन शकुं तो ढोली शकुंरे, एहवो.
 निश्चय कीधरे ॥ च० ॥ एहने निज हाथे हणु
 होलाल ॥ २७ ॥ कुंअर पोढयोवे जिहारे, सात
 मी जुंइए आपरे ॥ च० ॥ लेइ कटारी त्यां
 चढयो होलाल ॥ पग लपटयो हेठो पड्योरे,
 आवी पहोच्युं पापरे ॥ च० ॥ मरी नरके ग
 यो सातमी होलाल ॥ २८ ॥ लोक प्रजाते
 त्यांमिल्यारे, बोले धिग धिग वाणरे ॥ च० ॥
 स्वामिद्रोही ए थयो होलाल ॥ जेह कुंअरने
 चिंतव्युरे, आप लह्युं निरवाणरे ॥ च० ॥ उग्र
 पाप तुरतज फल्युं होलाल ॥ २९ ॥ मृतकारज
 तेहना करेरे, कुंअर मन धरे शोकरे ॥ च० ॥
 गुण तेहना संभारतो होलाल ॥ सोवन घणुं
 तपावियेरे, अगनीतणे संयोगरे ॥ च० ॥ तो
 हे रंग न पालटे होलाल ॥ ३० ॥ माल पांचसे
 बहाणनोरे, सवी संजाती लीधरे ॥ च० ॥ ल
 नहीं ॥ से

टनारे, ते अधिकारी कीधरे ॥ च० ॥ गुणनिधि
 उत्तम पद लहे होलाल ॥ ३१ ॥ इंद्रतणां सु
 ख भोगवेरे, ते कुंअर श्रीपालरे ॥ च० ॥ मय
 णा त्रणे परिवरयो होलाल ॥ त्रीजे खंडे एम
 कहीरे, विनये चौथी ढालरे ॥ च० ॥ सिद्धचक्र
 महिमा फले होलाल ॥ ३२ ॥

दोहरा ॥ एक दिन रयवाडी चढयो, रमवा
 ने श्रीपाल ॥ साथ बहु त्यां ऊतरयो, दीठो ऋ
 द्वि विशाल ॥ १ ॥ सार्थवाह लइ नटेणो, आ
 व्यो कुंअर पाय ॥ तव तेहने पूढे इस्युं, कुंअर क
 री सुपसाय ॥ २ ॥ कवण देशथी आविया, क्यां
 जावा तुम जाव ॥ सार्थवाह तव वीनवे, करजो
 डी सदजाव ॥ ३ ॥ आव्या कांतीनयरथी, कंबु
 द्वीव उदेश ॥ कुंअर कहे कोइक कहो, अचर
 ज दीठ विशेष ॥ ४ ॥ तेह कहे अचरज सुणो.
 नयर एक अनिराम ॥ कोश इहांथी चारसे, कुं
 डलपूर तस नास ॥ ५ ॥ मकरकेतु राजा तिहां,

कपूरतिलकाकंत ॥ दोय पुत्र उपराहुई, सुता
 तास गुणवंत ॥ ६ ॥ नामे ते गुणसुदरी, रूपे
 रंज समान ॥ जगमां जस जयमा नहीं, चोस
 ठ कला निधान ॥ ७ ॥ राग रागणी रूप स्वर
 ताल तंत वितान ॥ वीणा तम ब्रम्हा सुणे, थि
 र करि आठे कान ॥ ८ ॥ शास्त्र सुजापित का
 ठ्य रस, वीणानाद विनोद ॥ चतुर मिले जो
 चतुरने, तो ऊपजे प्रमोद ॥ ९ ॥ डेहेरो गाय त
 णे गले, खटके जेम कुकट ॥ मूरख सरशी गो
 ठडी, पग पग हियडे हठ ॥ १० ॥ जो रूस्यो
 गुणवंतने, तो देजे दुखपोठ ॥ देव न देजे एक
 तु, माथ गमारां गोठ ॥ ११ ॥ रसियासुं वासो
 नहीं, ते रसिया इक ताल ॥ कुगिने जाखर हु
 ए, जिम विठडी तरु माल ॥ १२ ॥ युक्ति जुक्ति
 समजे नहीं, सुके नहीं जस चोज ॥ इत उत
 जोइ जगली, जाणे आव्युं रोज ॥ १३ ॥ रोज
 तणुं मन रीजवी, नशके कोइ सुजाण ॥ नदीमा

(११२)

य निशदिन वमे, पलले नहीं पाषाण ॥ १४ ॥
मर्मन जाणे मांहिनो, चित्त जहीं इकठोर ॥ ज्यां
त्यां माथूं घालतो, फिरे हरायुं ढोर ॥ १५ ॥ व
ली चतुरसुं बोलिए, चिते कदा इकवार ॥ ते स
हेली संसारमां, अवर अकज अवतार ॥ १६ ॥
रसियाने रसिया मिले, केलवतां गुण गोठ ॥
हिये नमाये रीऊ रस, केणी नावे होठ ॥ १७ ॥
परख्या पाखे परणतां, जुंठ मिले जरतार ॥ जा
य जमारो जुरतां, किशुं करे किरतार ॥ १८ ॥
ते कारण ते कुंअरी, करी प्रतिज्ञा सार ॥ वीणा
वादे जीतशे. जे मुज ते जरतार ॥ १९ ॥
ढाल पांचमी ॥ थारा मेढला उपर मेढ, ऊरूं
खे वीजली होलाल ॥ ऊरूंखे बीजली ॥ एदेशी ॥ ते
ह प्रतिज्ञा वात. नयरमां घर घरेहोलाल ॥ न
यरमां ० ॥ पमरी लोक अनेक, बनावे परपरे हो
लाल ॥ ब० ॥ राजकुमार असंख ते, शीखण स
ऊ थया होलाल ॥ ते ० ॥ लेइ वीणा साज, ते

गुरुपासे गया होलाल ॥ ते० ॥ १ ॥ त्रण ग्रा
 म सुर सात.के एकावीश मूर्खना होलाल ॥ के०
 ॥ तान उगणपञ्चास, घर्णी विधि धोलना हो
 लाल ॥ घ० ॥ विद्याचार्य एक, सधावे शीखवे
 होलाल ॥ स० ॥ करे अज्यास जवान, ते ऊ
 जम नव नवे होलाल ॥ ते० ॥ २ ॥ शास्त्रसं
 गीत विचक्षण, देश-विदेशना होलाल के ॥
 ॥ दे० ॥ करे सनामाहि वाद, ते नाह विशेषना
 होलाल ॥ ते० ॥ मास मास प्रते होय. तिहां ग
 ण पारिखा होलाल ॥ ति० ॥ सुणतां कुंवरी वी
 ण, सवे पशु सारीखा होलाल ॥ स० ॥ चौटामां
 हे वीण, वजावे वाणिया होलाल ॥ व० ॥ नकरे
 कोइ व्यापार, ते होंसी प्राणिया होंलाल ॥ ते० ॥
 इणीपरे वरण अढार, घरोघर आंगणे होलाल
 ॥ घ० ॥ सघले मेढी मेढेल, ते वीणा रणऊणे
 होलाल ॥ ते० ॥ ४ ॥ गायो. चारे गोवाल, ते वाण
 बजावता होलाल ॥ ते० ॥ राजकुंवरी विहाह, म

नोरथ जावता होलाल ॥ म० ॥ सूनां मूकी खे
 त्र. मिले बहु करपणी होलाल ॥ मिले० ॥ शी
 खे वीण वजावण, हौस हिये घणी होलाल ॥
 हौ० ॥ ५ ॥ तेह नगरमां एहवुं. कौतुक थई र
 ह्युं होलाल के ॥ कौ० ॥ दिठे बने ते वात, न
 जाये पण कह्युं होलाल ॥ न० ॥ सुणी कुंअर
 ते वात, हिये रीऊयो घणुं होलाल ॥ हि० ॥ सा
 र्थवाहने सार, दीए वधामणुं होलाल ॥ दीए० ॥
 ॥६॥ आव्यो निजआवास, कुंअर मन चिंतवी
 होलाल ॥ कुं० ॥ नयर रह्युं ते दुर, तो किम जा
 शुं हिवे होलाल ॥ तो० ॥ देत विधाता पांख
 तो माणस रूअडा होलाल ॥ तो० ॥ फिरि
 फिरि कौतुक जोत, जूए जेम सूअडा होलाल ॥
 ॥जू० ॥ ७ ॥ सिद्धचक्र मुज एह, मनोरथ पूरशे
 होलाल ॥ मनो० ॥ एहज मुज आधार, विघन
 सवि चूरशे होलाल ॥ वि० ॥ थिरकरी मन वच
 काय, रह्यो एक ध्यानसुं होलाल ॥ रह्यो० ॥ त

नमय तत्पर चित्त. थयो एक ग्यानसुं होलाल ॥
 थ० ॥ ८ ॥ तत्क्षण सोहमवासी. सुरवर आवियो
 होलाल ॥ सु० ॥ विमलेसर मणिहार, मनोहर
 लावियो होलाल ॥ म० ॥ थइ घणो मुप्रसन्न, कुं
 अर कंठे ठवे होलाल ॥ कुं० ॥ तेह तणो करजो
 डी, महिमा वरणवे होलाल ॥ म० ॥ ९ ॥ जेह
 वुं वंछे रूप, ते थाये तत्क्षणे होलाल ॥ ते० ॥
 तत्क्षण वंछितठाम, जाए गयणांगणे होलाल ॥
 जा० ॥ आवे विण अज्यास. कला जे चित्तधरे
 होलाल ॥ क० ॥ विपना विपम विकार, ते सघ
 ला संहरे होलाल ॥ ते० ॥ १० ॥ सिद्धचक्रनो
 शेवक, हुंहुं देवता होलालके ॥ हुं० ॥ कैक उधा
 रिया धीर में, एहने सेवता होलाल ॥ में० ॥ सि
 द्धचक्रनी जक्ति, घणी मन धारजो होलाल ॥
 घ० ॥ मुजने कोईक काम. पडे संनारजो होला
 ल ॥ प० ॥ ११ ॥ एम कहीने ते सुरवर निज
 नानक गयो होलालके ॥ नि० ॥ कुं अर पोढयो से

होलाल ॥ क० ॥ खड्ग अमूलिक एक, करघुं तस
 जेटणुं होलाल ॥ क० ॥ तव हरष्या गुरु महत्व,
 दिए तस अति घणुं होलाल ॥ दि० ॥ १९ ॥
 वीणा एक अणोपम, दीधी तस केर होलालके ॥
 दी० ॥ देखाडे स्वर नाद, ठेकाणां हादरे होला
 ल ॥ ठे० ॥ त्रट् त्रट् तूटे तांत, गमां जाये खसी
 होलाल ॥ ग० ॥ ते देखी विपरीत, सजा सघ
 ली हसी होलाल ॥ स० ॥ २० ॥ हिवे परीक्षा हे
 त, सजा मोटी मिली होलाल ॥ स० ॥ चतुर सं
 गीत विचक्षण, बेठा मन रली होलालके ॥ बे० ॥
 आवी राज कुमारि, कला गुण वरसती होला
 ल ॥ क० ॥ वीणा पुस्तक हाथ, जे परतक सर
 स्वती होलाल ॥ जे० ॥ २१ ॥ दरवाने दरबारे.
 कुब्ज जव रोकियो होलाल ॥ कु० ॥ दीधुं नूपण
 रत्न, पगी नवि टोकियो होलाल ॥ प० ॥ आ
 व्यो कुंवरी पास, इच्छारूपी वडो होलाल ॥ इ० ॥
 कुवरी देखे रूप, बीजा सवि कुवडो होलाल ॥

बी० ॥ २२ ॥ सार्चीते मुज एह, प्रतिज्ञा पुरशे
 होलाल ॥ प्र० ॥ सफल जनमतो मानशुं, दुरिज
 न जुरशे होलालके ॥ दु० ॥ जो एहथी नवि नां
 जशे, मननु आतरुं होलालके ॥ म० ॥ करी प्रति
 ज्ञा वयर, वसाव्युं तो खरुं होलाल ॥ व० ॥ २३ ॥
 दाखे गुरु आदेशे, निज विणा कला होलालके ॥
 नि० ॥ जाम कुमार कुमार, सजा मद आकला
 होलाल ॥ स० ॥ ताम कुमारी देखावे, निजगुण
 चातुरी होलालके ॥ नि० ॥ लोके जाण्यो अंतर
 ग्रामने सुरपुरी होलाल ॥ ग्रा० ॥ २४ ॥ कुंमरी कला
 आगे हुइ, कुंअरतणी कला होलाल ॥ कुं० ॥ चंद्र क
 ला रवि आगे ते, वाशने बाकला होलाल ॥ ते० ॥
 लोक प्रशंसा सांजली, वामन आवियो होलालके
 ॥ वा० ॥ कहे कुंडलपुरवासी, जलो मन जावि
 यो होलाल ॥ ज० ॥ २५ ॥ कुवरी संकी तेण, वि
 णा दिए तस करे होलाल ॥ बी० ॥ कहे कुमार
 अशुद्धवे, एवीणा धुरे होलालके ॥ ए० ॥ वीणा

सगर्जने दंड, दाध्योठे गले ग्रह्यं होलाल ॥ दा० ॥
 तुंबड तेणे अशुद्ध, पणु में तस कह्युं होलाल ॥
 प० ॥ २६ ॥ दाखी दोप समारी, वीणा ते आलवे
 होलाल ॥ वी० ॥ होइ ग्रामनी मुठना, किमपि
 नकोचवे होलाल ॥ कि० ॥ सुता लोकनां लई
 मुकुट, मुद्रा मणी होलाल ॥ मु० ॥ वस्त्राचरण ले
 इ करी, राशिते अतिधणी होलाल ॥ रा० ॥
 ॥ २७ ॥ जाग्या लोक अठेरुं, देखी एहवुं हो
 लालके ॥ दे० ॥ पुर्ण प्रतिज्ञा कुमारी, चित्त हर
 पित हुवुं होलाल ॥ चि० ॥ त्रिजुवनसार कुमार,
 गले वर मालिका होलाल ॥ ग० ॥ हिवे ठवे नि
 ज माने, धन्य ते बालिका होलाल ॥ ध० ॥
 ॥ २८ ॥ वामन वरियो जाणी, नृपादिक दुःख ध
 रे होलाल ॥ नृ० ॥ ताम कुमार स्वप्नावनुं, रूप
 ते आदरे होलालके ॥ रू० ॥ शशिरजनी हर
 गोरी, हरि कमला जिस्यो होलाल ॥ ह० ॥ योग्य
 मेलावो जाणी, सवे चित्त उल्लस्यो होलाल ॥

स० ॥ २९ ॥ निज बेटी पाणावी, राजाये बलीप
 रे होलाल ॥ रा० ॥ दिए हय गय धण कंचन,
 पुरे तस करे होलाल ॥ पु० ॥ पुण्य विशाल जु
 जाल, तिहा लीला करे होलाल ॥ - ति० - ॥
 गुणमुंदरीने साथ, श्रीपालते सुख वरे होलाल ॥
 ॥ श्री० ॥ ३० ॥ त्रीजे खमेढाल, रसाल ते पां
 चमी होलाल ॥ र० ॥ पुरी ए अनकूल, सजन
 मन सक्रमी होलाल ॥ स० ॥ सिद्धचक्र गुण-
 गातां, चित्तन कुणतणो होलाल ॥ चि० ॥ हरपेवर
 से अमिय, ते विनय सुजस-धणो होलाल ॥ ३१ ॥
 दोहरा ॥ पुण्यवत जिहा पगधरे, तिहा आ
 वे सवि ऋद्धि ॥ तिहां अजोद्धा राम - जिहां,
 जिहा-साहस तिहा सिद्धि ॥ १ ॥ - पुण्यवंतने ल-
 छिनो, इच्छातणो विलंब ॥ कोकिल चाहे कंठ-र-
 व, दिये लुंव जरि, अंब ॥ २ ॥ पुण्ये परणति
 होय नलि, पुण्ये मगुण गरिठ ॥ पुण्ये अ-
 लिय विघन टले, पुण्ये मिलेज इठ ॥ ३ ॥

ढाल बठी॥ सुण सुगुण सनेहीरे साहेबा एदेशी
 ॥ एकादिन एक परदेशीउ, कहे कुअरने अह-
 नुत ठामरे ॥ सुण जोयण त्रणें उपरें, ते न
 यर कंचनपूर नामरे ॥ जूठ जूठ अचरज अ-
 तिजलूं ॥ एआंकणी ॥ त्यां वज्रसेनठे राजी-
 ठ, अरिकाल सबल करवाळरे ॥ तस कंचनमा-
 लाठे कामनी, मालति माल सकुमालरे ॥ जू० ॥
 ॥ २ ॥ तेहने सुत चारने ऊपरें, ते त्रैलोक्य
 सुंदरी नामरे ॥ पुत्रीठे वेदने ऊपरें, उपनिषत्
 यथा अनिरामरे ॥ जू० ॥ ३ ॥ रंजादिक जे
 रमणी करी, ते तो एह घमवा करलेखरे ॥ वि-
 धाने रचना बीजतिणी, एहनो जय जश उल्ले-
 खरे ॥ ४ ॥ रोमाग्रनिरखे तेहने, ब्रम्हाद्वय अनु-
 जव होयरे ॥ स्मर द्वय पुरण दर्शने, तेहने तु-
 ल्य नहीं कोयरे ॥ जू० ॥ ५ ॥ नृपे तस वर स
 रिखो देखवा, मंडप स्वयंवर कीधरे ॥ मूल मं-
 डप थंजे पुतली, मणी कंचनमय सुप्रसिद्धरे ॥

॥ जू० ॥ ६ ॥ चिहुं पास विमाणावली स-
मी, मंचाति मंचनी श्रेणिरे ॥ गौरव कारण कण-
राशिजे, जीपीजे गिरिवर तेणीरे ॥ जू० ॥
॥ ७ ॥ तिहां प्रथम पद्ध आपाढनी, बीजेठे व-
रण मुहुर्तरे ॥ शुभ बीज ते कालठे, पु-
ण्यवंतने हेतु आयतरे ॥ जू० ॥ ८ ॥ इम नि-
सुणी सोवन सांकलु, कुंअरे तस दीधु तावरे ॥
घरे जइ कुंजाकृति धरी, तिहा पहोतो हारप्र-
जावरे ॥ जू० ॥ ९ ॥ मंरुपे पेसतां वारीउ, पो-
लीयाने नुपण देइरे ॥ तिहा पहोतो मणिमय
पुतली, पासे वेठो सुखसेइरे ॥ जू० ॥ १० ॥ ख-
रदंतो नाकते नानडु, होठ लांवा उची पीठरे ॥
आख पीली केश ते कावरा, रह्यो उजो मांमव
हेठरे ॥ जू० ॥ ११ ॥ नृप पूठे केड सचागिया, व-
ली वागीया जागीया तेजर ॥ कही कृण कार-
णे तुमे आविया, कहे जेण कारणे तुम हेजरे ॥
जू० ॥ १२ ॥ तवते नृपाति खरु हमे, जूव

जूठ ए रूपनिधानरे ॥ एहने जे वरसे सुंदरी,
 तेहनां काज सरधां यल्यां वानरे ॥ जू० ॥ १३ ॥
 इणि अवसरे नरपति कुअरी, वर अंबर शिवि
 कारूढरे ॥ जाणिए चमकति वीजली, गिरिउप-
 रे जलधर गुढरे ॥ जू० ॥ १४ ॥ मुक्ताफल हारे
 सौहती, वरमाला करमां लेइरे ॥ मुलमंरुपे आ
 वी कुंअरने, सहसा शुचिरूप पलौइरे ॥ १५ ॥
 जे सहेज स्वरूप विजावमां, देखे ते अनुभव यो
 गरे ॥ इणे व्यतिकरे ते हर्षित हुइ, कहे हुन मु
 ज इष्ट संयोगरे ॥ जू० ॥ १६ ॥ तस द्रष्टिसरा
 ग विलोकतां, विचे विचे निज वामनरूपरे ॥
 दाखे ते कुंअर सुवल्लही, परिपरिखे करी
 चुपरे ॥ जू० ॥ १७ ॥ साची ते नट नांगरत-
 णी, बाजी वाजी छुन जेमरे ॥ मन राजी हाजी
 शुं करे, आ जीवित एहसुं प्रेमरे ॥ १८ ॥ हिवे
 वरणवे जे जे नृप प्रते, प्रतिहारी करी गुण पो
 षरे ॥ ते ते हिले कुअरी दाखवी, वय रूपने जे

शना दोपरे ॥ जू० ॥ १९ ॥ वरणवतां जसं मु-
 ख उजलु, हेलंता तेहनुं इयामरे ॥ प्रतिहारीथां
 की कुंअरने, सा निखे रति अजिरामरे ॥ जू०
 ॥ २० ॥ वे मधुर चथोचित शेलमी, दाधि मधु
 साकर द्राखरे ॥ पण जेहनुं मन जिहा वेधियु,
 ते मधुरने बीजा लाखरे ॥ जू० ॥ २१ ॥ इणे अ
 वसरे थंननी पुतली, मुखे अवतरी हारनो देव
 रे ॥ कहे गुणग्राहक जो चतुरवे, तो वामन व
 र ततखेवरे ॥ जू० ॥ २२ ॥ ते सुणि वरियो कुं
 वरीए, दाखे निजे अतिही कुरूपरे ॥ ते देखी
 निभृत्से कुब्जने, तव रुठ्या राणा नूपरे ॥ जू० ॥
 ॥ २३ ॥ गुण आवगुण मुग्धा नवि लहे, वरे कू
 वज तजी वर नूपरे ॥ पण कन्यारत्न नकुब्जनुं,
 ऊकरडे शीवर धुपरे ॥ जू० ॥ २४ ॥ तज माल
 मगल अमेकहुं, तुं कागठ आति विकरालरे ॥
 जो न तजे तो ए ताहूँ, गल नाल लुणे कर-
 वालरे ॥ जू० ॥ २५ ॥ तव हसीय भणे वामन

इरयुं. तुमे जोनवी वरया इणरे ॥ तो दुर्जगो
 रुपो मुज किशुं, रुपोन विधिसुं केणरे ॥ जू० ॥
 ॥ २६ ॥ परस्त्री अनिलाषना पातकी, शिवे मुज
 असिधारातीढरे ॥ पामी तुमे शुद्ध थाउं सवे,
 देखो मुज केवा हठरे ॥ जू० ॥ २७ ॥ एम कहीं
 कुवजे विक्रम तिस्युं, दाख्युं तेणे नरपाति नठरे ॥
 चित्त चमकया गगन देवता, तेणे संतति कुसूम
 नी वुठरे ॥ जू० ॥ २८ ॥ हुठ वज्रसेन राजा खु
 शी, कहे बलपरे दाखवो रूपरे ॥ तेणे दाख्युं
 रूप स्वजावनुं. परणावे पुत्रीनुपरे ॥ जू० ॥ २९ ॥
 दीए आवास उत्तंगते, तिहां विलासे सुख श्री-
 पालरे ॥ निज त्रैलोक्यसुंदरीनारिसुं, जेम कम-
 लासुं गोपालरे ॥ जू० ॥ ३० ॥ बीजे खंडे पू-
 रण थइ, ए ठठी ढाल रसालरे ॥ जश गातां श्री
 सिद्धचक्रना, होए घर घर मंगल मालरे ॥ ३१ ॥
 दोहरा ॥ विलसे धवल आपार सुख, सौ-
 जागी सरदार ॥ पुण्यबले सावि संपजे, वंछित

सुख निरधार ॥ १ ॥ सामग्री करजतणी, प्राप
क कारण पंच ॥ इष्टहेतु पुण्यज बडुं, मेले अ-
वर प्रपंच ॥ २ ॥ त्रिलोकसुंदरि श्रीपालनो, पू-
ण्ये हुवो संबंध ॥ हिवे शृंगारसुंदरितणो, कहीं
शुं लान प्रबंध ॥ ३ ॥

ढाल सातमी ॥ साहेबा मोतीडो हमारो, ए-
देशी ॥ एक दिन राजसजाए आव्यो, चर कहे
अचरज मुज मन जाव्यो ॥ साहेबा रंगीला ह-
मारा, मोहनारंगीला ॥ दलपत्तननोठे महाराजा
॥ धरापाल जस बेन पख ताजा ॥ सा० ॥ ए आं
कणी ॥ १ ॥ राणी चोराशी तस गुणखाणी, गुण
मालाठे प्रथम वखाणी ॥ पांचवेटा उपर गुणपे-
टी, शृंगारसुंदरीठे तसवेटी ॥ सा० ॥ २ ॥ पल्लव
अधर हसित सितफूल, अंग चंग कुचफल बहु
मूल ॥ जंगमतेठे मोहनवेली, चालति चाल जसी
गज गेली ॥ सा० ॥ ३ पंडिता विचक्षणा प्रगु-
ण नामे, निपुणा दक्षा सम परिणामे ॥ तेहनी

पांच सखी ठेप्यारी, सहुनी मति जिन धर्म सरी
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ ते आगल कहे कुंवरी साचूं, आ-
 पणुं मन मत होजो काचूं ॥ मुख कारण जिनम
 तनो जाण, वर वरवो बीजो अप्रमाण ॥ सा० ॥
 ॥ ५ ॥ जाण अजाणतणोजे जोग, केल कथारत
 णी संयोग ॥ ठ्याधि मृत्यु दारिद्र वनवास, अ-
 धिको कुमित्र तणो सहवास ॥ ६ ॥ हेम भु-
 द्राए अकिकन ठाजे, शो जलधर जे फोकट गा-
 जे ॥ वर वरवो परखीने आप, जेम नहोय क-
 र्म कुजोडालाप ॥ सा० ॥ ७ ॥ कहे पंडिता प-
 रनुं चित्त, नाव लखीजे सुणि एक चित्त ॥ सी-
 थे पाक सुनट आकारे, जेम जाणिजे शुद्ध प्र-
 कारे ॥ सा० ॥ ८ ॥ करी समझ्या पद तुमे दा-
 खो, जेपूरे ते चित्तमां राखो ॥ एमनिसुणी क-
 हे कुंवरी तेह. वरुं समझ्या पुरे जेह ॥ सा० ॥
 ॥ ९ ॥ तेह प्रसिद्धि सुणीने मिलिया, बहु पंडित
 नर बुद्धि बलिया ॥ पण मतिवेग तिहां नबि चाले,

वायु वेगे नवि डुंगर हाले ॥ सा० ॥ १० ॥ पंच स-
 खीयुत ते नृप बेटी, चित्त परखे करी समझ्या मोटी
 ॥ सुणिय कहे जिन केम पुरिजे, परमन द्रहं किम
 थाह लहीजे ॥ सा० ॥ ११ ॥ सुणिय कमार च-
 मक्यो आवे, घरे कहे मुज हार प्रनावै ॥ दलं
 पत्तननयर ज्यां नृप कन्या, त्या पहोतो सखीयु
 त ज्या धन्या ॥ १२ ॥ देखी कुंअर अमरसम ते
 ह, चित्तचमकी कहे जों मुज एह ॥ पुरे समझ्या
 तो हुं धन्य, पुरि प्रतिज्ञा हुए कहे पुण्य ॥ सा०
 ॥ १३ ॥ पुठे कुंअर समझ्या कोण, कुअरीसंके
 त सखी कहे गौण ॥ शीशे कुंअर दीये करंपू
 रे. पुतल तेहरहेन अधुरे ॥ सा० ॥ १४ ॥ पंडिता उ
 वाच ॥ मनवंछित फल होय ॥ पुतलोउवाच ॥
 दोहरा ॥ अरिहंताइ नव पय, नियमन धर
 जे कोय ॥ निश्चे तस सुरनरस्तवे, मनवंछित फल
 होय ॥ १ विचक्षणोवाच ॥ अवरम ऊखो आल ॥
 पुतलोउवाच ॥ अरिहंतदेव सुसाधु गुरु, धर्मज

दया विशाल ॥ जपो मंत्र नवकार तुम, अवर म
 ऊँखो आल ॥ २ ॥ प्रगुणानुवाच ॥ करि सफ
 लो अप्पाण ॥ पुतलानुवाच ॥ आराहीजे देव गु
 रु, देइ सुपत्ते दान ॥ तप संजम उवयार करि,
 करि सफलो अप्पाण ॥ ३ ॥ निपुणानुवाच ॥
 जित्तो लिख्यो निलाड ॥ पुतलानुवाच ॥ रे म
 न अप्पा खंतिधर, चिंतां जाल म पाड ॥ फल
 तितोहिज पामिये, जित्तो लिख्यो निलाड ॥ ४ ॥
 दहानुवाच ॥ तस तिहुंयण जिणदास ॥ पुत
 लानुवाच ॥ अञ्जि नवांतरसंचियु, पुन्न सुमुग्गल
 जास ॥ तसवल तसमई तससरी, तस तिहुंयण
 जिणदास ॥ ५ ॥ गूंगारसुंदरीनुवाच ॥ रविपहे
 ला ऊगंत ॥ पुतलानुवाच ॥ जीवतां जगजश
 नही, जशविण कां जीवत ॥ जे जश लई आ
 थम्या, रविपहेला ऊगंत ॥ ६ ॥ ढाल पुर्वनी ॥
 पुरे कुंअर समइया सारी, आनंदित हुइ नृपति
 कुमारी ॥ धरे कुमार ते त्रिनुवनसार, गुणनिधा

न जीवत आधार ॥ सा० ॥ १५ ॥ पुतलमुखे
 समश्या पुरावी, राजाप्रमुख जन सवि हुआ जा
 वी ॥ ए अचरज तो कहींए न दीठुं, जेम जोइ
 ए तेम लागे मीठुं ॥ सा० ॥ १६ ॥ राजा निज
 पुत्री परणावे, पांच सखीयुत मनने चावे ॥ पां
 णिग्रहण महोत्सव कीधो, दान अतुल मनवांछि
 त दीधो ॥ सा० ॥ १७ ॥ सातमी ढाल ते ती
 जे खडे, पूरण हुइ गुणराग अखंडे ॥ सिद्धचक्र
 गुण जो गाइजे, विनय सुजश सुख तो पाइ
 जे ॥ सा० ॥ १८ ॥

दोहरा ॥ अंगनद्व इणे अवसरे, देखी कुंअ
 रचरित्र ॥ कहे सुणो एक माहरुं, वचन विचार
 पवित्र ॥ १ ॥ कोल्लागपूरनो राजियो, अवे पुरंदर
 नाम ॥ विजया राणी तेहनी, लावाणम लीलाधा
 म ॥ २ ॥ सात पुत्र उपर सुता. जपसंदरी ठे
 तास ॥ रंजा लघु ऊची गई, जोड न आवे जा
 स ॥ ३ ॥ लावाणम रूप अलंकरी, ते देखी क

त्र शिरे धरयां, मुखकंज अनुसरत मरालरे ॥
 वि० ॥ ली० ॥ ४ ॥ सोले सामंते प्रणमितो, हय
 गय मणिमोती जेठरे ॥ वि० ॥ चतुरंगी सेनाए
 परिवरघो, चाले जननी नमवा नेटरे ॥ वि० ॥
 ॥ ली० ॥ ५ ॥ गाम ठामे ते आवंतडो, नृपे प्र
 णमितो सुपवित्तरे ॥ वि० ॥ जेटी जतो बहु जे
 टणे, सोपारय नगरे पहुतरे ॥ वि० ॥ लि० ॥
 ॥ ६ ॥ ते परिसर सैन्ये परिवरघो, आव्यो ते श्री
 पालरे ॥ वि० ॥ कहे जाकि शक्ति नवि दाखवे,
 शुं सोपारय नरपालरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ७ ॥ क
 हे नर परधान नवि एहनो, अपराधअठे गुण
 वंतरे ॥ वि० ॥ नामे महसेनठेए जलो, तारा रा
 णीनी कंतरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ८ ॥ पुत्रीतस कू
 खे उपनी, ठे तिलकसुंदरी नामरे ॥ वि० ॥ तेतो
 त्रिजुवर्नातिलकसमी बनी, हरे तिलोत्तमानुं धामरे
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ ९ ॥ ते तो सृष्टिठे चतुर मदनत
 णी, अंगे जीव्यां सावि उपमानरे ॥ वि० ॥ श्रु

ति जड जे ब्रह्मा तेहनी. रचनावे सकल सप्ता
 नरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १० ॥ दीर्घपीठे डंपी सा सुता.
 कीधा बहु विध उपचाररे ॥ वि० ॥ मणीमंत्र औ
 पध बहु आणियां, पण नथयो गुण ते लिगाररे
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ ११ ॥ ते माटे दुःखे पीडीयो,
 महसेन नृपति तस तातरे ॥ वि० ॥ नवि आ
 व्यो इणे कारण, मत गणजो बीजो घातरे, ॥
 वि० ॥ ली० ॥ १२ ॥ राजा कहे किहावे ते दाख
 वो, तो कीजे तस उपकाररे ॥ वि० ॥ एम कही
 तुरंगारूढ थयो, दीठां जातां बहु नरनाररे ॥
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ १३ ॥ समशाने लेइ जाती जा
 णी, त्यां पहोतो ते नरनाहरे ॥ वि० ॥ कहे दाखो
 मुज हूं सज करूं, मुर्बितने मदियो दाहरे ॥
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ १४ ॥ मादियल मुकी ते थानके.
 करिहार न्हवण अनिपेकरे ॥ वि० ॥ सज करी
 सवि लोकना चित्तसुं, थइ वेठी धरीय विवेकरे ॥
 वि० ॥ ली० ॥ १५ ॥ महसेन मदित कहे राणि

यो, वरुम तुजनेएशुं होतरे ॥ वि० ॥ जो नावत
 ए वडजागीयो, न करत उपगार उद्योतरो ॥ वि०
 ॥ ली० ॥ १६ ॥ तुज प्राण दीधावे एहणे, तुं प्रा
 ण अधिकवे मुजरे ॥ वि० ॥ एहने तुं देवी मु
 ज घटे, ए जाणजे हृदयनुं गुजरे ॥ वि० ॥ ली०
 ॥ १७ ॥ स्निग्ध मुग दृग देखतां, एमं कहेतां ते
 श्रीपालरे ॥ वि० ॥ मन चिंते माहरा प्रेमनी, गति
 एहसुंवे असरालरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १८ ॥ जो
 प्राण कहुं तो तेदयी, अधिको केम लखीए प्रे
 मरे ॥ वि० ॥ कहुं चिन्नतो अनुअव केम मिले,
 अवीरोध उजय गति केमरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ १९ ॥
 एम स्नेहलसा निज अंगजा, श्रीपालकरे दिए
 जुपरे ॥ वि० ॥ परणीसा आठे तस मिली, द
 यिता अति अद्भुत रूपरे ॥ वि० ॥ ली० ॥
 ॥ २० ॥ अरु दृष्टिसहित पण विरातिने, जेम वं
 ठे समकितवंतरे ॥ वि० ॥ अडप्रवचनमात स
 हित मुनि, समताने जेम गुणवंतरे ॥ वि० ॥

॥ ली० ॥ २१ ॥ अड बुद्धिसहित पण सिद्धिने,
 अड सिद्धिमहित पण मुक्तिरे ॥ वि० ॥ प्रिया
 आठ सहित पण प्रथमने, नित्य ध्यावे ते इण
 युक्तिरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २२ ॥ उत्कंठित चि
 त्त तेहसुं, वली जनानिने नमवा हेजरे ॥ वि० ॥
 श्रीपाल प्रयाण ते पूरियु, देवरावे डका तेजरे ॥
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ २३ ॥ हयगंय रथं नरु मणि
 कंचणे, वली सत्त वत्त बहु मुल्लरे ॥ वि० ॥ प
 गे-पगे नेटेजे नृप प्रत्ये, तेहनं चक्रवर्तिसमे शु
 ल्लरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २४ ॥ तस सैन्य
 जरे चारित महि, अहिपाति फण मणिगण प्रो
 तरे ॥ वि० ॥ तेणे गिरि पण जाणु नवि-गि
 रया, शशि सूर नयण विधि जोतरं ॥ वि० ॥
 ॥ ली० ॥ २५ ॥ मरहठ सोरठ मेवाडना, व
 ली लाट भोटना जुपरे ॥ वि० ॥ ते आव्यो
 सधला साधतो, मालवदेशे रविरूपरे ॥ वि० ॥
 ॥ ली० ॥ २६ ॥ आगम निसुणी परचक्रनो,

चर मुखथी मालवरायरे ॥ वि० ॥ नयनीत
 ते गढने सज करे, तेइनुं नवि तेज खमायरे ॥
 ॥ वि० ॥ ली० ॥ २७ ॥ कापड चोपरु तण
 कण घणा. संग्रहे ते इंधण नीररे ॥ वि० ॥
 सन्नद्ध होए सुजट वडा, कायर कंपे नही धी
 ररे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २८ ॥ एम उज्जयणी
 हुइ नगरी ते, लोके संकिरण समीपरे ॥ वि०
 ॥ वींटी श्रीपाल सुजटे तदा, जेम जलधि अं
 तरद्वीपरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ २९ ॥ डेरा दी
 धा सवि सैन्यना, पहेली हुइ रयणी जामरे ॥
 ॥ वि० ॥ जननी घरे पहीतो प्रेमसुं, नृप हा
 र प्रजावे तामरे ॥ वि० ॥ ली० ॥ ३० ॥ ढा
 ल पुरी थइ आउमी, पुरो हुवो त्रीजो खंडरे ॥
 ॥ वि० ॥ होए नव पद विधि आराधतां, जि
 न विनय सुजश अखंडरे ॥ वि० ॥ ली० ॥
 ॥ ३१ ॥ चोपाइ ॥ खंरु खंड मिठाइघणी.
 श्रीश्रीपालचरित्रे भणी ॥ ए वाणी सुरतरुवेल

ढी, कगी द्राखने काशिगेलडी ॥ १ ॥ इति श्री
मन्नहोपाध्याय श्री विनयविजयगणी उपक्रांते
महोपाध्याय श्री यशोविजयगणी पुरिते श्री
श्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे विमलेश्वरदेवेनार्षि
तम हारप्राप्ति मनोजीष्टदायक पटकन्यायाणिग्र
हणकरणनोनाम तृतीयखंड समाप्त ॥ ६५ ॥

॥ अथ श्री चतुर्थखंड प्रारंभ ॥

दोहरा ॥ त्रीजो खंड अखंड रस, पुरण हु
उ प्रमाण ॥ चोथो खंड हिवे वरणवुं, श्रोता मु
णो सुजाण ॥ १ ॥ गीश धुणावे चमकिउं, रो
माचित करि देह ॥ विकसित नयन वदन मु
दा, रस दिए श्रोता तेह ॥ २ ॥ जाणज श्रोता
आगले, वक्ताकला प्रमाण ॥ ते आगल घनशुं
करे, जे मगशीलपापाण ॥ दर्पण अंधा आग
ले. वहिरा आगल गीत ॥ मूरख आगल र
सकथा, वणये एकज गीत ॥ ४ ॥ ते माटे स
ज थइ मुणो, श्रोता दीजे कान ॥ बुजे तेहने

राज्यं, लक्ष नचूले ज्ञान ॥ ५ ॥ आगे आगे
रस घणो, कथा सुणतां थाय ॥ हिवे श्रीपाल
चरित्रना, आगल गुण कहेवाय ॥ ६ ॥

ढाल पहेली ॥ धन दिनवेलाधनघडी तेह,
अचिरारो नंदन आदि जिन नेटशंजी, एदेशी ॥
रहियारे आवास दुवार, वयण सुणे श्रीपाल सो
हामणांजी ॥ कमलप्रचारे कहे एम, मयणा प्र
त्ये मुज चिते ए दुःख घणांजी ॥ ७ ॥ वींटीठे
परचक्र, नगरी सघलुरे लोक हिलोलीयुंजी ॥
शीगति होशे एणी ठाम, सुतने सुख होजो बीजु
घोलियुंजी ॥ ८ ॥ घणारे दिवस थया तास, वा
लम तुज जे गयो देशांतरेजी ॥ हजीय न आ
वी कांड शुद्धि, जीवरे माता दुःखणी नवि मरे
जी ॥ ९ ॥ मयणारे बोले मकरो खेद, मधरो
जय मनमां परचक्रनोजी ॥ नवपदध्यानेरे पाप
पलाय, दुरितन चारोठे ग्रह वक्रनोजी ॥ १० ॥ अ
री करी सागर हरिने व्याल, जलण जलोदर वं

धन नय सवे नी ॥ जायरे जपनां नवपद जाप,
 लहि एरे संपत्ति इह नवे पर नवे जी ॥ ६ ॥ नवी
 जारे खोजे कोण प्रमाण, अनुभव जाग्या मुज ए
 वातनोजी ॥ हुनरे पुजामा अनोपम जाव, आ
 जरे संध्याए जगतातनोजी ॥ ६ ॥ तद्गर्त चि
 त्त समय विधान, जावनी वृद्धि नवनय अति
 घणोजी ॥ विस्मय पुलक प्रमोद प्रधान, लक्ष
 ण एवे अमृतक्रियातणोजी ॥ ७ ॥ अमृतनो
 लेश लह्यो एकवार, बीजारे औपध करवा ज्ञान
 वि पडेजी ॥ अमृतक्रियाते लहि एकवार, बीज
 जारे साधन विण शिव नवि अरुजी ॥ ८ ॥ ए
 हवोरे पुजामां मुज जाव, आव्योरे जाव्यो ध्या
 न सोहामेजी ॥ हेजी अन माए मन आनंद,
 क्षण क्षण होये पुलक निःकारणेजी ॥ ९ ॥ फर
 केरे वाम नयनने उगोज, आज मिलेवे वं लत
 माहरोजी ॥ बीजुरे अमृतक्रिया सिद्धरूप, अतुर
 त फलेवे त्या नवि आतरोजी ॥ १० ॥ किर्मल

प्रजा कहेरे वढ साच, ताहरी जनि अमृत व
 से सदाजी ॥ ताहरूरे वचन होशे सुप्रमाण, त्रि
 विध प्रत्ययवे ते साध्यो मुदाजी ॥ ११ ॥ करवारे
 वचन प्रियानुं साच, कहेरे श्रीपाल ते बार उ
 घामीएजी ॥ कमलप्रजा कहे एसुतवाण, मयणा
 कहे जिनमत नहोये मुधाजी ॥ १२ ॥ उघाड्यां बार
 नमे श्रीपाल, जननीना चरणसरोज सुहंकरू
 जी ॥ प्रणमीरे दयिता विनय विशेष, बोलावे
 तेहने प्रेम मनोहरूती ॥ १३ ॥ जननीरे आ
 रोपी निजखंध, दयितारे निज हाथे लइ राग
 सुजी ॥ पहीतोरे हार प्रजावे राय, शिविर आ
 वासे उल्लासित वेगसुजी ॥ १४ ॥ बेसाडीरे न
 द्रासन नरनाथ, जननीने प्रेमे एणीपरे विनवेजी
 ॥ माताजी देखोए फल तास, जपीया में नव
 पद जे सद्गुरु दियाजी ॥ १५ ॥ बहुरोरे आ
 ठे लागी पाय, सासुने प्रथमप्रिया मयणातणेजी
 ॥ तेइनीरे शीश चढावी आशीष, मयणारे

आगल वात सयल नणेजी ॥ १६ ॥ पूठेरे म
 यणाने श्रीपाल, ताहरोरे तात आणावुं किएप
 रेजो ॥ सा कहे कंठे धगीने कुहारु, आवेतो
 कोई आशातना नवि करेजी ॥ १७ ॥ कहेवरा
 व्युं दूत मुखेतिणीवार, श्रीपाले राजाने ते वय
 एडुजी ॥ कोप्योरे मालवराजा ताम, मंत्री कहे
 नवि कीजे एवडुंजी ॥ ॥ चौथे खंमे ए पहेली
 ढाल, खंड साकरथी मीठी ए नणीजी ॥ गाये
 जे नवपद सुजश विलास, कीरति बाधे जगमां
 तेहतणीजी ॥ १९ ॥

दोहरा ॥ मंत्री कहे नवि कोपिए, प्रबल प्र
 तापी जेह ॥ नाखाने शुं कीजिए, सूरज सामी
 खेह ॥ १ ॥ उद्धत ऊपर आथड्यु, पसरंतु पण
 धाम ॥ डलाए जिम दीपनुं, लागे पवन उदाम
 ॥ २ ॥ जे किरतारे वडा किया, तेसु न चाले
 रीश ॥ आम अंदाजे चालिये, नामीजे तस
 शीश ॥ ३ ॥ दूत कहे ते कीजिए, अनुचित करे

बलायें ॥ जेनी वेलां तेहनी, रक्षा एहज न्याय
 ॥ ४ ॥ एवां मंत्रिवयण सुणी, धरी कुहामो कंठ ॥
 मालवनरपति आवियो, शिविरतणे उपकंठ
 ॥ ५ ॥ ते श्रीपाले ढोडावियो, पहिराव्या अलंकार
 ॥ सनामध्य तेढ्यो नृपति, आप्युं आसन सार
 ॥ ६ ॥ तव मयणा निज तातेने, कहे बोल जे
 मुज ॥ कर्मवशे वर तुमे दियो, तेनुं जुओ ए
 गुज ॥ ७ ॥ तव विस्मित मालवनृपति, जामा
 उल प्रणमत ॥ कहे न स्वामि तुज ओलख्यो,
 गुरुन ने गुणवंत ॥ ८ ॥ कहे श्रीपाल न माहरो,
 एवढो एह बनाव ॥ गुरुदर्शित नवपदतणो, ए
 ठे प्रबल प्रभाव ॥ ९ ॥ ते अचरज निशुणी मि
 ल्यो, तिहां विवेक उदार ॥ सौजाग्य सुंदरी रू
 पसुंदरी, प्रमुख सखल परिवार ॥ १० ॥ स्वज
 न वर्ग सघलो मिल्यो, वर्यो आणांद पूर ॥ ना
 टककारण आदेशे, श्री श्रीपाल सनूर ॥ ११ ॥
 ढाल बीजी ॥ लुंवे लुंवे वरसालो मेह, आ

ज दहाडो धणरी ब्रिजनो होलाल एदेगी ॥ हो
 जी पहेलु पेडुं ताम, नाचवा ऊठे आफणी हो
 लाल ॥ होजी सुल नटी पण एक, नवि ऊठे व
 हुपरे नणी होलाल ॥ १ ॥ होजी ऊठाडी बहु
 कष्ट, पण उठाइ नसा धरे होलाल ॥ होजी दु
 हो करी सविपाद, दुहो एक मुखे उच्चरे होला
 ल ॥ २ ॥ दोहरो ॥ क्या मालव क्या गखपुर,
 क्यां बठवर क्या नट्ट ॥ सुरसुंदरी नचाविए, देवे
 दल्यो मरट्ट ॥ १ ॥ ढाल पुर्वनी ॥ होजी वचन
 सुणी तव तेह, जननी जनकादिक सबे होलाल ॥
 होजी चित्ते विस्मित चित्त, सुरसुंदरी केम संज
 ने होलाल ॥ ३ ॥ होजी जननी कंठे विलग्ग,
 एगी जनके रोवती होलाल ॥ होजी सघलो क
 ह्यो वृत्तंत, जे तुमे ऋद्धि दीधी हती होलाल ॥
 ॥ ४ ॥ होजी हुंते ऋद्धि समेत, गखपुरीने परिग
 रे होलाल ॥ होजी पहोती मुहुर्त हेन, नाथ स
 हित रही बाहरे होलाल ॥ ५ ॥ होजी सुनट ग

या केइ गेह, गोठे साथे निशा रही होलाल ॥
 होजी जामाता तुज नठ, धाड पडी तिहां हुं अ
 ही होलाल ॥ ३ ॥ होजी वंची मुल्ये धाड, सुज
 ट देश नेपालमां होलाल ॥ होजी सारथवाहं ली
 ध, फले लख्युं जे जालमां होलाल ॥ ७ ॥ हो
 जी तेणे पण बब्बरकुल, महाकाल नगरे धरी
 होलाल ॥ होजी हाटे वेची वेश, लेइ शीखावी
 नटी करी होलाल ॥ ८ ॥ होजी नाटकाप्रिय महा
 काल, नृप नटपेटकसुं अही होलाल ॥ होजी वि
 विध नचावी दीध, मयणसेना पातिने सही हो
 लाल ॥ ९ ॥ होजी नाटक करतां तास, आगे
 दिन केता गया होलाल ॥ होजी देखी आपणुं
 कुटुंब, उल्लख्युं दुःख तुम हुइ दया होलाल
 ॥ १० ॥ होजी मयणादुःख तव देखी, निज गु
 रुवयणे मद कीयो होलाल ॥ होजी ते मयणापति
 दास, जावे अब भुज सिलकीयो होलाल ॥ ११ ॥
 होजी एकज विजयपताक, मयणा सयणामां ल

हे होलाल ॥ होजी जेहनूं शील सलील, महि
 माए मृगभद्र मह महे होलाल ॥ १२ ॥ होजी
 मयणानें जिनधर्म, फलिउ वलीउ सुरतरु हो
 लाल ॥ होजी मुजने मिथ्याधर्म, फलिउ विपफल
 विपतरु होलाल ॥ १३ ॥ होजी एकज जलाधि उत्पन्न,
 अमिय विपेजे आतरो होलाल ॥ होजी अम वे
 उ वेहेनीमाहे, तुमेवे मत कोइ पांतरो होलाल ॥
 ॥ १४ ॥ होजी मयणा निजकुललान, उद्योत्तक
 मणिदीपीका होलाल ॥ होजी हुंहुं कुलमलहेत,
 सघन निशानी जीपिका होलाल ॥ १५ ॥ हो
 जी मयणा दीठे होय, समकित शुद्ध सोहामणुं
 होलाल ॥ होजी मुज दीठे मिथ्यात्व, धीठाइ हो
 ए अतिघणु होलाल ॥ १६ ॥ होजी एवा दो
 ली वोल, सुरसुंदरीए उपाइउ होलाल ॥ होजी
 जे आनंद नहोत, नाटक शतके पण कीउ हो
 लाल ॥ १७ ॥ होजी श्रीपाल वडवेग, हिवे अ
 रिदमण तेडावियो होलाल ॥ होजी सरसुंदरी

तसदीध, बहु ऋद्ध बोलावतु होलाल ॥ १८ ॥
 होजी ते दंपाति श्रीपाल, मयणाने सुपसाजले
 होलाल ॥ होजी पामे ममकित शुद्ध, अध्यवसाए
 अति जले होलाल ॥ १९ ॥ होजी कुष्टी पुरुष शत
 सात, मयणा वयणे लही दया होलाल ॥ होजी
 आराधी जितधर्म, निरोगी सघला थया होलाल
 ॥ २० ॥ होजी ते पण नृप श्रीपाल, प्रणमे बहुले
 प्रेमसु होलाल ॥ होजी राणीम दीए नृप तास,
 वदन कमल नित्य उल्लस्युं होलाल ॥ २१ ॥
 होजी आवी नमे नृपपाय, मतिसागर पण मं
 त्रीवी होलाल ॥ होजी पूरव परे नरनाह, तेह अ
 मात्य कियो कवि होलाल ॥ २२ ॥ होजी सुस
 रा सालाजुप, माउल बीजा पण घणा होलाल ॥
 होजी तेहने दीए बहु मान, नृप आदरनी नहीं
 मणा होलाल ॥ २३ ॥ होजी जालमिलित कर
 पद्म, सवि सेवे श्रीपालने होलाल ॥ होजी ए
 न्दीन विनवे मंत्री, मतिसागर जुपालने हो

लाल ॥ २४ ॥ होजी चोथे खंडे ढाल, बीजी
हुइ-सोहामणी होलाल ॥ होजी गुणगातां सिद्धच
क्र, जश कीर्ति बाधे घणी होलाल ॥ २५ ॥

दोहरा ॥ मतिसागर कहे पितृपदे, ठव्यो बाल
पण जेण ॥ उठावियो ते तुज अरि, ते सहि दित्तम
एण ॥ १ ॥ अरि कर गतेजे नवि लिए, शक्ति ठते पि
तृरज्ज ॥ लोक हसे बल फोकतस, जिम शारदघ
नमज्ज ॥ २ ॥ ए बल ए ऋधि ए सकल, सै
न्यातणो विस्तार ॥ शुं फलजो लेशो नही, ते
निजराज उदार ॥ ३ ॥ नृप कहे साचुं ते क
हुं पणवे चार उपाय ॥ शाम होय तो दंड
श्यो, साकरे पण पित जाय ॥ ४ ॥ अहो बु
पुद्धि मंत्री जणे, दूत चतुरमुख नाम ॥ नृप शि
खात्री मोकल्यो, पहातो चंपा ठाम ॥ ५ ॥

ढाल बीजी ॥ राग बगाला ॥ किसके चेले कि
सके पूत, आतम राम एकला अवधूत ॥ मन
मानल ए देशी ॥ अजितसेनठे ज्या नृपाल, ते

आगल कहे दूत रसाल ॥ साहेब सेविर ॥ क
 ला शीखवा जाणी बाल, जे तें मोकल्यो श्रीपा
 ल ॥ सा० ॥ सकल कला तेणे शीखी सार,
 सेना लइ चतुरंग उदार ॥ सा० ॥ आव्योढे तुज
 खंधनो नार, उतारेढेते निरधार ॥ सा० ॥ २ ॥
 जीरण थंनतणो जे नार, नवो ठवीजे ते निर
 धार ॥ सा० ॥ लोके पण युक्तवे एह, राज देह
 तुमे दाखो नेह ॥ सा० ॥ ३ ॥ बिजा पयपंकज
 तस चूप, सेवे बहु नाक्ति अनुरूप ॥ सा० ॥
 तुमे नवि आव्याउपायो विरोध, नवि असम
 र्थ वे तेहसुं शोध ॥ सा० ॥ ४ ॥ किहां स
 रसव किहां मेरु गिरिंद, किहां तारा किहां शा
 रदचंद ॥ सा० ॥ किहां खद्योत किहां दिननाथ,
 किहांसाथर किहां बिल्लर पाथ ॥ सा० ॥ ५ ॥ कि
 हां पंचायग्रण किहां मृगबाल, किहां ठकिर किहां
 सोवनथाल ॥ सा० ॥ किहां कोद्रव किहां कूर कपूर,
 किहां कुकस ने किहां घृत पूर ॥ सा० ॥ ६ ॥ किहां

शून्य वेडी किहां आराम, किहां अन्याया किहां
 नृपराम ॥ सा० ॥ किहा बाधने किहां वली ठी
 ग, किहा दयाधर्म किहां वली याग ॥ सा० ॥
 ॥ ७ ॥ किहां जुठने किहां वली साच, किहां
 रत्न किहा खंडित काच ॥ सा० ॥ चढते उठेवे
 श्रीपाल, पडते तुम सरखा चूपाल ॥ सा० ॥
 ॥ ८ ॥ जो तुं निज जीवित नवि रूठ, तो प्र
 णमी करी तेहज तुठ ॥ सा० ॥ जो गर्वित ठे
 देखी रऊ, तो रण करवा थाजे सऊ ॥ सा० ॥
 ॥ ९ ॥ तस सैनासागर मही जाण, तुज
 दल साथुचूर्ण प्रमाण ॥ सा० ॥ मोटासु नवि
 कीले जुंऊ, सवी कहे एम वूऊ अबूऊ ॥
 सा० ॥ १० ॥ बोली एम रह्यो जव दू
 त, अजितसेन बोल्हो थइ चूत ॥ राजा न
 ही मीले ॥ कहेजे तु तुज नृपने एम, दूतप
 णानो जोवे प्रेम ॥ सा० ॥ चंपानगरीनो राजा न
 ही मीले ॥ ११ ॥ आदि मध्य अंतेवे जाण,

मधुरे अमल कटु तिक्त प्रमाण ॥ रा० ॥ जोज
 न वचने सम पीरणाम, तेणे चतुरमुख जे ता
 हरुं नाम ॥ रा० ॥ १२ ॥ निज नाहिं तेह अ
 मारो कोय, शत्रुनाव वहिएवे दोय ॥ रा० ॥
 जीवतो मुक्यो जाणी बाल, तेणे अमे निबल
 बलियो श्रीपाल ॥ रा० ॥ १३ ॥ निज जीवित
 ने हुं नहि रूठ, रूठयो तस जमगाय अपूठ ॥
 जेणे जगायो सुता सिंह, मूज कोपे तस नरहे लीह
 ॥ रा० ॥ १४ ॥ जस बल सायर साथु प्राय,
 जेह निबलते बीजा राय ॥ रा० ॥ तेमां हुं व
 डवानल जाण, सविते शोषुं नकरूं काण ॥
 ॥ रा० ॥ १५ ॥ कहेजे दूत तुं वेगे जाई, आ
 वूंहुं तुज पुठे धाई ॥ रा० ॥ बल परखीजे रण
 मदान, खड्गनी पृथ्वीने विद्यानुं दान ॥ रा० ॥
 ॥ १६ ॥ चौथे खंडे त्रीजी ढाल, पूरण हुइ गु
 ण राग बंगाल ॥ रा० ॥ सिद्ध चक्र गुणगावे जेह,
 विनय सुजश सुख पावे तेह ॥ रा० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ बचन कहे नयरीतणां, दूत जई
 अति वेग ॥ कडूआं काने ते सुणी, हुओ श्री
 पाल सतेग ॥ १ ॥ उंच नूमि तटिनीतटे, सेना
 करि चतुरंग ॥ चंपा दिश जइ तिण दिया, प
 ट आवास उत्तंग ॥ २ ॥ सामो आव्यो सबल
 तव, अजितसेन नरनाह ॥ मांढो मांहि दल दे
 उ मिल्हा, सगर्व अधिक उछाह ॥ ३ ॥
 ढाल चौथी ॥ कमखानी देशी ॥ चंग रणरंग
 मंगल हुआं अति घणां, नूरि रणतूर अविदूर
 वाजे ॥ कौतुकी लाख देखण मिल्हा देवता, ना
 द दुंदुंनितणे गयण गाजे ॥ चं० ॥ १ ॥ उग्र
 ता करण रणनूमि त्यां शोधिए, रोधिए अव-
 धि करी शस्त्र पूजा ॥ बोधिए सुनटकुलवंशश
 सा करी, योधिए कवण विण तून दूजा ॥ चं०
 ॥ २ ॥ चरचिए चारू चंदनरसे सूनटतनु, अ
 रचिए चंपके मुकुट शीशे ॥ सोहिए हठ वर
 वीरवलये तथा, कल्पतरु परे बन्या सुनट दीसे

॥ चं० ॥ ३ ॥ कोइ जननी कहे जनक मत ला
जवे, कोइ कहे माहरुं बिरुद राखे ॥ जनक प
ति पुत्र तिहु वीर जश उज्जला, सोहि धन ज
गतमां आणिय आखे ॥ चं० ॥ ४ ॥ कोइ र
मणी कहे हसिय तुं सहिश किम, समर करवा
ल शर कुंत धारा ॥ नयण बाणे हणयो तूज में
वश कियो, त्यांन धीरज रही कर विचारा ॥
॥ चं० ॥ ५ ॥ कोइ कहे माहरो मोइ तुं मत क
रे, मरण जीव तन तुज पीठ बांडुं ॥ अधररसे
अमृतरस दोय तुज सुलजबे, जगत जय हेतु
हो अचल खांडु ॥ चं० ॥ ६ ॥ इम अधिक कौ
तुके वीररस जागते, लागते वचन हुआ सुनट
ताता ॥ सूर पण क्रूर थइ तिमिरदल खंडवा,
पूर्व दिशि दाखेव किरण रातां ॥ चं० ॥ ७ ॥
रोपि रणथंन संमरंन करि अति घणो, दोइ द
ल सुनट तव सबल जुंजे ॥ नूमिने जोग्यता जोइ
निज योग्यता, अमल आरोगता रण नमूंजे ॥ चं०

॥८॥ निर जिम तीर वरसे तदा जोद्ध घन, संचरे
 खगपरे धवल नेजा ॥ गाज दल साज ऋतु आ
 इ पावसतणी, बीज जिम कुंत चमके सतेजा ॥
 चं० ॥ ९ ॥ जाड ब्रजांड अंतखंड जे करी श
 के, उठले तेहवा नालगोला ॥ वरसता अग्नि
 रणमग्न रोपे जरया, मानु ए यमतणा नयणडो
 ला ॥ चं० ॥ १० ॥ केइ ठेदे शरे अरितणां
 शिर सुनट, आवतां केइ अरि वाण जाले ॥
 केइ असि विन्न करि कुन मुक्ताफले, ब्रम्हरथ
 विहगमुख आस घाले ॥ च० ॥ ११ ॥ मद्यरस
 सद्य अनवद्य कवि पद्य जर, बंदिजन विरुदथी
 अधिक रसिया ॥ खोज अरिफोजनी मोज ध
 रिनवि शके, चमकजर धमक दइ मांह धसिया
 ॥ चं० ॥ १२ ॥ वाल विकराल करवाल इत
 सुनटशिर, वेग उठलित रवि राहु माने ॥ धू
 लि धोरणि मिलित - गगन गंगाकमल, कोट
 अंतरित रथ रहन गाने ॥ ० ॥ ॥ केइ

जट नार परि शीश परिहार करि, रणरसिक
 आधिक जुंजे कबंधे ॥ पूर्ण संकेत हित हेत जय
 जयरवे, नृत्य मनु कृत्य संगीतबंधे ॥ चं० ॥ १४ ॥
 नूरि रणतूरपूरे गयण गरुगमे, रथ सबलशूर
 चक्रचूर जंजे ॥ वीर हकड हयगय पूले चिहं
 दिशे, जेह होय शूर तस कोण गंजे ॥ चं० ॥
 ॥ १५ ॥ तेह कणमांह हुइ रणमही घोरतर,
 रुधिर कर्दम जरी अंतपुरी ॥ प्रीति हुइ पूर्ण
 व्यंतरतणा देवने, मुजटने होस नविरहि अधू
 री ॥ चं० ॥ १६ ॥ देखि श्रीपालजट जांजियुं
 सैन्य निज, ऊठवे तव अजितसेन राजा ॥ नाम
 मुज राखवो जोर फिरी दाखवो, हो विमल सु
 जट कुल तेज ताजा ॥ चं० ॥ १७ ॥ तेह इम
 बुझतो सैन्य सजि जुंझतो, बीटियो जति शय
 सात राणे ॥ ते वदे नृपति अजिमान तज ह
 जिय तुं, प्रणमि श्रीपाल हित एह जाणे ॥ चं०
 ॥ १८ ॥ मानधन जास माने नते हितवचन,

तेहसुं जुंऊनो नविय थाके ॥ बांधियो पाडि क
 रि तेह सतशय नटे, हुन श्रीपालजश प्रगट
 वाके ॥ चं० ॥ १९ ॥ पाय श्रीपालने आणियो
 तेह नृप, तेणे गोमावियो उचित जाणी ॥ नुमि
 सुख जोगवो तात मत खेद करो, वदत श्रीपाल
 इम मधुर वाणी ॥ चं० ॥ २० ॥ खंरु चोथे
 हुई डाल चोथी जली, पूर्ण कमखातणी एइ दे
 शी ॥ जेह गावे सुजश एम नवपदतणो, ते लहे
 ऋद्धि सवि शुद्धेशी ॥ चं० ॥ २१ ॥

दोहरा ॥ अजितसेन चिते करयुं, अविमा
 स्युं में काज ॥ वचन न मान्युं दूतनुं, तो न रही
 मुज लाज ॥ १ ॥ आप शांति जाणे नही, करे
 सबलसुं ऊऊ ॥ सुविहितवचन माने नही, आ
 पद पमे अबुऊ ॥ २ ॥ किहां वृद्धपण हुं सदा,
 परद्रोहि कृन पाव ॥ किहां बालपण ए सदा, प
 र उपकार स्वभाव ॥ ३ ॥ गोत्रद्रोह कीर्ति नही,
 राजद्रोह नावे नीति ॥ बालद्रोह सदगति नहीं,

ए त्रणे भुज जीति ॥ ४ ॥ कोइनकरे तेंमें करघुं,
 पातक निठुर निजाण ॥ नहि बीजुं बहु
 पापने ॥ नरक विना भुज ठाण ॥ ५ ॥
 एहवा पण बहु पापने ॥ उद्धरवा दिये ह्छ
 ॥ प्रव्रज्जा जिनराजनी, ते इक शुद्ध सम
 छ ॥ ६ ॥ ते दुखवल्ली वन दहन, ते शिवसु
 ख तरु कंद ॥ ते कुलघरगुण गणतणुं, ते टाल
 सवि द्वंद ॥ ७ ॥ ते आकर्षण सिद्धनुं, नवनि
 कर्षण तेह ॥ ते कषायगिरिनेदपावि, नोकपाय
 दवमेह ॥ ८ ॥ प्रव्रज्जा गुण इम ग्रहे, देखे न
 व जल दोष ॥ मोह महा मद मिटिगयो, हुओ
 जावनो पोष ॥ ९ ॥ जेदाणी बहु पाप थिति,
 कर्म विवरज दीध ॥ पूरवन्नव तस सांजरयो,
 रंगे चारित्र लीध ॥ १० ॥

ढाल पांचमी ॥ थारे माथे पंचरंगी पाघ सो
 नारो बोगले मारुजी एदेशी ॥ हुओ चारित्र
 जत्तो, सुमतिने गुत्तो, विश्वनो तारुजी ॥ श्री

पालते देखी सुगुण गवेषी मोहियो ॥ वारूजी ॥
 प्रणमे परिवारे नक्ति उदारे ॥ वि० ॥ कहे तुज
 गुण थुणिए पातक हणिए आपणां ॥ वा० ॥
 ॥ १ ॥ उपशम असिधारे क्रोधने मारे ॥ वि० ॥
 तु मद्दववंजे मद्गिरि नंजे मोटका ॥ वा० ॥
 मायाविपवेली मूल उखेमी ॥ वि० ॥ तेँ अऊव खी
 ले सहज सलीलें सामटी ॥ वा० ॥ २ ॥ मूर्च्छाज
 ल नरियो गहन गुहरियो ॥ वि० ॥ तेँ तरियो
 दरियो मुत्ति तरीसुं लोचनो ॥ वा० ॥ ए चार क
 पाया नवतरूपाया ॥ वि० ॥ बहु नेदे खेदे संजय
 निकंदी तुं जयो ॥ वा० ॥ ३ ॥ कंदर्पे दर्पे स
 वि सुर जीत्या ॥ वि० ॥ ते तेँ एकण धके विक्र
 म पके मोमीयो ॥ वा० ॥ हरिनादे जाजे गज
 नवि गाजे ॥ वि० ॥ अष्टापद आगल ते प
 ण ठागल सारिखो ॥ वा० ॥ ४ ॥ रति अरति
 निवारि नय पण नारी ॥ वि० ॥ ते मन न
 वि धरिया तेहज नरिया तुजथी ॥ वा० ॥ तेँ

तजिय दुगंढा शी तुज वंढा ॥ वि० ॥ तें
 पूगल अप्पा विहु पखे थप्पा लक्षण ॥ वा० ॥
 ॥ ५ ॥ परिसहनी फोजे तुं निज मोजे ॥ वि० ॥
 नवि नाग्यो लाग्यो रण जेम नागो एकलो ॥
 वा० ॥ उपसर्गने वर्गे तुं अपवर्गे ॥ वि० ॥ चालतां
 नडियो तुं नवि पमियो पाशमा ॥ वा० ॥ ६ ॥ दोय
 चोर उठंता विषम वज्जंता ॥ वि० ॥ धीरज प
 विदंडे तेज प्रचंमे ताडिया ॥ वा० ॥ नइधार
 ण तरंतां पार उतरंतां ॥ वि० ॥ नवि मारग
 लेखा विगत विशेषा देखिये ॥ वा० ॥ ७ ॥
 तिहां जोगनालिका समता नामे ॥ वि० ॥ तें
 जोवा मांमी उत्पत बांमी उद्यमे ॥ वा० ॥ ति
 हां दीठी दूरे अनंदपूरे ॥ वि० ॥ उदासीनता
 शेरी नहि जवफेरी चक्रछे ॥ वा० ॥ ८ ॥ ते
 तुं नवि मूके जोगन चूके ॥ वि० ॥ बाहेरने अं
 तर तुज निरंतर सत्यछे ॥ वा० ॥ नयछे ब
 रंगा तिहां न एकंगा ॥ वि० ॥ तुमे नयपद्ध

कारी ठो अधिकारी मुक्तिना ॥ वा० ॥ ९ ॥ तुं
 मे अनुभव जोगी निजगुण जोगी ॥ वि० ॥ तु
 मे धर्मसंन्यासी शुद्ध-प्रकाशी तत्त्वना ॥ वा० ॥
 तुमे आत्मदरशा उपशम वरसी ॥ वि० ॥ सिं
 चो गुणवाडी थाये ते जामी पुण्यसुं ॥ वा० ॥
 ॥१०॥ अप्रमत्तप्रमत्तते द्विविध कहिज ॥ वि०॥
 जाणज गुण ठाणज एकज जावते ते ग्रह्यो ॥
 वा० ॥ तुमे आगम अगोचर निश्चय संवर ॥
 वि० ॥ फरस्यु नवि तरस्युं चित्त तुम केरुं स्व
 प्रमा ॥ वा० ॥ ११ ॥ तुज मुद्रा सुंदर सुगुण पु
 रंदर ॥ वि०॥ सूचे अति अनोपम उपशम ली
 ला चित्तनी ॥ वा० ॥ जो दहन गहन होए अ
 तरचारी ॥ वि० ॥ तो केम नवपल्लव तरुअर
 दीसे सोहतुं ॥ वा० ॥ १२ ॥ वैरागी त्यागी
 तुं सोजागी ॥ वि० ॥ तुज शुभमति जागी जा
 ठ जागी मूनर्था ॥ वा० ॥ जगपूज्य तु मा
 पुज्य ठे प्यारो ॥ वि० ॥ पहेजा पण न

मियो हिवे उपशमियो आदरयो ॥ वा० ॥ १३ ॥

एम चोथे खंडे रंग अखंमे संथुणयो ॥ वि० ॥

जे मुनि श्रीपाले पंचमी ढाले ते कह्यो ॥ वा० ॥ १४ ॥

दोहरा ॥ अजितसेनमुनि इम थुणी, ते

हने पाट विशाल ॥ तस अंगज गजगति सुम

ति, थापे नृप श्रीपाल ॥ १ ॥ कारज कीधां आ

पणां, आरजने सुख दीध ॥ श्रीपाले बल पुण्य

ने, जे बोल्यो ते कीध ॥ २ ॥

ढाल ठठी ॥ बलद नलावे सौरठीरे लाल

एदेशी ॥ विजय करी श्रीपालजीरे लाल, चंपा

नगरीए कीध प्रवेशरे सोनागी ॥ टल्या लोक

ना सकल कलेशरे ॥ सो० ॥ चंपानगरीते बनी

सुविशेषरे ॥ सो० ॥ शिणगारया हाट अशेषरे ॥

सो० ॥ पटकुलै बाया प्रदेशरे ॥ सो० ॥ जय

जयजणे नरनारियां होलाल ॥ १ ॥ फरके ध्व

जा त्यां चिहुं दिशेरे लाल, पग पग नाटारंजरे

॥ सो० ॥ मांडयांते सोवन थंजरे ॥ सो० ॥ गा

वे गोरी गीत अदंजरे ॥ सो० ॥ जेणे रूपे जी
 तीठे रंजरे ॥ सो० ॥ बंजने पण होए अचंजरे
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ २ ॥ सुरपुरी जंपाजे करारे ला
 ल, चंपा हुइ तेणीवाररे ॥ सो० ॥ मदमोदसमुद्र
 मां साररे ॥ सो० ॥ फलियो साइस मानु उदाररे
 ॥ सो० ॥ त्यां आव्यो हरि अवताररे ॥ सो० ॥
 श्रीपाल ते कुलउद्धाररे ॥ सो० ॥ ज० ॥ ३ ॥
 मोतीय थाल जरी करारे लाल, वधावे घर ना
 ररे ॥ सो० ॥ कर कंकणना रणकाररे ॥ सो० ॥ प
 गे जांजरना ऊमकाररे ॥ सो० ॥ कटिमेखलना
 खलकाररे ॥ सो० ॥ वाजे मांदलना धौंकाररे ॥
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ ४ ॥ सकल नरेसर तिहां मि
 लीरे लाल, अनिपेक करे फिरीं तासरे ॥ सो० ॥
 पितापाटे थापे उल्लासरे ॥ सो० ॥ मयणा अ
 निपेक विशेषरे ॥ सो० ॥ लघुपाटे आ
 ठ ॥ जे जेपरे ॥ सो० ॥ सीधोजे कीधो उद्देशरे ॥
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ ५ ॥ एक मांनि मतिसागररे

लाल, त्रण धवलतणाजे मित्तरे ॥ सो० ॥ ए
 चारे मंत्रि पवित्तरे ॥ सो० ॥ श्रीपालकरे शुच
 चित्तरे ॥ सो० ॥ एतो तेजे हुउ आदित्तरे ॥
 ॥ सो० ॥ खरचे बहलुं तिहां वित्तरे ॥ सो० ॥
 ॥ ज० ॥ ६ ॥ कोसंबी नयरी थकीरे लाल, ते
 डाव्यो धवलनो पुत्तरे ॥ सो० ॥ तेनं नाम विम
 लवे युत्तरे ॥ सो० ॥ तेह शेठ करयो सुमुहुत्तरे
 ॥ सो० ॥ सोवनपट बंध संयुत्तरे ॥ सो० ॥ किधा
 कोष ते अखय सुगुत्तरे ॥ सो० ॥ ज० ॥ ७ ॥ उत्सव
 चैत्य अठाहियारे लाल, विरचावे विधि साररे ॥
 ॥ सो० ॥ सिद्धचक्रनी पुजा उदाररे ॥ सो० ॥
 करे जाणी तस उपकाररे ॥ सो० ॥ तेनो धर्मी
 सहु परिवाररे ॥ सो० ॥ धर्म उल्लसे तस दाररे
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ ८ ॥ चैत्य करावे तेहवाररे ला
 ल, जे स्वर्गसुं मंमे वांदरे ॥ सो० ॥ विधुमंमल
 अमृत आस्वादरे ॥ सो० ॥ ध्वजनिहे लीये अ
 दरे ॥ सो० ॥ तेणे गाजे गुहिरे नादरे ॥ सो० ॥

मोडे कुमतिना उनमादरे ॥ सो० ॥ ज० ॥ ९ ॥
 पड्डह अमार वजवियारे लाल, दीधां दान अ-
 नेकरे ॥ सो० ॥ साचविया सकल विपेकरे ॥ सो०
 समकितनी राखी टेकरे ॥ सो० ॥ न्याये राम क-
 हायो ठेकरे ॥ सो० ॥ ते राजहंस धीजा नेकरे
 ॥ सो० ॥ ज० ॥ १० ॥ अचरज एक तेणे क-
 र्युरे लाल, मन गुप्त ग्रहे हुता जेहरे ॥ सो० ॥
 कर्णादिक नृप ससनेहरे ॥ सो० ॥ छोरुविया स
 घला तेहरे ॥ सो० ॥ निज अभुत चरित अवे-
 हरे ॥ सो० ॥ देखावी निज गुणगेहरे ॥ सो० ॥
 ज० ॥ ११ ॥ श्रीपालप्रतापथी तापियोरे लाल
 विधि शयन करे अरविदरे ॥ सो० ॥ करे जलधि
 वास मुकुंदरे ॥ सो० ॥ हर गंगधरे निसपंदरे ॥
 ॥ सो० ॥ फिरे नाठा सूरज वंदरे ॥ सो० ॥ ज० ॥
 ॥ १२ ॥ तस जगळे गंगा सारिखोरे लाल, तिहां
 अरिअपजग सेवालरे ॥ सो० ॥ कर्पूरमाहे अंगाररे
 ॥ सो० ॥ अरविंदमाहे अलिवालरे ॥ सो० ॥ अन्योन्य

संयोग निहालरे॥सो०॥दिए कवि उपमा तत्काल
 रे ॥ सो० ॥ ज० ॥ १३ ॥ सुरतरु स्वर्गथी ऊत
 रीरे लाल, गयां अगम अगोचर ठामरे॥सो०॥
 जिहां कोइ न जाणे नामरे ॥ सो० ॥ तिहां तप
 स्या करे अनिरामरे ॥ सो० ॥ जब पाम्यां अद
 भूत ठामरे ॥ सो० ॥ तस करअंगुली हुआं ता
 मरे ॥ सो०॥ ज० ॥ १४ ॥ जश प्रताप गुण आ
 गलोरे लाल, गुरुउने गुणवंतरे ॥ सो०॥ पाले रा
 ज महंतरे ॥ सो०॥ वयरीनो करे अंतरे ॥ सो०॥
 मुखपद्म सदा विकसंतरे ॥ सो० ॥ लीलालहेर ध
 रंतरे ॥ सो० ॥ ज० ॥ १५ ॥ मेरुमवे जे अंग
 लोरे लाल, कुशअग्ने जलनिधि नीररे ॥ सो०॥
 फरसे आकाश समीररे ॥ सो० ॥ तारागण ग
 णित गंजीररे ॥ सो० ॥ श्रीपाल सुगुणनो ती
 ररे ॥ सो० ॥ ते पण नवि पामे धीररे ॥ सो०॥
 ज० ॥ १६ ॥ चोथे खंडे पुरी थईरे लाल, ए ठ
 ठी ढाल अनंगरे सो० ॥ इहां उक्ति ने युक्ति

सुचंगरे ॥सो०॥ नवपद महिमानो रंगरे॥सो०॥
 एहथी लहीए ज्ञानतरंगरे॥मो० ॥ बलि विनय
 सुयश सुखसंगरे ॥ सो० ॥ १७ ॥

दोहरा ॥ एहवे राय रिपी जलो, अजितसे
 न जस नाम ॥ उद्दिनाण तस ऊपन्युं, शुद्धं चं
 रण परिणाम ॥ १ ॥ तिण नगरी ते आवियो,
 सुणि आगमन उदंत ॥ रोमांचित श्रीपाल नृप,
 हर्षित हठ अत्यंत ॥ २ ॥ वंदन निमित्ते आ
 वियो, जननी जऊ समेत ॥ मुनि नमि करि
 य प्रदाहिणा, बेठो धर्मसंकेत ॥ ३ ॥ सुणवावां
 ठे धर्म ते, गुरुसन्मुख सुविनीत ॥ गुरु पण तेह
 ने देशना, दे नय समय अधीत ॥ ४ ॥

ढाल सातमी ॥ हस्तिनागपुरवरजलो, जि
 हा पांडुराजा साररे एदेशी ॥ प्राणी वाणी जि
 नतणी, तुमे धारो चित्तमजाररे ॥ मोहे मूझ्यामं
 त फिरो, मोह मूक्ये सुख निरधाररे ॥ मोह मू
 क्ये सुख निरधार, संवेग गुण पालीये ॥ पुण्य

वंतरे पुण्यवंत अनंत विज्ञान, वदे इम केवली
 जगवंतरे ॥ १ ॥ दश दृष्टांते दोहिलो, मानवज
 व ते पण लिद्धरे ॥ आरिजक्षेत्रे जन्मजे, ते दु
 र्लज सुकृत संबंधरे ॥ ते दुर्लज० ॥ संवे० ॥ २ ॥
 आरजक्षेत्रे जनम हुठ, पण उत्तम कुल दुर्लज
 रे ॥ व्याधादीक कुल उपन्ये, शुं आरजक्षेत्र
 अचंजरे ॥ शुं० ॥ संवे० ॥ ३ ॥ कुलपामे पण
 दुलहा, रूप आरोग्य आयु समाजरे ॥ रोगी
 रूपरहित घणा, हीण आयु दीसेठे आजरे ॥ ही० ॥
 ॥ संवे० ॥ ४ ॥ ते सविपामे पण सही, दुल्लहोठे
 सुगुरु संयोगरे ॥ सघले क्षेत्रे नहीं सदा, मुनि पा
 मी जेशुज योगरे ॥ मुनि० ॥ संवे० ॥ ५ ॥ मोटे पु
 ण्ये पामीए, जो सदगुरु संग सुरंगरे ॥ तेरे काठीया
 तोकरे, गुरु दर्शन उत्सव जंगरे ॥ गु० ॥ संवे० ॥
 ॥ ६ ॥ दर्शन पामे गुरुतणुं, धूर्ते व्युदग्राहित चि
 त्तरे ॥ सेवाकरी जन नविशके, होए खांटे जाव अ
 मितरे ॥ हो० ॥ संवे० ॥ ७ ॥ गुरुसेवा पुण्ये ल

ही, पासे पण बेठा नितरे ॥ धर्मश्रवण तोहे दो
 हिलुं, निद्रादिक दिएजो नितरे ॥ नि०॥ संवे० ॥
 ॥ ८ ॥ पामी श्रुत पण दुल्लही, तत्वबुद्धिते नरने
 न होयरे ॥ शृंगारादि कथारसे, श्रोता पण निज गुण
 खोयरे ॥ आ०॥ संवे० ॥ ९ ॥ तत्व कहे पण दुल्लही,
 सदेहणो जाणो संतरे ॥ कोइ निजमति आगल
 करे, कोइ डामाडोल फिरंतरे ॥ नि०॥ सं० ॥ १० ॥ आ
 पा विचारें पामिए, कहो तत्वतणो केम अंतरे ॥
 आलमुआ गुरु शीष्यनो, इहा जाव जो मन वृ
 त्तंतरे ॥ इ० ॥ संवे० ॥ ११ ॥ बठरछ त्र गज आ
 वतां, जेम प्राप्त अप्राप्त विचारें ॥ करे न तहथी
 उगरे, तेम आपमति निरधारें ॥ ते० संवे० ॥ १२ ॥
 आगमने अनुमानथी, बलि ध्यानरसे गुणगेहरें
 ॥ करे जे तत्व गवेपणा, ते पासे नही संदेहरें ॥
 ॥ ते० ॥ संवे० ॥ १३ ॥ तत्व बोधते स्पर्शते, सं
 वेदन अन्य स्वरूपरें ॥ संवेदन बंध्ये हुवे, जे
 स्पर्शते प्रापति रूपरें ॥ जे० ॥ संवे० ॥ १४ ॥

तत्त्वते दशविध धर्मते, क्हांत्यादिक श्रमणनो शु
 द्धरे ॥ धर्मनुं मूल दया कही, ते खंति गुण अ
 विरुद्धरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ १५ ॥ विनयने वश
 ते गुण सवे, तेतो मार्दवने आयत्तरे ॥ जेहने
 मार्दव मनवस्यो, तेणे सवि गुणगण संपत्तरे ॥
 ते० ॥ संवे० ॥ १६ ॥ आर्यव विण नवि शु
 द्धते, नवि धर्म आराधे अशुद्धरे ॥ धर्मविना
 नवि मोक्षते, तेणे रिजु जावी होय बुद्धरे ॥ ते०
 ॥ संवे० ॥ १७ ॥ द्रव्योपकरण देहना, बलि न
 क्तपान शुचि जावरे ॥ जाव शौच जेम नवि च
 ले, तेम कीजे तास बनावरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥
 ॥ १८ ॥ पंचाश्रवथी विरमीए, इंद्रिय निग्रहीजे
 पंचरे ॥ चार कषाय त्रण दंम जे, तजीए ते सं
 जम संचरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ १९ ॥ बांधव धन
 इंद्रिय सुखतणो, बली नय विग्रहनो त्यागरे ॥
 अहंकार ममकारनो, जे करशे ते महाजागरे ॥
 जे० ॥ संवे० ॥ २० ॥ अविसंवादनयोगजे, बली

तन मन वचन अमायरे ॥ सत्य चतुर्विध जिन
 कह्यो, बीजे दर्शने न कहायरे ॥ बी०॥ संवे० ॥
 ॥ २१ ॥ पटविध बाहिर टप कह्युं, अभ्यंतर प
 टविध होयरे ॥ कर्मखपावे ते सही, पडिसोयवृत्ति
 पणे जोयरे ॥ प० ॥ संवे० ॥ २२ ॥ दिव्य उदा
 रिक कामजे, कृत कारीत अनुमाति जेदरे ॥ यो
 ग त्रिके तस वर्जवुं, ते ब्रम्हहरे सवि खेदरे ॥
 ते० ॥ संवे० ॥ २३ ॥ अध्यात्मवेदी कहे, मूर्खा
 ते परिगह नावरे ॥ धर्म अकंचनने नण्यो, ते
 कारण नवजल नावरे ॥ ते०॥ संवे०॥ २४ ॥ पांच
 जेदरे खंतिना, उवयार वियार विवागरे ॥ वचन
 धर्म तिहां त्रणवे, लौकिकदोय अधिक सोजागरे
 ॥ लौ० ॥ संवे०॥ २५ ॥ अनुष्ठान ते चारवे, प्री
 ति नक्तिने वचन असंगरे ॥ त्रण कृमावे दोय
 मा, अयिम दोयमांहे चंगरे ॥ अ० ॥ संवे० ॥
 ॥ २६ ॥ वल्लभ स्त्री जननी तथा, तेइना कृतमां
 जजूत रागरे ॥ पम्कमणादिक कृत्यमा, एम

प्रीति नक्तिनो लागरे ॥ ए० ॥ संवे० ॥ २७ ॥
 वचन ते आगम आशरे, सहेजे थायेते अमंगरे
 ॥ चक्र भ्रमण जेम दंभ्यी, उत्तर तदजावे चंगरे
 ॥ उ० ॥ संवे० ॥ २८ ॥ विष गरल अनुष्ठानवे,
 तद्धेतु अमृतवालि होयरे ॥ त्रिक तजवां देय से
 ववां, ए पांच जेद पण जोयरे ॥ ए० ॥ संवे० ॥
 ॥ २९ ॥ विष किरिया ते जाणीए, जे अशनां
 दिक उद्देशे ॥ विष ततखिण मारे यथा, तेम
 एह नवे फल लेशरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ३० ॥ पर
 नवे इंद्रादिक रमा, इन्हा करतां गर थायरे ॥
 ते कालांतरे फलदीए, मारे जेम इमकियो वायरे ॥
 मा० ॥ संवे० ॥ ३१ ॥ लोक करे तिम जेकरे,
 उठे बेसे समूर्द्धम प्रायेर ॥ विधि विवेक जाणि
 नही, ते अनुष्ठान कहायेर ॥ ते० ॥ संवे० ॥
 ॥ ३२ ॥ तद्धेतु शुद्ध रागथी, विधि शुद्धते अमृ
 त होयरे ॥ सकल विधानजे आचरे, ते दीसे
 बिरला कोयरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ३३ ॥ करण प्री

ति आदर घणो, जिज्ञासा जाणनो संगरे ॥ शु
 न आगम निर्विघ्नता, ए शुद्धक्रियांना लिंगरे ॥
 ए० ॥ संवे० ॥ ३४ ॥ द्रव्यालिंग अनंतां धरणां,
 करी किरिया फल नवि लद्धरे ॥ शुद्धक्रिया तो
 संपजे, पुद्गल आवर्त जो अद्धरे ॥ पु० ॥ संवे० ॥
 ॥ ३५ ॥ अरिहंत सिद्ध तथा जला, आचारजने
 उवळ्ळ यरे ॥ साधु नाण दंशण चरि, तप नव
 पद मुगति उपायरे ॥ त० ॥ संवे० ॥ ३६ ॥ ए नव प
 द ध्याता थकां, प्रगटे निज आतम रूपरे ॥
 आतम दग्शण जेणें करयुं, तेणे मुद्यो नवजय
 कूपरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ३७ ॥ क्कण अर्धजे अ
 घटले, ते न टले नवनी कोडीरे ॥ तपस्या कर
 तां अति घणी, नही ज्ञानतणीवे जोमीरे ॥ न० ॥
 संवे० ॥ ३८ ॥ आतम ज्ञाने मगनजे, ते सवि
 पुद्गलनो खेलरे वंदजाल करी लेखवे, नमिले
 तिहा ॥ न० ॥ संवे० ॥ ९
 जा० ; आवरण

द्वरे ॥ आरमज्ञानते दुःखहरे, एहिज शिवहेतु
प्रसिद्धरे ॥ ए० ॥ संवे० ॥ ४० ॥ चोथे खंमे सात
मी, ढाल पूरण थइ खासरे ॥ नवपदमहीमा जे
सुणे, ते पामे सुजश विलासरे ॥ ते० ॥ संवे० ॥ ४१ ॥

दोहरा ॥ इणपरे देइ देशना, रह्या जाम मुनि
चंद ॥ तव श्रीपालते विनवे, धरतो विनय अमंद
॥ १ ॥ जगवंत कहो कुण कर्मथी, बालपणे मुज देह
॥ महारोग ए ऊपन्यो, कुण सुकृते हुन ठेह ॥ २ ॥
कवण कर्मथी में लही, ठाम ठाम बहु ऋद्ध ॥
कवण कुकर्म हूं पडयो, गुणनिधि जलनिधिमध्य
॥ ३ ॥ कवण नीच कर्म हुन, दुबपणुं मुनिराय
॥ मुजने ए सवि किम हुन, कहिये करि
सुपसाय ॥ ४ ॥

ढाल आठमी ॥ बे बे मुनिवर वहिरण पांग
रघारे एदेशी ॥ सांजलजो हिवे कर्मविपाक कहे
मुनिरे, कांइ कीधुं कीधुं कर्म न जायरे ॥ कर्म व
शे होय सघली मुखदुख जीवनेरे, कर्मथी बली

यो कोइ नव थायरे ॥ सां० ॥ १ ॥ नरतक्षेत्रमां
 नयर हिरण्यपुर हुउरे, महीपति मोटोते श्रीकांत
 रे ॥ व्यमन तेहने लग्युं आहेमातणरे, कांइ
 वारे वारे राणी एकांतरे ॥ सां० ॥ २ ॥ राणी
 तेहनी जाणो सुगुणा श्रीमतिरे, समकित शी
 लनी रेषरे ॥ जिनधर्मे मति रुमी कुडी नहि म
 नेरे, दाखे दाखे शीख विशेषरे ॥ सां० ॥ ३ ॥
 पियु तुजने आहेमे जावुं नवि घटेरे, जेहने के
 डेठे नरकनी नीतिरे ॥ धरणीने परणी बे लाजे
 तुजथकीरे, मांडी जेणे जीव हिंसानी अनीतिरे
 ॥ सां० ॥ ४ ॥ मुखे तृण दीधे अरिपण मूके जी
 वतोरे, एवोठे रुडो क्षत्रीनो आचाररे ॥ तृण
 आहार सदाजे मृगपशु आचररे, तेहने जे मारे
 आहेडे ते गामरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ ससलां नासे
 पासे नही, आयुव धरेरे, राणीजाया बाणी ते
 हने केडरे ॥ जे लागेते आगे दुःख लेशे घणारे,
 नाठासुं बलन करे क्षत्री वेडरे ॥ सां० ॥ ६ ॥

अबल कुलासी ऊखने निज द्रुम पीडतारे, ख-
 गते मृगने तृण नद्धीने दोषरे ॥ हणतां नृपने
 न होय एम जे उपदिशेरे, तेणे कीधां तस हिं
 सक कुल पोषरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ हिंमानीते खिसा
 सघली सांजलीरे, हिंमा नवि रुमी किणही हेतेरे ॥
 आप संतापे परसंतापे पापी उरे, आहेडीते जाणो
 कुलमां केतरे ॥ सां० ॥ ८ ॥ जाउरसातल विक्रमजे
 दुर्बल हणेरे, एतो लेइया कृष्णनो घन परिणामरे
 ॥ जुंडी करणीथी जग आपजश पामीएरे, ल
 हालो खातां मुख होयते श्यामरे ॥ सां० ॥ ९ ॥
 एहवा राणीए वयण कह्यां पण रायनेरे, चित्तमांहे
 नवि जाग्यो कोइ प्रतिबोधरे ॥ घन वरसे पण न
 वि जिजे मगसेलीउरे, मूरखने हित उपदेशे हो
 ये क्रोधेरे ॥ १० ॥ अन्य दिवस शतसात डल्लं
 ठे परवर्धेरे, मृगया संगे आव्यो गहने रायरे ॥
 मुनि तिहां देखां कहे ए व्याधिठे कोढीयोरे, उ
 छंठते मारे देइ घन घायरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ जे

म जेम तामे मुनिने तेम नृपने हुएरे, हास्ये त
 णो रस मुनिमनते रस शातरे ॥ करी उपमर्ग
 ने मृगयाथी बल्या सातसेरे, नृपसाथेते पहोता
 घरे मन खांतरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ अन्य दिवस
 मृगपूठे धायो एकलोरे, मृगलो पेठो नदी तट
 रानरे ॥ जूलो नृपते देखे नदी तट साधुनेरे, बो
 ले ते जलमा जाली कानरे ॥ सां० ॥ १३ ॥ कां
 इच्छा करुणा आवी काढ्यो नीरंथीरे, घरे आवी
 ने केहे राणीने वातरे ॥ सा कहे बीजानी पण
 हिंसा दुःख दिएरे, जन्म अनंतादिए ऋषिघात
 रे ॥ सां० ॥ १४ ॥ राजा जापे नवि करशुं फि
 री एश्वरे, वित्या केटलाएक वासर जामरे ॥ गो
 ख थकी मुनि दीठो फिगतो गोचरीरे, विसारी
 घग्णीनी शिद्धा तामरे ॥ सां० ॥ १५ ॥ नग
 री बटाले कहे नृप छंठनेरे, काढो बाहेर जालो
 एहने कंठरे ॥ राणीए दीठा गोखपकी ते काढ
 तारे, राजाने आदेशे लाग्या छंठरे ॥ सां० ॥ १६ ॥

राणी रूठी राजाने कहे ए शुं करोरे, पोतानुं बोल्युं
 पालोन वचनरे ॥ मुनि उपसर्गे स्वर्गे जावुं दोहि
 लुरे, नरके जावा लाग्युं ते तुज मनरे ॥ सां० ॥ १७ ॥
 नृप उपशमिउ नमियो मुनिने तेमी घररे, रा
 णी जापे राजा ए अन्नाणरे ॥ मुनि उपसर्गे पा
 प कर्युं इणे मोटकुरे, ए छूटे ते कहिये कांड वि
 न्नाणरे ॥ सां० ॥ १८ ॥ सज्जन जे न्छंडुं करतां
 रूडुं करेरे, तेहनं जगमां रहेशे नाम प्रकाशरे ॥
 आंबो पत्तर मारे तेहने फल दिएरे, चंदन आ
 पे कापे तेहने वासरे ॥ सां० ॥ १९ ॥ मुनि क
 हे मोटा पातकनुं शुं पालवुरे, तो प्रण जो होय
 एहने जाव उल्लासरे ॥ नवपद जपतां तपतां ते
 हनुं तप नलुरे, आराध्ये सिद्धचक्र होए अध
 नाशरे ॥ सां० ॥ २० ॥ पूजा तप विधि शी
 खी आराध्यो नृपेरे, राणी साथेते सिद्धचक्र वि
 ख्यातरे ॥ ऊजमणामांहे आठे राणीनी सहीरे,
 अनुमोदे वली नृपनुं तप शतसातरे ॥ सां० ॥

॥ २१ ॥ अन्य दिवसे गयाते सिंह नृप गाममे
 रे, नांजी तेवलीयां लेइ गोवंगरे ॥ केड करी
 ने सिंह मारयाते मरीरे, कोढी हुआ क्वात्रि मुं
 नि उपसंगरे ॥ सां० ॥ २२ ॥ पुण्यप्रभावे
 राजा हुन श्रीकांत तुंरे, श्रीमति राणी मयणा
 सुंदरी तुजरे ॥ कुष्टिपणु जलमज्जन डुंवपणु तुमेरे,
 पाम्या ए मुनि आशातनाफल गुजरे ॥ सां० ॥
 ॥ २३ ॥ सिद्धचक्र श्रीमति वयणे आराधीयेरे,
 तेहथी पाम्यो सघले ऋद्धि विशेषरे ॥ आठ स
 खी राणीनुं तप अनुनोदियुगे, तेणेते लघु देवी
 हुइ तुज शून वेपरे ॥ सां० ॥ २४ ॥ साप खाउ
 तुज आठमीए कह्युं सोक्यनेरे, तेणे सापे मंपी
 न टले पापरे ॥ धर्म प्रशंसा करी राणा हुआ
 सातसेरे, घात विधुरथा सिंह लीए व्रत आपरे
 ॥ सां० ॥ २५ ॥ मास आणशणे अजितसेनते हुं
 हुनरे, बालपणे तुज राज्य हरयो ते गणरे ॥ बां
 धी पुरव वेरे तुज आगल धरयोरे, पूर्व आभ्या

से मुजने आव्युं नाणरे ॥ सां० ॥ २६ ॥ जाति
 संनारी संजम ग्रहि लहि उहिनेरे, इहां आव्या
 जेणे जेवां कीधां कर्मरे ॥ तेहने तेवां आव्या
 फल सुख दुःखतणारे, सदुगुरु पाखे जाणे कु-
 ण ए मर्मरे ॥ सां० ॥ २७ ॥ चौथे खंडे ढाल
 थइ ए आठमीरे, एहमा गायो नवपद महिमा
 साररे ॥ श्री जिन विनये सुजश लह्यो एहथी-
 रे, जगमां होएनिश्चे जेजेकाररे ॥ सां० ॥ २८ ॥
 दोहरा ॥ एम सांजली श्रीपालनृप, चिते चि-
 त्तमकार ॥ अहो अहो जव नाटके, लहिए इस्या
 प्रकार ॥ १ ॥ कहे गुरुने हमणां नथी, मुजचा
 रित्रनि शक्ति ॥ करि पमाय तेणे उपदिशो, उ-
 चित करण पडिवति ॥ २ ॥ बलतुं मुनि जाषे नृ-
 पति, निश्चे गति तुं जोय ॥ कर्म जोग फल तु-
 ज घणुं, इह जव चरम न होय ॥ ३ ॥ पण न
 वपद आराधतां, पामिश नवमुंसगग ॥ नरसुख
 सुरसुख अनुजवी, नवमे जव अपवगग ॥ ४ ॥ ते

सुणि रोमांचित हृत्त, निजघर पहोतो जूष ॥ मु
 नि पण विहरंतो गंगो, ठाणांतर अनुरूप ॥५॥
 ढाल नवमी ॥ कंत तमाकु परिहरोरे एदेशी
 ॥ हारेलाल हिवे नरपाति श्रीपालते, निज परि
 वारसंयुक्त मेरे लाल ॥ आराधे सिद्धचक्रने, वि
 धि सहित ग्रही सुमुहुत्त मेरे लाल ॥ मनने म
 होटे मोजमां ॥ १ ॥ मयणासुंदरी त्यारे जणे,
 पूर्वे पूज्यो सिद्धचक्र मेरे लाल ॥ धन त्यारे थो
 डु हतुं, हमणा तो ऋद्धि शक्र ॥ मे० ॥ म०॥
 ॥ २ ॥ धन मोटे ठोटुं करे, जे करणी धर्मनुं ते
 ह ॥ मे० ॥ फल पूरूं पामे नहीं, मत करजो
 तिहां संदेह ॥ मे० ॥ म० ॥ ३ ॥ विस्तारे नव
 पद तणी, तेणे पूजा करो सुविवेक ॥ मे० ॥ धननो
 लाहो लीजीए, राखो मोटी टेक ॥ मे० ॥ म० ॥ ४ ॥
 मयणा वयणा मन धरी, गुरु जक्ति शक्ति अनु
 सार ॥ मे० ॥ अरिहंतादिक पद जलां, आराधे
 ते नवपद सार ॥ मे० ॥ म० ॥ ५ ॥ नव जिन

घर नव पमिमा जली, नव जीर्णोद्धार करावी
 ॥ मे० ॥ नानाविध पूजा करी, जिन आराधन
 शुभ जावि ॥ मे० ॥ म०॥ ६ ॥ एम सिद्धतणी
 प्रतिमातणु, पूजन त्रिहुं काल प्रमाण ॥ मे०॥
 तन्मय ध्याने सिद्धनुं, करे आराधना अजिराम
 ॥ मे० ॥ म० ॥ ७ ॥ आदर नक्तिने वंदना,
 वेयावच्चादिक लग्न ॥ मे०॥ शुश्रुषा विधि सा
 चवी, आराधे सूरि समग्न ॥ मे०॥ म०॥ ८ ॥ अध्या
 पक नणता प्रते, वसनासन ठाण बनाय ॥ मे०॥
 द्विविध नक्ति करतो थको, आराधे नृप उवळा
 य ॥ मे०॥ ९ ॥ नमन वंदन अजिगमनथी, व
 सही अशनादिक दान ॥ मे०॥ करतो वेयावच्च
 घणुं, आराधे मुनिपद ठाण ॥ मे०॥ म०॥ १० ॥
 तीर्थयात्रा करी अतिघणी, संघ पूजाने रहजत्त ॥
 मे० ॥ आराधे दर्शनपद जलुं, शासन उन्नति
 दृढ चित्त ॥ मे०॥ म०॥ ११ ॥ सिद्धांत लिखावी तेह
 ने, फलते अर्चादिक हेत ॥ मे०॥ नाणपद आ

राधन करे, सज्जाय उचित-मन देत ॥ मे०॥ १२॥
 व्रत नियमादिक पालतो, विरतिनी भक्ति करंत
 ॥ मे०॥ आराधे चाग्रिधर्मने, रागी जति धर्म
 एकंत ॥ मे०॥ म०॥ १३॥ तजी इच्छा इह परलो
 कनी, थइ सघले अप्रतिबद्ध ॥ मे०॥ पट बाह्य
 अभ्यंतर पटे करी, आराधो नवपद शुद्ध ॥ मे०॥
 म०॥ १४ ॥ उत्तम नव पद द्रव्य जावथी, शुभ
 भक्ति करी श्रीपाल ॥ मे०॥ आराधे सिद्धचक्र
 ने, नित पामे मंगल माल ॥ मे०॥ म०॥ १५ ॥
 एम सिद्धचक्रनी सेवना, करी साढा चार ते वर्ष
 ॥ मे० ॥ हिवे ऊजमणा विधितणो, पूरे तप उप
 न्यो हर्ष ॥ मे० ॥ म० ॥ १६ ॥ चौथे खमे प
 री थइ, ढाल नवमी चढते रंग ॥ मे०॥ विनयसु
 जग सुख ते लहे, सिद्धचक्र थुणेजे चंग ॥ मे०॥ १७॥
 दोहरा ॥ हिवे राजा निज राजनी, ललित
 णे अनुसार ॥ ऊजमण तेह तपतणुं, मांडे अ
 तिहि उदार ॥ १ ॥

ढाल दशमी॥जोलीमा हंसारे विषय न राची
 ए एदेशी ॥ विस्तिरण जिन जुवनने विरचाण, पु
 एय त्रवेदिक पीठ ॥ चंद्र चांद्रिकारे धवल जुवन
 तले, नवरंग चित्र विसिठ ॥ १ ॥ तप ऊजम
 णुरे इणीपरे कीजीए, जेम विरचे श्रीपाल ॥ त
 प फल वाधेरे ऊजमणुं करे, जेम जलपंकजनाल
 ॥ तप० ॥ २ ॥ पंच वरणनारे शालि प्रमुख न
 ला, मंत्र पवित्र करी धाना॥सिद्धचक्रनीरे रचना
 तिहांकरे, संपूरण शुभ ध्यान ॥ त० ॥ ३ ॥ अ
 गिहंतादिक नवपदने विषे, श्रीफल गोल ठवंत ॥
 सामान्ये घृत गांठ सहित सवे, नृप मन अवि
 केरे खंत ॥ त० ॥ ४ ॥ जिन पद धवलुंरे गोल
 कते ठवे, शुचि कर्ककेतन अठ ॥ चोत्रीशे हीरे
 रे सहित विराजतुं, गिरूऊ सगुण गरीठ ॥ त० ॥
 ॥ ५ ॥ सिद्धपदे अरुमाणिकय रातमां, बालि इग
 तीश प्रवाल ॥ घृतमृण विलेपित गोलक तेठवे,
 मुक्ति राग विशाल ॥ त० ॥ ६ ॥ पण मणिपीत

ઠગ્રીશ ગોમેદેફે, સુરિપદે ઠવે' ગોલ ॥ નીલર
 યણ પંચવીશ પાઠક પદે, ઠવે વિપુલ રંગ રોલ
 ॥ ત૦ ॥ ૭ ॥ રિષ્ટરતન સગવીશતે મુનિપદે,
 પંચરાય પટ અંક ॥ સગસઠ એગવન્ન સિત્તરી અં
 ચાસતે, મુગતા શેષ નિશંક ॥ ત૦ ॥ ૮ ॥ તે તે
 વરણેરે ચીંગાદિક ઠવે, નવપદનણેરે હદેશ ॥ થી
 જી પણ સ્થામગ્રી મોટકી, માંડે તેહ નરેશ ॥
 ત૦ ॥ ૯ ॥ વીજોરાં સ્વારક દામિમ જલાં, કેલાં
 સરસ નારિંગ ॥ પુંગીફલ વલી કલશ કંચન
 તણા, રતન પુંજ અતિ ચંગ ॥ ત૦ ॥ ૧૦ ॥ જે
 જે ઠામેરે જે ઠવવું ઘટે, તેતે ઠવેરે નરિંદ ॥ ગ્રહ
 દિગ્પાલપદે ફલ ફૂલમા, ધરે સર્વણ આનંદ ॥
 ત૦ ॥ ૧૧ ॥ ગુરુ વિસ્તારેરે ઝજમનુ કરી, જ
 રસવ ન્હવણ કરાય ॥ આઠ પ્રકારિરે જિનપૂના
 કરે, મંગલ અવસર થાય ॥ ત૦ ॥ ૧૨ ॥ સઘ તે
 વોરે તિલક માલાતણું મંગલ નૃપને કરેહ ॥
 શ્રીજિનમાન્ધેરે સંઘે જે કરયો, મંગલ તે શિવ દે

ई ॥ त० ॥ १३ ॥ तप ऊजमणुंरे वीर्य उल्लासने,
 तेइज मुगति निदान ॥ सर्व अनव्यारे तप पू
 रां करयां, पण नाव्युं प्रणिधान ॥ त० ॥ १४ ॥
 लघु कर्मीनेरे किरिया फल दीए, सफल मुगुरु
 उवएस ॥ सिरहोए तिहां कूप खनन घटे, नहि
 तो होय कलेश ॥ त० ॥ १५ ॥ सफल हुजुं सवी
 नृप श्रीपालने, द्रव्य जाव जस शुद्ध ॥ मत को
 इ राचोरे काचो मत लेइ, साचो बेज नय शुद्ध
 ॥ त० ॥ १६ ॥ चोथे खंडेरे दशमी ढालए, पूर
 ण हुइ सुप्रमाण ॥ श्री जिन विनय सुजश न
 कि करी, पगपग होय कल्याण ॥ त० ॥ १७ ॥
 दोहरा ॥ नमस्कार कहे एहवा, हिवे गंजीर
 उदार ॥ योगीसर पण ते सुणी, चमके हृदय
 मजार ॥ १ ॥ वप्पयठंद ॥ जो धुर सिरि अरि
 हंत, मूल दृढ पीठ पइठो ॥ सिद्ध सूरि उवजा
 य, साहु पास गिरिठो ॥ दंशण नाण चरि
 सुंदरू ॥ तत्तद्धर सबग ॥ ल

द्वि गुरुपयदल तुंबरू, दिशिपाल जह्नु जह्नुणि
 पमुह ॥ सुर असुर कुसुमेहिं अलंकियो, सो सिद्ध
 चक्र गुरु कप्पतरु ॥ अंह मन वंछित दियो ॥
 ॥ १ ॥ नमस्कार करि उच्चरी, शक्रस्तव श्रीपाल
 ॥ नवपद स्तवन कहे मुदा, स्वरपद वर्ण विशा
 ल ॥ २ ॥ भंगलतूर वजावते, नाचंते वर पात्र
 ॥ गायंते बहु विधि धवल, विरुद पठंते वात्र ॥
 ॥ ३ ॥ संघपूजा साहमिवठल, करी तेह नरना
 थ ॥ शासन जैन प्रजावतो, मेले शिवपुर साथ
 ॥ ४ ॥ पटदेवी परिवार अन्य, साथे अविहल
 राग ॥ आराधे सिद्धचक्रने, पामे जवजल ता
 ग ॥ ५ ॥ त्रिजुवनपालादिक तनय, मयणादिक
 संयोग ॥ नव निरुपम गुणनिधि हुआ, जोग
 वता सुख जोग ॥ ६ ॥ गय रह सहसते नवहु
 आ, नव लख जच्च तुरंग ॥ पति हुआ नव
 कोडि तस, राजनीति नवरंग ॥ ७ ॥ राज नि
 कंटक पालतां, नव शत वरस विलीन ॥ थापी

तिहुंयण पालने, नृप हुउ नवपदलीन ॥ ८ ॥

ढाल इगीयारमी ॥ श्री श्रीमंदर साहेब आ
गे एदेशी ॥ त्रीजे नवगर थानक तप करी, जे
ए बांध्युं जिन नाम ॥ चोसट इंद्रे पूजित जे जिन,
कोजे तास प्रणामरे नवीका ॥ सिद्धचक्र पद वं
दो, जिम चिरकाले नंदारे ॥ न० ॥ सि० ॥ १ ॥
ए आंकणी ॥ जेहने होए कल्याणक दिवसे, न
रके पण अजुआलुं ॥ सकल अधिक गुण अ
तिशय धारी, ते जिन नभी अध टालुंरे ॥ न०
॥ सि० ॥ २ ॥ जे तिहुनाण समग्ग उपन्या,
जोग करम क्षिण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शिक्षा
दिथे जनने, ते नमिये जिन नाणीरे ॥ न० ॥ सि० ॥
॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहीए, निर्यामक स
बवाह ॥ उपमा एहवी जेहने बाजे, ते जिन नमिए
उबाहरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारन
जस बाजे, पांत्रीश गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिवों
ध करे जगजनने, ते जिन नमिए प्राणीरे ॥ न०

॥ સિ૦ ॥ ૫ ॥ મમય પણ સંતર અણ ફગસો,
 ચરમ તિનાગ-વિશેષ ॥ અવગાહન લેહી જે શિ
 વ પહોતા, સિદ્ધ નમં તે અશેપરે ॥ જ૦ ॥
 ॥ સિ૦ ॥ ૬ ॥ પૂર્વ પ્રયોગને ગતિ પરિણામે, બંધ
 ન ઘેદ અસંગે ॥ સમય એક ઊરધ ગતિ જેહ
 ની, તે સિદ્ધ સમરૂં રંગેરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૭ ॥
 નિર્મલ સિદ્ધ ઢિલાને ઊપર, જોયણ એક લો
 કંત ॥ સાદિ અનંત તિહા સ્થિતિ જેહની, તે
 સિદ્ધ પ્રણમો સંતરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૮ ॥ જ
 ણે પણ નશકે કહી પાગુણ, પ્રાકૃત તેમ ગુણ
 જાસ ॥ ઉપમાવિણ નાળી જવમાહે, તે સિદ્ધ દિ
 યો ઝલ્લાસરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૯ ॥ જ્યોતિસું
 જ્યોતિ મિલી જસ અનુપમ, વિરમી મક્કલ ઉપા
 ધિ ॥ આતમરામ રમાવતિ સમરો, તે સિદ્ધ સ
 હજ સમાધિરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૧૦ ॥ પંચ આ
 ચાર જે સુધા પાલે, મારગ નાપે સાચું ॥ તે આ
 ચારિજ નમિએ તેહસુ, પ્રેમ કરીજે જાચુંરે ॥

ज०॥ सि०॥ ११ ॥ वर ठत्रीश गुणे करी सोहे,
 युग प्रधान जनमोहे ॥ जग बोहे नरहे खिण को
 हे, मूरि नमूं ते जोहेरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १२ ॥
 नित अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहि विकथा न क
 पाय ॥ जेहने ते आचारिज नमिए, अकलुप अ
 मल अमायरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दिये
 सारण वारण चोयण, पमिचोयण वलि जनने ॥
 पटधारी गढथंज आचारज, ते मान्या मुनि म
 ननेरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अछमिए जिन
 सूरज केवल, वंदीजे जगदीवो ॥ जुवन पदारथ
 प्रगट पटुते, आचारज चिरंजीवोरे ॥ ज० ॥
 सि० ॥ १५ ॥ द्वादश अंग सज्जाय करेते, पारग
 धारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिकते, न
 मो उवज्जाय उल्लासरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १६ ॥
 अर्थ सूत्रने दान विनागे, आचारज उवज्जाय॥
 जब त्रणे लहे जे शिव संपद, नमिए ते सुप
 सायरे ॥ ज०॥ सि० ॥ १७ ॥ मुख शिष्य नि

પાઙ્ગે પ્રજ્ઞ, પહાણને પેલ્લવ આણે ॥ તે ઉવજ્ઞાય
 સકલજન પૂજિત, મૂત્રઅરથ સવિ જાણેરે ॥ જ૦
 સિ૦ ॥ ૧૮ ॥ રાજકૂવર સરસ્વા ગણચિંતક,
 આચારજ પદયોગ ॥ જે ઉવજ્ઞાય સદાતે નમતાં,
 નાથે જવનય શોગરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૧૯ ॥ વ વ
 નાચંદનરસ સમ વયણે, અહિત તાપ સવિ
 ટાલે ॥ તે ઉવજ્ઞાય નમીજે જેવલી, જિનેશાસન
 ઝૂજૂઆલેરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૦ ॥ જિમ ત
 રૂપૂલે જમરો વેસે, પીડા તસન ઉપાય ॥ લ
 ઇ રસને આતમ સંતોષે, તેમ મુનિ ગોચરી જા
 યરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૧ ॥ પંચેન્દ્રિયને જે નિત્ય
 જીતે, પટકાયક પ્રતિપાલ ॥ સંજમ સતરે પ્રકારે
 આરાધે, વંદુ તેહ દયાલરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૨ ॥
 અંઢારસહસ સિલાંગના ધોરી, અચલ આચાર
 ચરિત્ર ॥ મુનિમહંત જયણાયુત વંદી, કીજે મન્મ
 પવિત્રરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૩ ॥ નવવિધ બ્રમ્હ
 ગુપ્તિ જે પાલે, બારસવિહ તપ શૂરા ॥ એહવા મુ

નિ નમિએ જો પ્રગટે, પૂજ્ય પુણ્ય અંકુરે ॥ જ૦ ॥
 સિ૦ ॥ ૨૪ ॥ સોનાતણાં પરે પરીક્ષા દામે, દિન
 દિન ચઢતે વાના ॥ મંજમ સ્વપ કરતા મુનિ નમિએ, દે
 શ કાલ અનુમાને ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૫ ॥ શુદ્ધ દેવ
 ગુરુ ધર્મ પરીક્ષા, સર્વદેહના પરિણામ ॥ જેહ પામીજે
 તેહ નમિજે, સમ્યક દર્શન નામરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥
 ॥ ૨૬ ॥ મલઉપશમ ક્ષયઉપશમ ક્ષયથી, જેહોય ત્રિ
 વિધ અનંગ ॥ સમ્યગદર્શન તેહ નમીજે, જિન ધર્મે દ
 ઢ રંગેરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૭ ॥ પાંચ વાર ઉપ
 શમિયે લહીજે, સ્વય ઉવસમિય અસંખ ॥ એક
 વાર ક્ષાયકતે સમ્યક, દર્શન નમીએ અસંખરે ॥
 જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૨૮ ॥ જેવિણ નાણ પ્રમાણ
 નહોએ, ચારિત્રતરુ નવિ ફલિયું ॥ સુખ નિર્વાણ
 ન જેવિણ લહિએ, સમકિત દર્શન બલિયું ॥ જ૦ ॥
 સિ૦ ॥ ૨૯ ॥ સમસઠ બોલેજે અલંકરયું, જ્ઞા
 ન ચારિત્રનું મૂલ ॥ સમકિત દર્શન તે નિત પ્રણ
 , શિવપંથે અનુકુલરે ॥ જ૦ ॥ સિ૦ ॥ ૩૦ ॥

नद अन्नदण जेविण लहिए, पेय अपेय विचार
 रा॥कृत्य अकृत्यण जेविण लहिय, ज्ञान ते सकल आ
 धाररे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञानने प
 री अहिंसा, श्रीसिद्धाते जाण्युं ॥ ज्ञानने वंदो
 ज्ञानमानंदो, ज्ञानीए शिवसुख चारुयुं ॥ न० ॥
 ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रियानुं मूलजे श्रद्धा,
 तेहनं मूल जे कहिए ॥ तेह ज्ञान नित वंदीजे,
 तेहविण कहो केम रहीएरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३३ ॥
 पाच ज्ञानमाहे जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक ते
 ह ॥ दीपक परे विजुवन उपकारी, बलि जेम र
 वि शशि मेहरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक-ऊर्ध्व
 अध तिर्यग ज्योतिष, वैमानिकने सिद्धि ॥ लोक
 अलोक प्रगटसवि जेहथी, ते ज्ञाने मुज मुद्धिरे
 ॥ न० ॥ सि० ॥ ३५ ॥ देशविरतिने सर्वविरति
 जे, गृही यतिने अन्निराम ॥ ते चरित्र जगत्त ज
 यवतुं, कीजे तास प्रणानरे ॥ न० ॥ सि० ॥
 ॥ ३६ ॥ तृणपरे जे पटखंड मुख ठामी, चक्रव

तिं पण वरियुं ॥ ते चारित्र अह्य मुख कार
 ण, ते में मनमाहे धरियुरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३७ ॥
 हुआ रांक पण जेह आदरी, पूजित इंद्र नरिं
 दे ॥ अशरण शरण चरणते वंदू, पूयूं ज्ञान आ
 नंदेरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ३८ ॥ वारामास पर्याय जे
 हने, अनुत्तर सुख अतिक्रमिए ॥ शुक्ल शुक्ल अ
 निजात्यत ऊपर, ते चारित्रने नमिएरे ॥ ज० ॥
 ॥ सि० ॥ ३९ ॥ चयते आठ कर्मनो संचय, रि
 क्त करेजे तेह ॥ चारित्र नाम निरुक्तिए जाण्युं,
 ते वंदू गुणगेहरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४० ॥ जाण
 तां त्रिहं ज्ञाने संयुक्त, तेचव मुक्ति जिणंद ॥ जे
 ह आदरे कर्म खपेवा, ते तप शिवतरु वंदरे ॥
 ज० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकांचित पण ह्य
 जाय, क्षमा सहितते करतां ॥ ते तप नमिए जे
 ह दीपावे, जिनशासन उजमंतारे ॥ ज० ॥ सि०
 ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लाद्धि, उपजे जा
 स प्रजावे ॥ अष्ट महा सिद्धि नवनिधि प्रगटे,

नमीए ते तप जावेरे ॥ ज०॥सि० ॥४३॥ फल
 शिव सुख महोटु सुरनरवर, संपात्ति जेहनुं फूल
 ॥ ते तप सुरतरू सरिखुं वंदु, सम मकरंद अ
 मूलरे ॥ ज०॥ सि० ॥४४॥ सर्व मंगलमांहे प
 हेलुं मंगल, वर्णवीए जे ग्रंथे ॥ ते तपपद त्रिहुं
 काल नमीजे, वरसहाय शिवपंथेरे ॥ ज० ॥
 सि०॥ ४५ ॥ इम नवपद थुणतो तिहां लीनो, हुउ
 तन्मय श्रीपाल ॥ सुजश विठासे चोथे खंमे, एह
 इगीयारमी ढालरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ४६ ॥

दोहरा ॥ इम नव पद थुणतो थको, ते
 ध्याने श्रीपाल ॥ पाम्यो पूरण आउपो, नवमो
 कल्प विशाल ॥ १ ॥ राणी मयणा प्रमुख सवि,
 माता पण शुभ ध्यान ॥ आउपे तिहां ऊपन्यां, मुख
 जोगवे विमान ॥ २ ॥ नर नव अंतर स्वर्गते,
 चार वार लहि सर्व ॥ नवमे नव शिव पामजे,
 गोतम कहे निगर्व ॥ ३ ॥ ते निसुणी श्रेणिक
 कहं, नव पद उलसित जाव ॥ अहो नवपद म

हिमा वनो, एउे नवजल नाव ॥ ४ ॥ बलतुं गौ
 तम गुरु कहे, एक एक पद नक्ति ॥ देवपाल मु
 ख सुख लह्यां, नवपद महिमा तहति ॥ ५ ॥
 किंबहुना मगधेश तुं, ए पद नक्ति प्रनाव ॥
 होइश तीर्थकर प्रथम, निश्चय ए मन नाव ॥
 ॥ ६ ॥ गौतम वचन सुणी इस्यां, उठयो मगध
 नरेंद्र ॥ वधामणी आवी तदा, आव्या वीर जि
 णेंद्र ॥ ७ ॥ देवें समोवसरण रच्युं, कुसुमवृष्टि
 त्यां कीध ॥ अंबर गाजे दुंदुभि, वर अशोक
 सुप्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सिंहासन माम्युं तिहां, चामर ठ
 न्र ढलंत ॥ दिव्य ध्वनि दिए देशना, प्रजु नामंफल
 वंत ॥ ९ ॥ वधामणी देइ वांदवा, आव्यो श्रेणि
 कंराय ॥ वांदी बेठो परखदा, उचित थानके आय
 ॥ १० ॥ श्रेणीक उद्देशी कहे, नवपद महिमा वीर ॥ न
 वपद सेवे बहु नविक, पाम्या नवजल तरि ॥ ११ ॥
 आराधननुं मूल तस, आतम नाव अवेह ॥ ते
 ए नवपद ठे आतमा, नवमाहि पद तेह ॥ १२ ॥

ध्येय समापंति होय तव, ध्याता ध्यान प्रमाण॥
 तेणे नवपद आतमा, जाणे कोइ सुजाण॥१३॥
 लेइ असंग क्रियाबले, जस ध्याने जेणे सिद्धि॥तेणे
 तेहवुं पद अनुभव्युं, घटमां सकल समृद्धि॥१४॥

ढाल बारमी ॥ स्वामि श्रीमंधर उपदेशे, ए दे
 शी ॥ अरिहंत मद् ध्यातो थको, दबह गुण प
 जायरे ॥ नेद वेद करी आतमा, अरिहंतरूपा
 थायरे ॥ १ ॥ विर जिणेसर उपदिशे, मानालजो
 चित्त लायरे ॥ आतमध्याने आतमा, ऋद्धी मिले
 सवि आइरे ॥ वी० ॥ २ ॥ रूपातीत स्वभावजे, के
 वल दंसण नाणीरे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होए
 सिद्धगुण खाणीरे ॥ वी० ॥ ३ ॥ ध्यातां आचारिज न
 ला, माहामंत्र शुच ध्यानीरे ॥ पंच प्रस्थाने आ
 तमा, आचारिज होए प्रार्णारे ॥ वी० ॥ ४ ॥ तप
 सक्काए रत सदा, द्वादश अंगनो ध्यातारे ॥ उ
 पाध्याय ए आतमा, जगबंधव जगभ्रातारे ॥ वी० ॥
 ॥ ५ ॥ अप्रमते जे नित रहे, नवि हरपे नवि

लोचरे ॥ साधु सुधाते आतमा, सुमुंदये सुनो
 वरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ सम संवेगादिक गुणा, क्षय
 उपशमजे आवरे ॥ दर्शन तेहिज आतमा, शुं
 एहो नाम धरावरे ॥ वी० ॥ ७ ॥ ज्ञानावरणी
 जे कर्मठे, क्षय उपशम तस थायरे ॥ तो एहो
 एहज आतमा, जन अवोधता जायरे ॥ वी० ॥
 ॥ ८ ॥ जाणो चारित्र ते आतमा, निज स्वजा
 वमां रमतोरे ॥ लेश्या शुद्ध अलंकरयो, मोह वने
 नवि जमतोरे ॥ वी० ॥ ९ ॥ इच्छा रोधे संवरी
 परिणति समता योगेरे ॥ तपते एहिज आतमां,
 वरते निजगुण जोगेरे ॥ वी० ॥ १० ॥ आग
 मनो आगमतणो, जाव ते जाणो साचोरे ॥ आ
 तमजावे धिर होजो, परजावे मत राचोरे ॥ वी०
 ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घटमांही ऋद्धि
 दाखीरे ॥ तेम नवपद ऋद्धि जाणजो, आतमराम
 ठे साखीरे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंखजे जिन
 कह्या, नव पद मुख्यते जाणोरे ॥ तेहतणे अव

लंबने, आत्मध्यान प्रमाणेरे ॥ वी० ॥ १३ ॥
 ढाल बारमी ए कही, चौथे खंडे पुगीरे ॥ वाणी
 वाचक जशतणी, कोइ नये न अधूरीरे ॥ वी० ॥ १४ ॥

दोहरा ॥ वचनामृत जिन वारना, निमुणि श्रे
 णिकनुप ॥ आनंदित पहोतो घरे, ध्यातो शुद्ध
 स्वरूप ॥ १ ॥ कुमतितिमिर सवि टालतो, वर्द्ध
 मान जिन जाण ॥ नविक कमल पडी बोहतो, वि
 हरे महियल जाण ॥ २ ॥ ए श्रीपाल नृपति क
 था, नवपद महिमा विशाल ॥ नणे गुणेने सा
 नले, तस घरे मंगल माल ॥ ३ ॥

ढाल तेरमी ॥ राग धना श्री ॥ थुणिठ थुणिठे,
 प्रजुतं सुरपति जिन थुणिठ एदेशी ॥ तुठयो तुठयो
 रे, मुज सोहेव जगनो तुठयो ॥ ए श्रीपालनो रास
 करंतां ज्ञान अमृतरस वुठयो ॥ मुज० ॥ १ ॥
 पायसमा जेम वृद्धिनु कारण, गोथमनो अंगूठो
 ॥ ज्ञानमाहे अनुभव तेम जाणो, तेविण ज्ञान
 ते जूठेरे ॥ मुज० ॥ २ ॥ उदक पयोमृत कल्प

ज्ञान तिहां, त्रीजो अनुभव मीठो ॥ तेविण स
 कल तृषा केम जांजे, अनुभव प्रेम गरीठोरे ॥
 मुज० ॥ ३ ॥ प्रेमतणीपरे शीखो साधो, जोइ
 सेलमी सांठो ॥ जिहां गांठ तिहां रस नवि दी
 से, जिहां रस तिहां नवि गांठोरे ॥ मुज० ॥ ४ ॥
 जिणही पाया तिणही बिपाया, ए पण एकठे
 चांठो ॥ अनुभव सुरज तेज बिपे किम, तेतो स
 घले दीठोरे ॥ मुज० ॥ ५ ॥ पूरव लिखित लिखे
 सविलेइ, मसी कागलने कांठो ॥ जाव अपूरवे
 कहेंता पंडित, बहु बोलते वांठोरे ॥ मुज० ॥ ६ ॥
 अवयव सवि सुंदर होय देहे, नाके दोसै चांठो ॥
 ग्रं० ज्ञान अनुभवविण तेहवुं, शुक जिर्यो सुत
 पाठोरे ॥ मुज० ॥ ७ ॥ संशय नवि जांजे श्रुतज्ञाने,
 अनुभव निश्चय जेठो ॥ वादविवाद अनिश्चित क
 रतो, अनुभवविण जाए हेठोरे ॥ मुज० ॥ ८ ॥
 जेम जेम बहुश्रुत बहुजन संमत, बहुल शिष्य
 नो शेठो ॥ तेम तेम जिनशासननो वयरी, जो

नवि अनुजव नेठारे ॥ मुज० ॥ ९ ॥ माहरेतो
 गुरु चरणपसाये, अनुजव दिलमां पेठो ॥ ऋद्धि
 वृद्धि प्रगटी घटमांहे, आतमरतिहुइ बेठारे ॥
 ॥ मुज० ॥ १० ॥ ऊग्यो समकित रवि जलह
 लतो, जर्म तिमिर सवि नाठो ॥ तगतगता दू
 नयजे तारा, तेहनो बल पण गाठारे ॥ मुज० ॥
 ॥ ११ ॥ मेरु धीरता सवि हरि लीनी, रह्यो ते के
 वल जाठो ॥ हरि सुर घट सुरतरुकी शोभा, ते
 तो माटी काठारे ॥ मुज० ॥ १२ ॥ हरव्यो अ
 नुजव जोरहतोजे, मोहमल्ल जग लुंठो ॥ परिपरि
 तेहना मर्म देखावी, जारे कीधो जुंठारे ॥ मुज० ॥
 ॥ १३ ॥ अनुजव गुण आव्यो निज अंगे, मिटयो
 रूप निज माठो ॥ साहेब सन्मुख सुन जरजोतां,
 कोण थाए उपराठारे ॥ मुज० ॥ १४ ॥ थोमे पण
 दंजे दुःख पाम्या, पीठ अने महापीठो ॥ अनु
 जववंतते दंजन राखे, दंज धरेते धीठारे ॥ मुज० ॥
 ॥ १५ ॥ अनुजववंत अदंजनी रचना, गांठ स

रस सुकंठो ॥ जाव सुधारस घटघट पीठ, हुठ
पूरण उत्कंठारे ॥ मुज० ॥ १६ ॥

कलश ॥ राग धनाश्री ॥ ते तरियारे जाइ
ते तरिया एदेशी ॥ तपगठ नंदन मुरतरु प्रग
ठ्या, हीर विजय गुरुरायाजी ॥ अकबरशाहे जस
उपदेशे, पढह अमार वजायाजी ॥ १ ॥ हेमसू
रि जिनशासन मुद्राए, हेमसमान कहायाजी ॥
जाचो हीरो जे प्रभु होता, शासन सोह चढाया
जी ॥ २ ॥ तास पढे पूर्वाचल उदयो, दिनकर
तुल्य प्रतापीजी ॥ गंगाजल निर्मल जस कीर
ति, सघले जगमांहे व्यापीजी ॥ ३ ॥ शाह स
नामांहे वाद करीने, जिनमत थिरता थापीजी ॥
बहु आदर जस शाहे दीधो, विरुद सवाइ आ
पीजी ॥ ४ ॥ श्री विजयदेवसूरि तस पटधर, उ
दया बहु गुणवंताजी ॥ जास नाम दशदिशबे
चावुं, जे महिमाए महंताजी ॥ ५ ॥ श्री विजय
प्रभ तस पटधारी, सूरि प्रतापी बाजेजी ॥ एह

रासनी रचना कीधी, सुंदर तेहने राजेजी ॥६॥
 सूरि हीर गुरुनी बहु कीर्ति, कीर्तीविजय उव
 ज्ञायजी ॥ ७ ॥ विद्या विनय विवेक विचक्षण,
 लक्षण लक्ष्मीत देहाजी ॥ सोनागी गीतारथ
 सारथ. संगत सखर सनेहाजी ॥ ८ ॥ संवत
 सत्तर सप्ततीशे वरसे, रही रानेर चोमासेजी ॥
 संघतणा आग्रहथी मांडयो, रास अधिक उल्ला
 सेजी ॥ ९ ॥ सार्द्ध सप्त शत गाथा विरची, पही
 ताते सुरलोकेजी ॥ तेहना गुण गावेठे गोरी, मिली
 मिली थोके थोकेजी ॥ १० ॥ तास विश्वासना
 जन तस पूरण, प्रेम पवित्र कहायाजी ॥ श्री
 नयविनय विवुधपय शैवक, सुजश विजय उ
 वज्ञायजी ॥ ११ ॥ जाग थाकतो पूरण कीधो,
 तास वचन संकेतेजी ॥ तेणे बलि समकित दृष्टि
 जे नर, तेहतणे हित हेतेजी ॥ १२ ॥ जे जावे ए
 नणशे गणशे, तस घर मंगल मालाजी ॥ बंधुरसिंधु
 र सुंदर मंदिर, मणिमय जाकजमालाजी ॥ १३ ॥

देह सबल ससनेह परिच्छद, रंग अजंग रसा
लाजी ॥ अनुक्रमे तेह महोदय पदवी, लेशे
ज्ञान विशालाजी ॥ १४ ॥

इति श्रीमन्महोपाध्याय श्री कीर्तिविजयगणि शि
ष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणि विरचिते श्री
श्रीपालचरित्रे प्राकृतप्रबंधे तन्मध्ये उपाध्याय
श्रीयशोविजयगणि पूरिते चतुर्थखंडः ॥ संपूर्णम्॥

- १ जैन धर्म ज्ञान प्रदीपक पोथी किंमत १॥ रुपया.
२ कल्पसूत्रको भावार्थ किंमत २ रुपया.
३ जैन सत्यार्थसागर किंमत २ रुपया.
४ हरिवंश ढाळसागर किंमत १॥ रुपया.
५ रामलछमणजीको रास किंमत १ रुपया.
६ चंद्रराजाको रास किंमत २ रुपया.
७ उपदेश रत्नमाला रास किंमत १ रुपया.
८ जैन रामायण [बालायबोध] किंमत १ रुपया.
९ जैन धर्म सिद्धांतसार किंमत १ रुपया.
१० जैन कथारतन कोश किंमत १ रुपया.
११ विषधरतन प्रकाश पुस्तक किंमत ८ आना.
१२ जैन धर्म ज्ञानप्रकाश किंमत १२ आना.
१३ लछमणबोध नाटक किंमत १२ आना.
१४ हरीबल मच्छोको रास किंमत १ रुपया.
१५ साधु श्री भिखणजी स्वामीको रास किं. १ रुपया.
१६ जैन ज्ञानसार संग्रह किंमत १२ आना.
१७ रतनपालको रास किंमत ८ आना.
१८ मारवाडी शिलोका संग्रह किंमत ८ आना.

॥ समाप्त ॥

